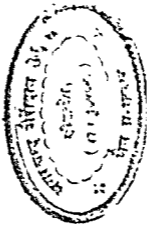


३१११५०६ श्रीराम सेवा
 श्रीराम सेवा
 श्रीराम सेवा

श्रीराम सेवा

श्रीराम सेवा

श्रीराम सेवा



1. न. ए. नाम एक अड़क कर्ता ने अनुमान किया है. परन्तु यह निश्चय नहीं, क्योंकि - जो नियम सिर पेलाही होता
 2. न. ए. न. ल. कार्य करने वाले कर्मों निगदा न द्रुवे चाहिये. ऐसा तो द्रोही नहीं आता है, उल्टा यदुष्ट, पर्येक
 न. न. ए. व. काम वाले को सुते - पश्चात्प करने ही देखने में आते हैं. कि - हाय! यस्तु या श्राज द्रुव गया!
 निव. ल. निकला गया! निपजत हो नहीं दुर! योग. इस से जाना जाता है कि - उपर कहे तीनों ही कर्मियों में लाम्बी-
 न. न. क. ल. देवायोन - कर्मयोन है यो कर्म हो तरह है - ? अलाम - तु. ल. मिम से होता है उन्हे पाप कर्म
 क. न. ए. अंत लाम - सुव जिन से होता है उन्हे पुण्य कर्म कहते हैं. इसलिये बाली पसे को फेड कर, मूल
 क. न. ए. जो लामा लाम के कर्ता पुण्य पाप है, उन्ही के तरफ लक्ष देने की प्रवृत्त जरूर है, और अलाम का करता
 न. पाप कर्मिय उन्हे त्याग - छोड कर, लाम का करता पुण्य कर्मिय है, उनका स्वीकार करने के वास्ते ही योण
 अड़क कर्ता ने जने घेराये वंग को सुचित - सायधान करके - लया लाम उपार्जन करने को ही बोध करते है कि -
 ' दानि च अर्जन गुर्ग " अहो लामायी घेरायों! मय घेपातों से जो ' दान ' नाम क वेपार है यो लया ही वेपार है
 अर्थात् पार विगर का अपार लाम - अतन गुण लाम का दाता है, इसलिये लामायीयों को अन्य वेपार से इस ' दान '
 न. म. क. घेपार करने को बंदुन हो आवस्यकता - जरूर है. परन्तु यों कहने सेही ऐसे जमाने के लोक इस बात को मय
 म. न. ए. य. दे, ऐसा मोला जमाना अथ न रहा! अर्थ तो उपदेश प्रत्याशारि समाण मे सिद्ध किया जाय उसे ही कपुल
 क. न. ए. अ. र. उतको कपुल कर्ता ने के लिये, इस विधालय मे मयल प्रकण अनेक मौजूद है, तो देखिये - एक अतन
 म. इति. अ. र. एक जन्म से ही श्रमिण - नालियर होता है, इसका क्या सधने? एक सत्य प्रयाग से किंवा ज्ञान

मन्त्रना पाठ्य गणो ! अटवल निम्न लिखित अशुद्धियोंको शुद्ध कर फिर यत्नासे पढियेजी-

गान	गान	गान	गान	पान	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
नल	क.रण	तल	तल	१४	२	८	प ॥ गल	प ॥ गल
गानो	गानो	वीनी	कारण	१५	५	३	प तिहां	तिहां
कसाय	कसाय	कसाय	वीनी	१५	६	१०	भाइम	भाइम
निरधार	निरधार	निरधार	कसाय	१६	२	१४	रक	कर
जायो	जायो	जायो	निरधार	१७	२	५	अपार	अपार
कसाय	कसाय	कसाय	जायो	१७	२	७	मिटी ॥ ओठ	मिटी ॥ ओठ
कसारे	कसारे	कसारे	कसाय	१८	५	११	पाय	पाय
कार	कार	कार	कसारे	१९	५	गाट	फज	फज
निमक्षिण	निमक्षिण	तलक्षिण	कार	२०	५	३	तलक्षिण	तलक्षिण
का	का	का	तलक्षिण	२०	५	७	पर्या	पर्या
गुमार	गुमार	गुमार	का	२०	५	८	राज कल्या	राज कल्या
कुंयार	कुंयार	कुंयार	गुमार	२०	२	२	कम	कम
प्रसाय	प्रसाय	प्रसाय	कुंयार	२१	५	७	पाय	पाय
			प्रसाय					

५३-७४

पृष्ठांक	य	नाम	उलट	पलट	है.
५	१०	जयारे	त्यारे		
५	१३	रो	पूरो		
७	४	सणीये	गुणिये		
२	४	पुचंग	पुछया		
२	६	म	म		
२	१०	पस्था	पस्था		
५	४	भाप्या	भाप्या		
५	९	देर	देर		
५	नोट	केश	केश		
२	५	उमारी	उमारी		
५	३	वीया	वीया		
५	५२	हिमी	हिमी		
५	४	होडी	होडी		
५	१३	अर्यामे	अर्यामे		
२	३	रुधो	रुधो		
२	१३	रायय	रायय		
२	६	रुज	रुज		
५	१०	मम	मम		
५	१०	सय	सय		
५	१०	गिय	गिय		

५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०			
आपद	नाद	स्य	इधी	नाद	चोडी	सगाया	निध	दिर	उमंग	अकुत्राय	या	सस्यन्व	चित्तो	पुण्य	नाद	निभा	नाद	च	लयां	चिउ
आपद	नाद	स्य	इधी	नाद	चोडी	सगाया	निध	दिर	उमंग	अकुत्राय	या	सस्यन्व	चित्तो	पुण्य	नाद	निभा	नाद	च	लयां	चिउ

Item	Quantity	Unit	Price	Total
1.000	1	kg	1000	1000
2.000	2	kg	2000	2000
3.000	3	kg	3000	3000
4.000	4	kg	4000	4000
5.000	5	kg	5000	5000
6.000	6	kg	6000	6000
7.000	7	kg	7000	7000
8.000	8	kg	8000	8000
9.000	9	kg	9000	9000
10.000	10	kg	10000	10000

Item	Quantity	Unit	Price	Total
1.000	1	kg	1000	1000
2.000	2	kg	2000	2000
3.000	3	kg	3000	3000
4.000	4	kg	4000	4000
5.000	5	kg	5000	5000
6.000	6	kg	6000	6000
7.000	7	kg	7000	7000
8.000	8	kg	8000	8000
9.000	9	kg	9000	9000
10.000	10	kg	10000	10000

॥ ॐ ॥

॥ परमात्मायनमः ॥

॥ श्री मद्भक्त श्रेष्ठी चरित प्रारंभ ॥

॥ वृद्धा ॥ परम ज्योती प्रमात्मा । अगम अगोचर शांत ॥ चिदानन्द नन्देशिव ।
करुण मरण मर्यादा ॥ १ ॥ अरिगंजण अरिहंतजी । सिद्धकिया सिद्धकाम ॥ आचार्य
प्रसादाय नमः । कांटी कलं प्रणाम ॥ २ ॥ श्री गुरु गुणोद्य सिन्धूसम । विद्या चरित
दानार ॥ मद्भक्त समजादयो ॥ तास करी नमस्कार ॥ ३ ॥ तीर्थेश वाणी शारदा ।
विमान्य गान हंस ॥ बुद्ध दाता कवी मातजी । प्रणामु भाव अवतंस ॥ ४ ॥ चरणंबुज
पण मर्यादा । प्राम्णु धारीयंत ॥ पुण्य रास प्रकाशया । कीजो मुज बुद्धवंत ॥ ५ ॥
विमान्य गान कवी । सुल दाता परक पुण्य ॥ जेसंकीने लारीया । तास नदी कुळ नुन्य

मनोरम्य बहु उभ्यानांहां ॥ वृक्षलता शुच्छ मंडपे । सोभे नंदन वन मानोहो ॥ पुण्य ॥ ८
॥ गिरु मर्दन राजा निहां ॥ शूर वीर शिरदारो हो ॥ तेज रूप बल बुद्ध शिरे । न्याय नी-
तां गुण धारांहां ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ सज्जन परजन मन रंजणो । प्रजा पुत्र परे पालेहो ॥ श-
२ अन्यादन गंजणां । उदार प्रणामी सूचाले हो ॥ पुण्य ॥ १० ॥ श्रीधरा आदी करी
। नारी अमन पांचांहां ॥ रूपे रंभा अचंभसी । सीयल लजा गुण सांचोहो ॥ पुण्य ॥ ११
॥ मर्चाव गृह्णो कला निलो । राज धुरंधर शूरोहो ॥ राजा प्रजा मन रंजणो । न्याय
निपुण गुण पुंगोहां ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ तिण नगरी मांही वसे । सब थी शिरे वेपारी हो ॥
'वभुदन' नामं दीपतां । ऋद्धि घरसे अपारीहो ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ दाता भुक्ता द्रव्य को ।
गुण धार्ढान उदारोहां ॥ वया धर्मी जंत पालणा । करता दुःखी की सारोहो ॥ पुण्य ॥
१४ ॥ मंटाणी प्रियंवती । सील रूप गुण खार्णीहो ॥ पतिव्रता नम्र जिमलता । विचूक्षण
धर्णा आणी हो ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ पुल चार तस दीपता । अनुक्रमे कंठू नामोहो । श्री
धर मंगारज भट्टो । अंगेज मैदन अभीरामोहो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ रूप कला गुण आगलो
। विद्या धन्धी पुगाहो ॥ धर्म कर्म जाणे सहू । सुखद विनर्ति सनूराहो ॥ पुण्य ॥ १७ ॥
याग्य स्थान देवी करी । कन्या वय सम रूपेहो ॥ लज्जा विनयादी गुण भरी । परिश्र

हो ॥ होण ॥ २ ॥ कृत्स्न्या तस जाणने हो । आसण छोट्यो तत्कालहो ॥ अजाण अपराध जे
 कियोहा ॥ तस क्षमा वक्षो माय हो ॥ होण ॥ ३ ॥ किण कारण पधारीया हो ॥ किम्यो वीडो
 जान माय हा ॥ कृपा कपी फरमावथि हो । जिम मुजने सुखयाय हो ॥ होण ॥ ४ ॥
 देवी कः कः कर्मथी हो । जवर न कोइ जग मांय हो ॥ हरीहर इन्द्र चन्द्र किन्नर
 हो । कोइ नः प विने भुत्तथाय हो ॥ होण ॥ ५ ॥ अनावी कालथी जीवके हो । लार
 लाया ह यद हो ॥ शुभा शुभ काम करायने हो । पुनरपि दुःख ते देय ॥ होण ॥
 ६ ॥ जट पण वर्लाया जीवथी हो । जेधे नदानो स्वभाव हां ॥ हर्षनि संचे प्राणीयां
 हा । भागर विन उत्साय हो ॥ होण ॥ ७ ॥ जिहां लग निज गुण भणी हो । चैतन्य
 चिन न धरंत हो ॥ मन्मुख होवे नहीं कर्मके हां । तिहां लग दुःख न टलंत हो ॥ होण
 ॥ ८ ॥ श्रष्ट पना दिन तुम भणी हो । हांतो मुकर्मको जोग हा ॥ तेहथी अहो निरा
 निन्य नवा हो । मिल्यो सु भोग संयोग हो ॥ हाण ॥ ९ ॥ सुख भोगवीया सहू परेहो ।
 पण किं न मवा गह हो ॥ जिण पीवी भीटी भांगने हो । सेधीज लेहरां लेह हो ॥ होण
 ॥ १० ॥ दुण कारण आइ इहां हो । तुमने चैतावण काज हो ॥ पहलां जे चैते गुणी
 हा । नहनी रह जग लाज हो ॥ होण ॥ ११ ॥ आजथी दिन तीन अंतरे हो । तुमने

॥ १० ॥ पहला है। दूसरा होयाने हो। ब्रह्मवृत्त करी ब्रह्मसाय हो ॥ ब्रह्म भुषण जापत
 ॥ ११ ॥ जिस रत्न एक टाय हो ॥ होण ॥ १३ ॥ पुत्र बचने परिये हो ॥ पहगाड भूप
 ॥ १४ ॥ होय हो ॥ पर्ये विश्वान्तर भर्णा हो ॥ ब्रह्मात्त मन्त्राय हो ॥ होण ॥ १४ ना
 ॥ १५ ॥ पहला है। दूसरा होय हो ॥ नाहस गन्धजा मन विप हो ॥ दुःख
 ॥ १६ ॥ नव अंग हो ॥ होण ॥ १७ ॥ नेटा कंठे रहजां मर्ता हो ॥ जिस न ओलखे काड
 ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ पहला रहजां बगला हो ॥ जिस नहीं होयो विद्य्यान हो ॥ होण ॥ १६
 ॥ २० ॥ नव अंग हो ॥ मिलनी कौट मिल्दा जाग हो ॥ सुख संपन पासो घर्णा हो
 ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ पहला रहजां भाग हो ॥ होण ॥ २३ ॥ इस उपाय किया थकां हो ॥ लाज
 ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ देवी चार्निर्था भस्व परंदाकां हो ॥ मर्दा जगनेमें कहवाय हो ॥ ॥
 ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ दुःख क रग चंनार्वाया हो ॥ हिनकारक थार्णा थाय हो ॥ मान सां तो सु-
 ॥ २८ ॥ पहला हो ॥ आंग तुमारी इच्छाय हो ॥ होण ॥ २९ ॥ बयण प्रमाण कयो सेठजी
 ॥ ३० ॥ मान्दा घणो उपकार हो ॥ सुरी अर्दशी हुइ तदा हो ॥ सेठ करे नमस्कर हो ॥ होण
 ॥ ३१ ॥ बाल वृजा देवी सीखकी हो ॥ सेठने ह्यो विचार हो ॥ अमोल्ख ऋषी कहे

गन्तव्यं हो ॥ आगच्छ रसिक अधीकार हो ॥ होण ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ चिंतातुर ॥
 ना गच्छती ॥ वृंदा को विचार ॥ अण चिंती या आपदा ॥ किम आइ किरतार ॥ १ ॥ गुरो
 यान विद्वान् भे ॥ अन्यथा तो नदीथाय ॥ मुज कुल लज्जा रक्षवा ॥ पहलां गइ चेतान
 ॥ २ ॥ निण काण दिन नीनधे ॥ करी वंदा वस्त सच ॥ निज कुटम्ब साथे लही ॥
 ॥ ३ ॥ इम अपसोस विचार श्री ॥ निद्रा गइ रिसाय ॥ सूता छे सुन
 ॥ ४ ॥ पण तें तो नदी आय ॥ ४ ॥ जेजे युक्ती योजवी ॥ निश्चय कीनो शाह ॥ ५ ॥
 निज कायं सभवा ॥ उग्या दिन का नाह ॥ ५ ॥ ढाल ३ ॥ थारो गयोरे जोवन पांशे
 नां आवे ॥ यह ॥ प्रां प्रगटा मज्जन सहू ॥ भोजनादि कर हुवा लहू ॥ निधि-
 न्य वग्या संठ भावे ॥ पूर्ण मंथित जेसा फल पात्रे ॥ संठजी सारा कुट्टन
 नाह ॥ बाल्याया पकान मांड ॥ मरकारिनें वेठांवे ॥ २ ॥ कहे मुणजो सहू चित लांड
 ॥ गन कुट्ट वेपी आइ ॥ आपणा हितको चनांवे ॥ ३ ॥ इत्ता दिन था सुख ली-
 ना ॥ जमा पूर्ण पुण्य कीना ॥ हिये पाप विदा आवे ॥ ४ ॥ चितो तीन दिवस मां-
 णे ॥ धनुयां पीयर दो पांशे आइ ॥ घर धन अन्य ने भांलांवे ॥ ५ ॥ और कुट्टन
 गन लड ॥ कुर वेशे जास्यां रेंड ॥ तो लज्जा अपनी रहांवे ॥ ६ ॥ भें तो मानी ॥

बेनी अर्जा । अब कहे थारी मरजी । नारी पुल तब फरमावे ॥ पूर्व ॥ ७ ॥ कीजे आ
 प की जे इच्छा । हम तिणने नहीं करां मिच्छा । करो जिम सहू सुख पावे ॥ पूर्व ॥ ८
 ॥ इम नुर्जा संटर्जा हरख्या । सज्जन गुण वक्ते परख्या । देवी कस्यो जिम करावे ॥ पूर्व
 ॥ ९ ॥ घणा नेणा दे बहुवा तांइ । पीयरी ये दी पहोचाइ । फिर मुर्नमि नै बोलावे ॥
 पूर्व ॥ १० ॥ हम सहू देशाटन जावां । पर देशे फिरी पाछा आवां । घणा दिन वीतसी
 दावे ॥ पूर्व ॥ ११ ॥ थारो पूरो विश्वास आणी । घरकी मालकी करां थाणी । इम क-
 ही सहू भालावे ॥ पूर्व ॥ १२ ॥ पाछली राते निक्लवा तणो । संकेत कीयो सहू सज
 नो । एकदा टिकाण पोडावे ॥ पूर्व ॥ १३ ॥ गर्मा महुते जय आयो । धन्न घणो लेइ साथ
 मांयो । पंच पसंदा समरावे ॥ पूर्व ॥ १४ ॥ चाल्या मन सानी दिशा सांइ । छेइ जिव
 निण बलाइ । घर धन सज्जन छिटकावे ॥ पूर्व ॥ १५ ॥ गामांतरे जाइ रहीया । भोजन
 कर सुंवे मोट्या । राते चोर धन लेजावे ॥ पूर्व ॥ १६ ॥ जागी देख्यो धन नहीं पायो ।
 मनमें पसनावो घणो आयो । सुरी बयणथी धीरप लावे ॥ पूर्व ॥ १७ ॥ जो घरके
 सांही रहता । तो सर्व गमाइ दुःख सहता । इणी परे मन समजावो ॥ पूर्व ॥ १८ ॥
 दनाये नटको धरणा । संतोष कर हम रहींग । थारो गमन सब करावे ॥ पूर्व ॥ १९ ॥

वाट पडा मांगे मिन्दीया । धन वस्त्र सहू लूट लिया । निराधार हुइ घबरावे ॥ पूव ॥
 २० ॥ कर परनाचो आंगे चल्या । काँटा भाटा बहू दुःख फल्या । किहां ग्राम किहां
 बने रहावे ॥ पूव ॥ २१ ॥ चारी पुल ग्राम से जाइ । मेहनत कर धन उपजाइ । खान
 पान बस्तु लावे ॥ पूव ॥ २२ ॥ सांजी देवे विपाइ । छेइ जमीनी बस थाइ । मन
 चाये तो वयार्थी लावे ॥ पूव ॥ २३ ॥ इम करतां नित्य गुजारी । दुःख तणा दिन
 परदाग । कृत कर्म इम शपावे ॥ पूव ॥ २४ ॥ ढाल तीसरी अमाल भणी । जोवो
 करणी कर्म नर्णी । दरेक रेवे ते सुधी थावे ॥ पूव ॥ २५ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ इत फिरतां
 भसंतल । काल कतरु मांय ॥ बटपुर ग्रामज देखीयो । शेर बडो सुखदाय ॥ ? ॥
 २६ ॥ २ ॥ काम काह लगर्मा इहां । औलख से नहीं कांय ॥ अथ फिरवा शर्ची नहीं । इहां कंगं उद पूर
 गाती वर्गी हांय ॥ ३ ॥ शर्ची न भाडो देणकी । झोंपडी कर ग्रामधार ॥ मृत्तिकों
 न गभधी । रट गहू परिचार ॥ ४ ॥ चारुं भाइ वेपारने । फिरता ग्राम मझार ॥ अ-
 न मिनी गयसं । नव करे इमों विचार ॥ देव्यो कर्म गती आपर्णी । कर्णी उदय

टुइ इण वारजी ॥ करता मोटा २ वेपारजी । उपराजता ड्रव्य अपारजी
 । फिरता वख गेणे भार जी । हिवे थइ रखा निरधार जी ॥ भवी
 भव्य नव्य ता सांभलो ॥ आं ॥ ? ॥ पुरो पेट भरे जितो भाइ । कमा सका नहीं धन्न
 ॥ अन्न वख रा नांसा पड्या । तेहथी दुःखी हुयोछे तन्नजी ॥ रहवा ने पूरा न जतन्नजी
 । किम कर समजावा मन्नजी । किण रीते पालां इत्ता जन्नजी । इम किण पर खूटसी दि-
 न्न जी ॥ भवी ॥ २ ॥ कोइ तुच्छ वेपार थी जी । पालां अपणो परिवार ॥ ड्रव्य लागे
 नहीं नेहमां । ऐसो करिये विणज इणवार जी ॥ नहीं चर्हीये बीजारो आधार जी । न-
 र्वां कर्था लाचार जी । नहीं कष्टले जायां हार जी । ऐसो कोइ एक करो निराधार जी ॥
 भवी ॥ ३ ॥ संठ कहे भाइ गहवां तो । छे कटीयारा नो काम ॥ नित्य काष्ट लावो वन थकी
 । तिणरा नहीं लागे दाम जी ॥ कोइ खुशामदी नो नहीं काम जी । आपणी पण पूग-
 सी हाम जी । पण कष्ट पडे घणो चाम जी ॥ चारुंवनधू धरी ते हाम जी ॥ भवी ॥ ४
 ॥ कोइक कष्ट करी तिहां जी । कमायो थोडो विते ॥ रस्सी कुदाली खरीद ने । का
 छडी धान्धी चारुं मित जी । जावे वन मांहे धर हित जी । दौलक भारी लावे नित्य जी

नया नाणो गृही जी । नित्य नया लागे धान ॥ नित्य पीतो निपजायद्व । चहना सक्र कर
 स्थान जी । इस दिन आनं मज्जान जी । क्षुधा व्योपे असमान जी । घृत द्योपे पी पान
 जी । इस बलापे गुजगन जी ॥ भधी ॥ ६ ॥ एक दिन गया चरि जणा जी । मोली ले
 या वन मांय ॥ सर्गिना लुंकी नीकल्या । गहरी धार्थीसं जाय जी ॥ कापी काष्ट ने भारी
 धंभाय जी । तत्र मेघ घटा लुंकी आय जी । वर्षण लागी मोटी धाराय जी । चारी
 सांने चिना भराय जी ॥ भधी ॥ ७ ॥ रवे पुर आने नदीनी जी । रुकां ओंपा द्यण
 जाग । मान तात नूरा सं । लतस्वानां जांच लाग जी । चान्या अहु विहां थी भाग जी
 । मोली मिरपर थोज अथाग जी । पण न सिणे थिता नो हागजी । जांयो नधी सं
 पाणा असाग जी ॥ भधी ॥ ८ ॥ कांटे लक सर्गीया भरी जी । चउजण(जोद्व नंण ॥
 भरका पड्यां लाणी थिये । तत्र ककवा लाग्या वंण जी ॥ द्यणथी अलगा रहो वेण जी ॥
 पलटनी थद वंरण जी ॥ क्षुधा भी लागी दुःख वंण जी । क्रियो करणो कहां छैया जी
 ॥ भधी ॥ ९ ॥ समय ३ चरि नले जी । आयां वागंन पग ॥ पाळोत क्रिया लग्या ।
 नही दीगं जागापो ल्य जी ॥ पाड्य जांच शिक्षां भग जी । जल उड्याला व्वाय अथग
 जी । गय जांग सुनी लागे जग जी । तय जोषण लाग्या व्यग जी ॥ भधी ॥ १० ॥

१० कृश पांस आधीया । श्रेष्ठा चर्या उत्तम ॥ मौली यान्धी एक डालेय । फंडे नहीं ति-
 ॥ ११ ॥ टन्डी भी पूजे धर २ अंग ली । वेठा चारही धरत उमंग ली । डाल चोथी
 चर्या लग ली । कही अमोलय अभंग ली ॥ गवी ॥ ११ ॥ दुहा ॥ अन्धी पूर उतर
 ॥ १२ ॥ अर्या अरणे गेह ॥ तल मातने भेटस्था । इम चड कल्पे तेह ॥ १ ॥ कृष्णपक्ष
 ॥ १३ ॥ इटा । कृष्णसग कृश नित ॥ नेणार निज करना लखे । विसर्या ते निज हिन ॥ २
 ॥ १४ ॥ नही उरने विपे । शीतल यजे घाय ॥ मरण एक तरु डालनो । रीजलियां सुवका
 ॥ १५ ॥ पारु तथा संजोग थी । सुरती व्यापी अंग ॥ आपसमें चारों बडे ॥ रहे हंशारी
 ॥ १६ ॥ ४ ॥ प्राप्त कष्ट खुटाय या । केइक छेडो वान ॥ जिमए काल अ-
 ॥ १७ ॥ मिले मातने सात ॥ ५ ॥ डाल ५ ॥ यण जारें यह ० ॥ सुणो भाइरे ॥ श्री
 ॥ १८ ॥ अन्ध मों वान मी आवडे ॥ सुणो भाइरे ॥ सुणो भाइरे ॥ जीव चित्तमें
 ॥ १९ ॥ अन्य फामें विम प्रयडे ॥ सुणो भाइरे ॥ १ ॥ सुणो भाइरे ॥ मतारज बहे ताम
 ॥ २० ॥ अरे उपजे देही ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तेही कही इणवार । जे जे मनमां आवही
 ॥ २१ ॥ सुणो ॥ इंगज वहे साद्यार्थिक । विमही काल खटाइवो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥

इजं सरस्वती दृजो नहीं ॥ सुणो ॥ कहो पहली थे तीन ॥ पढे सहारी कहस्यु
 मही ॥ सुणों ॥ १ ॥ सुणो ॥ श्री धर कहे भ्रात । शरम आवे कहतां मनरही ॥ सुणो
 ॥ सुणो ॥ दुःख में पेसी बात । न करवी पण कहूं सही ॥ सुणो ॥ ५ ॥ सुणो ॥ इण
 विरियां मांय । मेहल होवे सत खंडीयो ॥ सुणो ॥ रोशनी सुखसेज । भोग
 जांग मद्रु मंडीयो ॥ सुणो ॥ ६ ॥ सुणो ॥ कुंवरी राजारी होय । रुपे रुडी संग करूं
 रली । सुणों ॥ सुणो ॥ यह मुज हिवडां विचार । प्रभू कृपा ए जाती फली ॥ सुणो ॥
 ७ ॥ सुणों ॥ दृजो कहे ठीक बात । तुमने इण वेला आवइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ सहारा
 मननां वान । तुमने देवें वरशावइ ॥ सुणो ॥ ८ ॥ सुणो ॥ उनी चन्द्रावली होय ।
 वृत प्रांगन दर्शन संगे ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ मशालाण झगसग । गरमा गरम व्याचूं मन-
 रंग ॥ सुणों ॥ ९ ॥ सुणों शिखावी परिचार । धंढं गादी तर्काया धरी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥
 ॥ आइ जाल दृशाल । यह होवे तो मन रली ॥ सुणो ॥ १० ॥ सुणो ॥ तीजो कहे
 अदा ज्ञान । मुज मन यह नहीं चाहावइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ इच्छु माविवनी सेव ।
 ना जांग वाड मिलावइ ॥ सुणो ॥ ११ ॥ सुणो ॥ नित्य करूं माविव भक्ती । नमं धी-
 टाणा पार्थग ॥ सुणों ॥ सुणा ॥ इच्छित भोजन वय । मांगे जोद्रेवुं अर्पण करी ॥ सुणो ॥

धंध सल्लाग्यो तास । पडीयो पाणो मा म्बुतो ॥ सुणो ॥ २१ ॥ सुणो ॥ उपको तं तत्काल ।
 वही चाल्यो मजधार ते ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तीनों चमक्या ताम । करवा लग्या हा
 हा कार ते ॥ सुणो ॥ २२ सुणो ॥ हिचे जोवो वक्त की बात । कथां सहं सिद्ध थावइ
 ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ ढाल पंचमी सुविचार ॥ अमोलख ऋषि गावइ ॥ सुणो भाईरे ॥
 २३ ॥ ० ॥ दुहा ॥ हाक सुणी भाइ तणी । वहता मदन कह एम ॥ कथा कार्य सहू
 मिद्ध कर । फिर मिलस्यु भर क्षेम ॥ ? ॥ चल्या आगे मज्झ धारमें । चिते जो आवे
 ग्याड ॥ कदाक तिण सोहं पडू । तो भांगे मुज हाड ॥ २ ॥ तव तिहां दामनी तेजमें
 । काष्ट वहतां जोय ॥ साहस धर तेहनें ब्रह्मो । आधार अधिको होय ॥ ३ ॥ चड वेठ्यो
 तन ऊपर । जिम बोडे असवार ॥ पाथडी बांधी काष्ट सुख । साही वाग तुखार ॥ ४
 ॥ जल थल रचना देवता ॥ गाता जावे गीत ॥ हिचे सानिध करता मिले । ते सुण
 जो धर प्रीति ॥ ५ ॥ ढाल ६ टी ॥ कामणगारो कूकडोरे ॥ यह ० ॥ तिण अक्सर
 श्री पुगसार । पद्य ग्वाती गुण वंतरे ॥ रहे करे कुल वैपारनेरे । शोभा नारी सोहंतरे ॥
 ? ॥ आग्वडी आइ ग्वडी रहेरे ॥ आं ॥ पण पूर्व अंतराय थीरे । द्रव्य घणो नहीं पासरे
 ॥ दुप्कर करे आजीविका रे इम दिनवीते तासरे ॥ आखडी ॥ २ ॥ एकदा सुभाग्यो

दयेरे । धर्म घोष ऋषिराजरे ॥ बहू साधू संग परिवर्यारे । तारे जग जल झाजरे ॥ आं
 ॥ ३ ॥ आया श्री पुर उध्यानं मारे । उतर्या आज्ञा लेयरे ॥ तप संयम रत्न मुनीवरारे ।
 मोक्ष सामे वित देयरे ॥ आ ॥ ४ ॥ माली लेइ भेटणारे । आया रिपुजय दरवाररे ॥
 दीर्घा वधाइ मुनी आवीयारे । हृष्या सुणी अपाररे ॥ आ ॥ ५ ॥ चतुरंगणी दीन्या
 मजीगे । राणी कुँवर सहू साथेरे ॥ अन्य घणा चाल्या हर्ष थीरे ॥ दर्शण करण सनाथेरे
 ॥ आ ॥ ६ ॥ खाती काष्ट लेवा जावतारे । जाता देखी बहू लोकरे ॥ मुनी उपदेश
 सुणवा तणारे । पद्यने जायो सोकरे ॥ आ ॥ ७ ॥ आया सहू मुनी बंधीयारे । धर्म
 श्रवण नं काजरे ॥ जग हित करवा कारणेरे । दे उपदेश मुनीराजरे ॥ आ ॥ ८ ॥ धर्म
 एक सुख दाय नारे । जेहनो दया छे मूल रे ॥ औलखो जीव अजीव नारे । ज्यौं होवे
 सुख को सूखेरे ॥ आ ॥ ९ ॥ जीव कद्या छे कायना रे । पृथवी अप तेउवायरे ॥ विना
 शपति ने प्रस छेरे । सुख दिया सुख पायरे ॥ आ ॥ १० ॥ निजात्म सम जाणी ये रे ।
 जीव भरी जेह देहरे ॥ चार स्यावर में असंख्य छेरे । हरी में अनंता लेहरे ॥ आ ॥ ११
 ॥ विनाशपति नर सारखी रे । कही श्री भगवान रे ॥ उत्पन्न तरुण ने वधता रे । रोग

और अनेक हरी धिरे । मनुष्य शार्दज्य जगायरे ॥ आं ॥ १२ ॥ तिण कारण नहीं दुह
 धिरे । जो दृच्छो निज हितरे ॥ पद्म सुणी ने चमकियोरे । चिते ज्ञान ते चितरे ॥ आ
 ॥ १४ ॥ सुज जाती कर्म एह छेरे । किजीये कांड उपायरे ॥ ऋषिजी कहे हरिया काष्ट
 नेरे । बन्य काटणो नायरे ॥ आं ॥ १५ ॥ तेहीज लीधि आखडिरे । द्रढ चडेत प्रणामरे ॥
 आगे चाल्यो कंठार मरे । एकदेव सौचितामरे ॥ आं ॥ १६ ॥ जात सुतार छे एह नीरे । किम पालीसके
 करारे ॥ परिक्षा करनी सही एह नीरे । तेलाग्यो तस लारं ॥ आ ॥ १७ ॥ अन्य मनु
 ष्य देशाना सुणीरे । करी शक्ते पद्मखाण रे ॥ आया तिणही दिशा गयारे । मन माहें
 हर्ष आणंर ॥ आ ॥ १८ ॥ अयसर जोइ सुनीवसारे । कियो जिनपदे विहाररे ॥ तारे
 भव्य उपदेश थरे । करे आत्म उद्धाररे ॥ आ ॥ १९ ॥ परोप करीं साधुजीरे । तीरे ता-
 रे संसार रे ॥ छट्टु कर्मी मारग लगेरे । जैसे पद्म सुताररे ॥ आ ॥ २० ॥ हिवे द्रढता
 त्याग कीरे । सुणीयां सह नर नाररे ॥ ढाल छट्टी अलांलख कंहरे । आखडी होवे तैयार
 रे ॥ २१ ॥ दुहा ॥ त्याग परिक्षा पद्मनी । करण लग्यां सुर लार ॥ सह कष्ट हरिया किया
 । शक्तिये वन मधार ॥ १ ॥ पद्म गिरे पण नामिते । सुखी लखडी तास ॥ रीतोही आयो
 धरे । सांज समय उछास ॥ २ ॥ नारी पूछे नाथ डी । स्वायन लाया आज ॥ तेक-

१. शिव नितक छे भाल ॥ त्याग ॥ १० ॥ शंकर नाम उच्चार तो । आयो पद्मने पास ॥
 आशीर्वाद देइ कहे । किम वेठयो उदास ॥ त्याग ॥ ११ ॥ पद्म कहे में ली आखडी ।
 जैन मुनीवर पास ॥ हरीयो वृक्ष छेदू नहीं । तीन दिन हुवा तास ॥ त्याग ॥ ११ ॥
 मृग्या लकड न मिल्यो । क्षुधा पीडे छे मुज ॥ तिण थी तन दुर्बल भयो । कळो वीतक
 नुज ॥ त्याग ॥ १३ ॥ विप्र कहे सुव्र वन्धीया । फरेवी घणा होय ॥ दुःखी करे संसार
 न ॥ जगको बीज खोय ॥ त्याग ॥ १४ ॥ भोगोपभोगनी वस्तु जे । सरजी सानव
 काज ॥ नर वेद नारायण समी । सुख दीजे घटनाज ॥ त्याग ॥ १५ ॥ खान पान मुख
 भांग में । नहीं पाप लगाए ॥ आपणो शास्त्र इम कहे । छोड फंद निसार ॥ त्याग ॥
 १६ ॥ सूतार कहे भूदेवजी । न कहे कूडो वचन ॥ जो शास्त्र इम उचरे । तो
 किम हुवा वामन ॥ त्याग ॥ १७ ॥ भक्षा भक्ष गिणवा तणो । रक्षो नहीं काम ॥ माता
 पत्नी पंकसी । विप अमृत तमास ॥ त्याग ॥ १८ ॥ जोसरज्या नर कारणे । वे स्वादी
 काम ॥ स्वर्ग नके कृण जावसी । झूटा शास्त्र नेम ॥ त्याग ॥ १९ ॥ जैन विना मत फेनसो
 । नियन्थ विन पाखंड ॥ वया विवेक धर्मछे । ए मुज श्रधा अखंड ॥ त्याग ॥ २० ॥

मुर्षी चिकुष चुपको रह्यो । पान्यों चित चमत्कार ॥ ढाल सात अमोलख कही ॥ धन्य २
 पद्म मुनाग ॥ त्याग ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ नभ में घुघरी घम घमी । वशो दिश हुयो
 प्रमादा ॥ दंय आड चरणे नम्यो । करे नम्र अरदास ॥ १ ॥ अज्ञ अधर्मी अजाण में ।
 आयां डिगावा काम ॥ जेहूथी तुम उपजीविका । तेमा धरी द्रढ हाम ॥ २ ॥ तीन दि-
 वम कष्ट थां मद्यो । पण न चलायो मन ॥ उत्तर पण योगज दियो । थोडेही ज्ञान रमन ॥ ३
 ॥ श्रसा अपराध कृपा करी । मांगो जे तुम चहाय ॥ धन्य जनक जननी जेह । तुम सरिखा ज-
 न्नाय ॥ ४ ॥ पद्म प्रेक्षी अचंभीयो । प्रत्यक्ष धर्म के फल ॥ रंगाणो धर्म रग
 गे । भड श्रधा निश्चल ॥ ५ ॥ ढाल ८ मी ॥ राम आया जमाना
 खोंटा ॥ यह ॥ भाइ धर्म तदा सुख कारी । पूरे इच्छा पाले ज्यांरिरे ॥ भा ॥ आं ॥
 पद्म कहं दंय हूं कियो मांभू । दुइ मुजपर शुच कृपारिरे ॥ भा ॥ १ ॥ सर्व मनोरथ पूर्ण
 हारी । या आम्बडी अछे हमारिरे ॥ भा ॥ २ ॥ देव दर्शन निर्फल नही जावे । तेहूथी
 हुकम दां कोई उचारिरे ॥ भा ॥ ३ ॥ इस अग्रह मुरतणो जाणी । पद्म कहे जो इच्छा
 तपसिरे ॥ भा ॥ ४ ॥ काले काले काले सिद्धि अछे ॥ ते काले ते जोते तपसिरे ॥

प्रणाम गयो निज ठामे । पद्म स्त्री नित हृद्यारिरे ॥ भा ॥ ७ ॥ दिन उगा गुरु दत्ते ।
 नर्मगिया । द्रव्य ते साथ लीधारी रे ॥ भा ॥ ८ ॥ आयो निज घर ग्रन्थी वताइ ।
 हर्षी जोइ घर नारी रे ॥ भा ॥ ९ ॥ कांडक तो आज लाया दीसे । उभी होइ सल्कारी
 रे ॥ भा ॥ १० ॥ रात रखा था आप किहां जा । निज बालाने विसारी रे ॥ भा ॥
 ११ ॥ घर अंदर जाइ पोटली खोली । अपार द्रव्य देखाडी रे ॥ भा ॥ १२ ॥ धर्म प-
 माये दुःख दूर टलीया । देव संतुष्ट थयारिरे ॥ भा ॥ १३ ॥ अच कोई मेहनत करनी न
 पडसी । थास्यं मन चित्यारिरे ॥ भा ॥ १४ ॥ सूतारणी घणी हर्षानंदे । करे भोजन
 थियारिरे ॥ भा ॥ १५ ॥ अष्टम तप को परणो कीधो । लख हुइछे इच्छारिरे ॥ भा ॥
 १६ ॥ मूखे समाधे सूता निद्रामें । तव देव स्वपन विधारिरे ॥ भा ॥ १७ ॥ दिन उगा
 नित्य सुखो लगाड । नयीमें अक्सी वह तारिरे ॥ भा ॥ १८ ॥ कर लम्बायां हाथेंमें आव
 सी । इच्छित लीजो घणारिरे ॥ भा ॥ १९ ॥ जाग्रत हुइ सत्य स्वपन संभार्यो । देवता
 यीथा जाण्यारी रे ॥ भा ॥ २० ॥ चल आया सरिताने कांठे । पुर जातो जोयो वारिरे
 ॥ भा ॥ २१ ॥ लोक घणा जोयाने आया । तमाशा अश्रय कारिरे ॥ भा ॥ २२ ॥ आ-
 गल मूर्णीयां मदन चरित । ढाल धाठ अमोल उच्चारिरे ॥ भा ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा

१ ॥ मदन अशक्त ने मही शिवे । काए तुरी ज्यो रराय ॥ मदन डी डल किडा कउन ।
 २ ॥ श्री पुरने द्विग जागता । तव उज्यो दिन कोर ॥ ठाठ
 ३ ॥ जोगो मरन कुंवार ॥ २ ॥ नरल साद कहं कहार्डियो । कोडक
 ४ ॥ उपकार होसी अली घणो । मान रूमें अभास ॥ ३ ॥ हा हा काग सट्टुकार
 ५ ॥ जीवित बाह्यो सह नपी । गरण मुखे कृण थाय ॥ ४ ॥
 ६ ॥ पन्थ यह करे ॥ जोइ मदन पुण्यवंत ॥ नल कुंवर ने सारीखो ॥ माहस वंत
 ७ ॥ दान्द ९ मी ॥ इण सररीयारी पाल ऊभी दोइ नागरी ॥ यह ॥ पद्म
 ८ ॥ दीपं कस्तुर शियो ॥ हो सुजाण ॥ दीर्घ फरजच कियो ॥ सहायक देवने
 ९ ॥ काए पे पित दियोहो ॥ सु० ॥ ते काष्ट ॥ तितक्षिण मुडीयो काष्ट । आया कर
 १० ॥ आयो ॥ उतरी मदन तत्काल । यद्या तत कइने हो ॥ सु० ॥
 ११ ॥ मात डी महा उपकार । आज मुजपे कियो हो ॥ सु० ॥ आज ॥ मरण
 १२ ॥ वान जीतव दियो हो ॥ सु० ॥ वान ॥ तुम सम अवर न कोय । न्हारे
 १३ ॥ म्हार ॥ सु० ॥ म्हार ॥ विनय बनन सुणो पय । हय्यो मोह रक्त में हो ॥ सु० ॥



ने मिल्यो पुत्र । सकल गुण युक्त यो हो ॥ सु० ॥ सकल ॥ आणंदी चाप्या उर । वर
 ले आवीया हां ॥ सु० ॥ घरे ॥ कहे नारीने ए पूत । पुण्य जोग पाइया हो ॥ सु० ॥
 पुण्य ॥ ३ ॥ माना कही लाग्यो पाय । सुतारिण ने तदा हो ॥ सु० ॥ सुता० ॥ चिरं-
 जीवां दी आर्मास । मन्तक कर ठवी यदा ॥ होसु ॥ मस्तक ॥ जीमायो सु अन्न ।
 भोजन निपावड हां ॥ सु ॥ भोज ॥ उत्तम वस्त्र भूषण । तस पहरा वड ॥ होसु ॥
 तस ॥ एकान बंटा मुनार । पूछे मदन भणी हो ॥ सु ॥ पूछे ॥ किम पडीयो जल धार ।
 उत्पानि कंठ नृज नर्णी हो ॥ सु ॥ उ ॥ मदन कहे हूं वाणिक । कर्म उदय आवीया हो ॥
 मु॥ कर्म ॥ कयां कटीयाग को काम । काष्ट शिर वाहीया हो ॥ सु ॥ काष्ट ॥ ५ ॥ एकदा
 भारी काज । गयां कंतार मे हो ॥ मु ॥ गयो ॥ वृष्टि अणचिंती थाय । पढ्यो जल धार
 मे हां ॥ मु ॥ पड्यां ॥ लाग्यो डूडो हाथ । तिरी इहां आवीयो हो ॥ सु ॥ तिरी ॥
 आप कियां उपकार । मुख सहू पावीयो हो ॥ सु ॥ सुख ॥ ६ ॥ सुनार सुणी हर्षाय ।
 कंठे मुण नंदना हां ॥ मु ॥ कहे ॥ ए छे तुज वर धन । जाणे मति फंदना हो ॥ सु ॥
 जाण ॥ निज इच्छा जिम तूं । इहां सदा राहीयेहो ॥ सु ॥ इहां ॥ सीखो हमारो कर्म ।
 चर्हाये मं वणाइय ॥ होसु ॥ चार्ही ॥ ७ ॥ आणंद माहे मदन । रहे पदम घरे ॥ होसु ॥

गंत ॥ वृद्ध जोग यही काष्ट । केइक वस्तु घडे ॥ होसु ॥ केइ ॥ देखी हर्षे सुतार । अहो
 वृद्ध गगक ॥ होसु ॥ अहो ॥ थोडा में सीख्यो सर्व । हम काम कीनो सरु ॥ होसु ॥
 हम ॥ ८ ॥ जाणवा तुज प्रतित । में काम कराइहो ॥ होसु ॥ में ॥ अपने छे देव
 सहाय । करते चावीयो ॥ होसु ॥ करे ॥ छोडीनि सब कर्म । धर्म अच कीजीये ॥ होसु
 ॥ धर्म ॥ कसो सगदुल्की भक्ती । अर्हत स्मरीजीये ॥ होसु ॥ ९ ॥ ए थइ दशमी ढाल
 । पुण्यवंत पग २ सुखी ॥ होसु ॥ पुण्य ॥ मदन तणी परे जोवो । कहे अमोलख ऋषि
 ॥ होसु ॥ कहे ॥ रसीलो मदन चरित । आगे भव्य सांभलो ॥ होसु ॥ आगे ॥ कारण थी
 पकं काज । न रखाये आमलो ॥ हो ॥ सु ॥ १० ॥ दुहा ॥ एक दिन मोटो काष्ट ले ।
 पद्म मदन बोलाय ॥ तूं कहे सो इण काष्ट की । देउं वलु वणाय ॥ १ ॥ मदन कहे
 "तारे मने । गगन उडनरी आय ॥ शकी होवे तो करो । धारुं जहां ले जाय ॥ २ ॥ पद्म
 नग नापाइयो । गरुड खंग शिरदार ॥ कला रखी तिणरे विपे । उडे जे इच्छा चार ॥
 ३ ॥ मदन कृष्ण का नंदना । थारो नाम मदन ॥ कृष्ण वाहन ए गरुड छे । कर तूं
 नदर्या चमन ॥ ४ ॥ कला सहु देखाइ तस । मदनजी हर्ष्या अपार ॥ अच महारा

देवी माहम की कृपा ॥ पुन्यवत पग ३ लह सखार ॥ आ ॥ मदन कह हूँ लोखू ३ ॥
 ६ । प्रथी श्रंतलिय मझार ॥ मूँश ककं मुज मन की पुरी । तगुक्षिण हुया नैयार ॥
 देवो ॥ १ ॥ कर प्रणाम सुतार तात ने । हुया गकड अस्वार ॥ यया विधी से कला
 भिगड । उखो गगन नैवार ॥ देख्यो ॥ २ ॥ तल गिरी प्राम अनोखा जोतो । फिर
 तो पुंछा चार ॥ मांइ पुर कं पासज आया । दांठां शेहर मनोहार ॥ जो ॥ ३ ॥ ति-
 य मांइ एक यतों उतरयो । गकड कला संयार । थड की कोचर मांही छिपाइ । आया
 माम मझार ॥ देवो ॥ ४ ॥ देव पुरी सम नगरी देखी । भवन विचित्र प्रकार ॥ कीन्द्र
 चतुर्ग भग पुरी । मूंगांभित वजार ॥ देख्यो ॥ ५ ॥ एक हाट देखी अति मोटी । माल
 मरानुद मार ॥ काम करे जिहां मालक चटुला । श्रुंगां झलकार ॥ देखो ॥ ६ ॥
 मंग मांही तवीया टंक । येठा सेठ सिरयार ॥ दूंदाला स्याला रंगीला । भूषण चन्द्र
 श्रुगार ॥ देवो ॥ ७ ॥ मंगन जी उर्मा रखा जिहां आ । जार्णी श्रेष्ट उदार ॥ सेठ
 मनाही पास येटाया ॥ जोंठ थिल्य अनुतार ॥ देख्यो ॥ ८ ॥ मदन पुण्य प्रताप हांटे
 मनाही वर मझार ॥ गर्भयां माल घणो ते अचगर । इच्छित नके नैयार ॥ देवो ॥
 १ गर्भाने सेठ चिंतने । भगी अथर्य अपार ॥ इगो माल कही नही लर्पायो । आज

१ लिखी तत्काल । मननी घातडी ॥ थोडामें प्रिती घणी ए ॥ देवे सहेली हाथ । हाथ
 शीपे । शिभ जाइ कुँवर भणी ए ॥ ५ ॥ तेलें आया नजीक । मदन मोहन तिहां
 जे उंचो जोइयो ए ॥ मार्यो नेणना बाण । रायनी कन्या का ॥ सेन करी उभो रद्यो
 ६ ॥ समजो घतुर सुजाण । कहे तव सेठने ॥ आप आगे पधारी ये जी ॥ मुजने वा
 । एथ । हमणा नविड ने ॥ शीघ्र आंघू अघधारीये जी ॥ ७ ॥ लधूनीत करता जा
 । आगे चलया ॥ दधी कुँवर उभा रद्या ए ॥ सहेली दोडी आय । पल ते करदीयो ॥ द
 भद मदन लखो ए ॥ ८ ॥ कहे दासी ने तेह । जाइने की जीए ॥ तुज वाइने इण प
 ए रात ॥ गयां एक जोम । वार सहू वन्ध करी ॥ रहजो मेहल ने उपरे ए ॥ १० ॥ नि
 ड की खुदि राब । रहजो जागत ॥ हूं आस्यू अंतलिख थी ए ॥ झूठी न मानो ए
 । अर्घ्य जाउं छे ॥ काज थसी ए सीख थी ए ॥ १० ॥ मदन फिया तत्काल । ह
 सहेलडी । अर्घ्य करती ते गइ ए ॥ कहे कुँवरी थी उमंग । वाइजी सूणो ॥ करामा
 ए नर स्त्री ए ॥ ११ ॥ मुर विद्या धर एह । भरियो गुण नीलो ॥ बल रूप बुद्धि
 पुणो जी ॥ कही अचंभ की वात । प्रिती थी भरी ॥ जेतो चित स्थिर सुणो जी ॥ १२

वन्दोवस्त सह । जोगो जोडो जग जुवेजी ॥ १३ ॥ सुण कुवरी हपोय । वन्य घडी
 गिणे । चट पटी लागी मिलण कीजी ॥ कन्या व्यावनी ताम । सामग्री सजी । गुप्त
 पणें पतिहां हिलणकी जी ॥ १४ ॥ ऊपर गौखडा मांय । मित्राणी संगे । प्रेम तणी
 घातां करे जी ॥ दिन लगे जुग सुमान । मुशकले आश्रम्यो । सहू दार वन्ध किया
 वंग जी ॥ १५ ॥ सजीया सहू सिणगार । छिपके सहू तिहां ॥ वणी रती अनुहारसी
 जी ॥ घंटी गोये आये । द्रंग नभ मे ठवी । आपाढ मेघ जल धार सी जी ॥ १६ ॥ लागी
 लग्न अनीमन ॥ कत्र आइ मिले । घडी जावे बर्पा समीजी ॥ जो जोवे सणकार । चम-
 कें चित मे ॥ नेणा जावे तिहां रमीजी ॥ १७ ॥ हिवे मदन करामात । श्रोता सांभलो
 ॥ ढाल थइ एकादशीजी ॥ जेहवो जेहनो लेख । तेह वो नीपजे । अमोल कहे हुइ
 जिंदी जी ॥ १८ ॥ दुहा ॥ दरबारे वीधो घणो ॥ सेठजी तवही माळ ॥ लाभ
 घणो उपराजीयो । मदन पुण्ये ते काल ॥ १ ॥ हर्या सेठजी अती घणा । जाणी मदन
 पुण्य वंन ॥ पाछा आया निज घरे । मदन साथ धर खंत ॥ २ ॥ सन्ध्या समय सेठथी
 । मदन करे प्रकाश ॥ आज जामनी जाइने ॥ रहस्यु देवी आधास ॥ ३ ॥ साधन करस्युं
 मंत्रनो ॥ छे जफरी काम ॥ आज्ञा दीजे मुज भणी । प्राते आस्युं आम ॥ ४ ॥ सेठ

पूर्णा वंशं वर्जिषि ॥ तिम सुख तुलने धाय ॥ शिग्रही प्राते आवीये । तिम हृममन हर्षाय
 १ ॥ ५ ॥ दाट १२ मी ॥ आट कृया नव दावडी पणी हरिरे ॥ यह० ॥ शिग्र आया नव
 यागमें ॥ मदनेभरजी ॥ मनमें परी आणंद ॥ हो मन मोहनजी ॥ अम्ब कौचर थी
 रहाईयां ॥ मदनेश्वरजी ॥ बंष्टे देव वसु नंद ॥ हो मन ॥ १ ॥ कला जमाड तेहनी
 ॥ मद ॥ यथा योग्य तत्काल ॥ हो मन ॥ आरुह हुवा सावध पणे ॥ मद ॥ गया ग-
 मन गन चाल ॥ होमन ॥ २ ॥ आया राय सदन पर ॥ मद ॥ चोंगिरदा फिर जोय
 ॥ हो मन ॥ बंदोबस्त पुक्त देवीयो ॥ मद ॥ ज्यो भेद न प्रकट होय ॥ हो मन ॥ ३ ॥
 बार्हा नार्गनं मारणे ॥ मद ॥ पेठा सांय सदन ॥ हो मन ॥ कुंवरी झट ऊर्गी हुइ ॥ मद ॥
 श्रमिन हर्ष पदन ॥ हो मन ॥ ४ ॥ सत्कारी मधुरी लये ॥ मद ॥ पावन कीधो भवन
 ॥ हो मन ॥ वृत्तार्थ करी मुज भणी ॥ मद ॥ देभलभ दर्शन ॥ हो मन ॥ ५ ॥ जत्र
 थी दीदार पेखीया ॥ मद ॥ तव थी आश अपार हो ॥ मन ॥ अत्र ते पूर्ण कीजी ये
 ॥ मद ॥ कर गृही सफल अवतार हो ॥ मन ॥ ६ ॥ सामग्री तहू मज्ज छे ॥ मद ॥
 लग्न नणी इण ठाम ॥ हो मन ॥ गंधर्व लग्न परी इहां ॥ मद ॥ पुरी जे शिग्र हाम ॥

श्रुं नाणिक नुंटे उरुना ॥ सुणो ॥ कुंथरी ॥ विम मंथो जाये हात ॥ हो मन ॥ ८ ॥
 जागी जोधी जो सिले ॥ सुणो कुंथरी धो ॥ तो त्रिभित सुव पाय ॥ होमन ॥ राय पुत्र
 गजा घरे ॥ सुणो ॥ र्थार्थी सोसा थाय ॥ होमन ॥ १ ॥ निण कारण पहली कहुं ॥
 मण ॥ मन भूयो जोइ ४५ ॥ होमन ॥ याणिक ने घर दुःख घणो ॥ सुणो कं ॥ कहुंते सु-
 णीण मण ॥ होमन ॥ १० ॥ उठणो पाहली रातरा ॥ सुणो ॥ धान चुरेणी फेर ॥ हो
 म ॥ विम उगे जेवळे ॥ सुणो ॥ लेखट जाये जलेनेर ॥ होम ॥ ११ ॥ नीर लाइ अ-
 र्थीय ॥ सुणो ॥ कंडो निपजानो अन्न ॥ होमन ॥ जीमायो परिवारंन ॥ सुणो ॥ रबी
 प्रगल गहु मर ॥ होमन ॥ १२ ॥ सामू सुतरा जंटाणी दी ॥ सुणो ॥ भोलावसी घणा
 काम ॥ होमन ॥ ते तो गहु करुना पडे ॥ सुणो ॥ विसामो नहीं नाम ॥ होमन ॥ १३
 ॥ मांजणी लीपणी र्थिणी ॥ सुणो ॥ इर्यादी घणा काज ॥ अहो निशी करुवा पडे ॥
 मण ॥ निनी विमते तुम लान ॥ होमन ॥ १४ ॥ पाळे पम्बायो पडे ॥ सुणो ॥
 जन्म गो सुर्या जाय ॥ होमन ॥ तेदधी मुजंन मीयवो ॥ सुणो ॥ जाइ रांतू
 निज टाय ॥ होमन ॥ १५ ॥ उपचमो तुम आर्याया ॥ सुणो ॥ पिता नहीं पर-
 णाय ॥ होमन ॥ विणथी दुच्यो मुज भणी ॥ सुणो ॥ नणा उतावला थाय ॥

होमन ॥ १६ ॥ उताचला ते चावला ॥ सुणो ॥ धीरा गंभीरा हो ॥ होमन ॥
 तिण कारण समता धरी ॥ सुणो ॥ कुल घर लज्जा जोय हो ॥ मन ॥ १७ ॥ राजा
 जी गुण वंतछे ॥ सुणो ॥ परणासी थोडे काल ॥ होमन ॥ जोगी जोडी मिलावसी ॥ सुणो ॥
 अवसर जोबो हाल ॥ होमन ॥ १८ ॥ तुम हमनी औलख नहीं ॥ सुणो ॥ बली नहीं
 संबन्ध ॥ होमन ॥ गुप्त कार्य करतां यकां ॥ सुणो ॥ हृदय होवे अन्ध ॥ होमन ॥ १९
 ॥ हुंआयो तुम संकेत थी ॥ सुणो ॥ पर्दाधी हित सीख ॥ होमन ॥ रखे माठो
 लागे मन चिये ॥ सुणो ॥ नधरजो कोई तखि ॥ होमन ॥ २० ॥ शिप्र जवाब हिवे दी
 जीये ॥ सुणो ॥ जाडं निज ठिकाण ॥ होमन ॥ अमोल कही ढाल वारमी ॥ सुणो ॥
 देखो मदन गुण ज्ञान ॥ होमन ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ रंभा सुणो वचनए । अर्थय पा
 इ अपार ॥ उभय तरुण एकांतमें ॥ मन राख्यो इण वार ॥ १ ॥ सरल संतोपी सील
 वंत ॥ इण सम अवरन नर ॥ चिंतामणी मुज कर चढ्यो । कोइ पुण्य अनुसर ॥ २ ॥
 ह्य अनोपम काम सम । अमृत वपण उचार ॥ सुसंस्थान संथित तन । बुद्धिप्रवल गुण
 धार ॥ ३ ॥ जाती कुलधी काज स्युं । सुजने गुणधी काम ॥ जो प्हुवा करधी गया ।

सधुरश्वरे ॥ पभण सुणजा साय ॥ ५ ॥ ढाल ॥ १३ मी ॥ हू तुज आगल सी कहू क-
 नैया ॥ यह० ॥ कर जोडी विनंती करूं ॥ बालेश्वर ॥ छुली २ करूं अरदास हो ॥ केस
 मिया लाल ॥ निघुर वचन इन उच्चरी ॥ बालेश्वर ॥ नहीं कीजे नीरास हो ॥ केसरिया
 लाल ॥ १ ॥ अवला नी अर्ज अवधारीये ॥ बालेश्वर ॥ आं ॥ मुजने तुमचो आधार
 हो ॥ केसरी ॥ धन सुव राजमें नहीं चहूं ॥ बाले ॥ हूं गुणीने इच्छनारहो ॥ के ॥ अच ॥ २ ॥
 यथा जोग जोडी मिली ॥ बाले ॥ धैर्यकिम धरे मनहो ॥ के ॥ पुनर्पी ते किम पामीये ॥ बाले ॥
 परदेशी नो वतन हो ॥ के ॥ आ ॥ ३ ॥ जाती कुलगुण थो लह्यो ॥ बाले ॥ पूछवा नो नहीं कामहो ॥ के ॥
 हूं लो भाणी गुण देखने ॥ बाले ॥ अवर नहीं मुज हाम हो ॥ केस ॥ अच ॥ ४ ॥ कहे सो
 मां कर्मयूं सही ॥ बाले ॥ यथा शक्त में काज हो ॥ केस ॥ काम थी सुस्ती ना रहे ॥
 बाले ॥ तं मांहे किसी लाज हो ॥ केस ॥ अच ॥ ५ ॥ अण विचार्यो जे करे ॥ बाले
 ॥ न पाछे पस्ताय हो ॥ केस ॥ हूं तो परिक्षा कर ग्रहूं ॥ बाले ॥ चिंतामणी जाणी
 पाय हो ॥ केस ॥ अच ॥ ६ ॥ हूं गुण जोइ आपका ॥ बाले ॥ निश्चय क्यो मन माय हो
 ॥ केस ॥ बीजो नर बांछूं नहीं ॥ बाले ॥ जाणुं तात ने भाय हो ॥ केस ॥ अच ॥ ७ ॥
 हिवे ताण नहीं कीजीये ॥ बाले ॥ ली मुज परिक्षा पूर हो ॥ केस ॥ वातां में वक्त घणी

कर्म ॥ जोडा जिम निरवाह जा ॥ बाल ॥ जन्म भर एकतार हो ॥ कस ॥ अब ॥
 अमानन देह संचर्या ॥ श्रो ॥ व्योम मार्ग मदनेश हो ॥ विवे ॥ प्रेमालुर कन्या भइ ॥
 श्रोना ॥ नणा नीर वरसेश हो ॥ विवेकी ॥ अब ॥ १७ ॥ सहेली हाँसी करे ॥ श्रोता ॥
 म्निद्र द्रुया सहू काम हो ॥ विवेकी ॥ हिचे हूं जावूं मुज धरे ॥ श्रोता ॥ दोपहेरे आव-
 म्नुं आमदां ॥ विवे ॥ अब ॥ १८ ॥ सहेली गया पळे ॥ श्रो ॥ उजागराने जोग हो ॥
 श्रो ॥ आत्म आयो अंगमें ॥ श्रोता ॥ लोटी सेजमें छोग हो ॥ विवे ॥ अब ॥ १९ ॥
 निद्रा आइ घंग दियो ॥ श्रो ॥ करती उठण विचार हो ॥ विवे ॥ परबस हुइ ते तत्क्षिणे ॥
 श्रो ॥ हांच जे होणहार हो ॥ विवेकी ॥ अब ॥ २० ॥ गम नहीं क्षिण अंतर तणी ॥
 श्रो ॥ जानी वचन प्रमाणहो ॥ विवे ॥ ढाल तेरे अमोलख कही ॥ श्रो ॥ ते सुणो
 आंग वधान हो ॥ विवेकी ॥ अब ॥ २१ ॥ ० ॥ दुहा ॥ जक विषय प्रकाशतो ॥
 उगां नच दिनराय ॥ राणीं चिंते मन विपे । रंभा जागी नाय ॥ १ ॥ धाय ॥ मात भेजी
 निहा । ला वाइने जगाय ॥ सिरावणी बला हुइ ॥ ते किम आइ नाय ॥ २ ॥ धाली
 आइ जाइयो । गइ मनमें धस्काय ॥ हाय २ यो रातमां ॥ कुण कीधो अन्याय ॥ ३ ॥ एकरात रही
 वगली । तमां थयो अकाज ॥ राय राणीने दाखवुं ॥ जिम रहे म्हारी लाज ॥ ४ ॥ थर २ अंग

भृजावती ॥ आइ राणीने पास ॥ नेण नीर बर्पावती ॥ उभी न्हांख निश्वास ॥ ५ ॥ डाल १४ मों
 ॥ गघच आर्वाया हो ॥ यहदेशी ॥ देख राणी घावरी कहे ॥ छेवाइने कुशल ॥ इम किम
 मी थड ते ॥ कारण कांड कले ॥ १ ॥ सुगणा सांभलो हो । होणहार श्वरूप ॥ ओं ॥
 निज बहे ते कांड दीटो । पाछी आइ केस ॥ काल जो मुज धर २ छे । छे वाइने क्षेम
 ॥ सुगणा ॥ ३ ॥ तोतलाती बोले दासी ॥ मा मुजधी न कहाय ॥ आप निजरे जोबो
 चारो ॥ वाड कियो अन्याय ॥ सुगणा ॥ ३ ॥ धस्को पर्दायो धाय बचने । शिघ्र जाइ
 जात । कुवर्ग का कूचेन देखी । हीये प्रजालित होय ॥ सु ॥ ४ ॥ कहे वेगी ला राजा-
 जी । देखावो गहाल ॥ पापणी पडदा में रेइ । किया कर्म चंडाल ॥ सु ॥ ५ ॥ दासी
 दाई गड भूपप । राणी साब बुलाय ॥ वाइजी का मेहल माही । शिघ्र चलो महाराय
 ॥ सु ॥ ६ ॥ गजा सुण आश्चर्य पाइ । शिघ्रता तिहां आय ॥ राणी कुंवरिने चताये ।
 देखो कियो अन्याय ॥ सु ॥ ७ ॥ राज मुक्षम द्रष्टे जोइ । बिभ चारी ना चेन ॥ प्रजल्यो
 तय कोधानल थी । एक थइया नयन ॥ सु ॥ ८ ॥ अंग रक्षक धायथी कहे । बोल स-
 च पवार ॥ किण साथे दूण कर्म फोब्या । नहींतो खारी मारु ॥ सु ॥ ९ ॥ भाय कहे
 में गजा जेट । गद सित्रणीने देह ॥ पुलि ओइ व हो मान नि । अन्वर्ष कीटो पड ॥ सु ॥ १० ॥

महाराज दखत बाई स्वपन । न जाण या बात ॥ एका एक किम वणीयो ॥ अचंभो
 मुज आन ॥ सु ॥ ११ ॥ युन्हेगार हूं नहीं मालक । पूछो बाई थी आप ॥ ब्रूठ साच
 की खबर पडसी । जणासी सह साप ॥ सु ॥ १२ ॥ क्रोधालुर नरेश्वर तब । ठोकर
 मज ने मार ॥ जगाइ कुंवरी भणी । घबरी ऊठी ते वार ॥ सु ॥ १३ ॥ अती शरमाइ
 मज छोडी । दूर उभी जाय ॥ वस्त्रथी अंग हांक धूजे । नीची द्रष्ट ठहराय ॥ १४ ॥
 राय कंठेर कुट खप्पन । कलंकित निर्लज्ज ॥ किणरै साथे कर्म फोड्या । बोल सत्यकु
 कज ॥ न ॥ १५ ॥ उचम कुल में हांड उत्पन्न । किम सूज्यो ए काम ॥ पवित्र कुलने
 पायकी दे । आज कीथो शाम ॥ सु ॥ १६ ॥ जन्मतां जो मरी होती । अथवा इत्ता
 दिग ॥ को । बक रोड रहना । न होतो ए रिन ॥ सु ॥ १७ ॥ इत्यादी बहू कड
 दखने । शर । जो निम्कार ॥ कुंवरी उत्तर देत नहीं ॥ रही ते मौन धार ॥ सु ॥ १८
 राण ॥ य ॥ निप कन्या । सांपण सम देवाय ॥ जीवनी नहीं काम की । दो यम सदन
 ॥ १९ ॥ दास ने राय हुकम देवे । न्हांव खाडी नाय ॥ कुंवरी कहे हूं
 ॥ जिस मत्र सुव पाय ॥ सु ॥ २० ॥ सेहल पादल खाइ ऊंडी । गोखे उभी-
 ॥ सर्व अमाइ जप प्रमंथी । छुडी मूकी देह ॥ सु ॥ २१ ॥ पडी कुंवरी रोइ माता ।

॥ देवी विजय दाम ॥ राज्ञाज्ञी पण गया सभामे ॥ पस्ताइ मन ताम ॥ सु ॥ २२ ॥
 ॥ अमर्य समरण प्रभय ॥ आल न आयो रंच ॥ डाल चउदे कही अमोलक । आगे जोयो
 ॥ २३ ॥ ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ राय तेलार बुलाय ने । कहे धमकाइ एम ॥ जुल्ल
 ॥ २४ ॥ न मे । तू नहीं जाणे केम ॥ १ ॥ राते परण्या नर तणी । चौकस कर पुरमांय
 ॥ २५ ॥ लायो गहने ॥ जेणे कियो अन्याय ॥ २ ॥ कोटवाल प्रणाम कर ॥ आयो
 ॥ २६ ॥ टिहाण ॥ समला मार्ग रोकीया । भागे नहीं को जाण ॥ ३ ॥ सुभट गुप्त पठा
 ॥ २७ ॥ दरो दोयत पुरमांय ॥ राते परण्या नर भणी । दो मुज कर झट लाय ॥ ४ ॥
 ॥ २८ ॥ दीटाइयो । प्रगट करी इनाम ॥ जो हम चोर छियावसी । तस करल्या वदनाम
 ॥ २९ ॥ डाल १५ भी ॥ ताचडा धीमेस्तो पडजे ॥ यह ॥ कर्म गत टाली नहीं जाइ हो ॥
 ॥ ३० ॥ आयु पुन्य प्रचल जिनीका ॥ बाल बांको न थाइ ॥ आं ॥ मदन रयण पाछली
 ॥ ३१ ॥ आयो याग मांही ॥ वेणु देव नी कला संकोची । बड कोचर थाइ ॥ कर्म ॥ ?
 ॥ दिन उगंता सेठ तणे एर आयो चलाइ ॥ मदन वदन शाहजी अवलोकी । अर्घ्य अली
 ॥ ३२ ॥ कर्म ॥ २ ॥ देवी पुजा विध प्रनोम्नी । तुज अंग देखाइ ॥ परण्यो दीसे कोइ

१० ॥ ११११ वक्षोप्याइ नृपने पांस । चोर जे पकडाइ ॥ आप कहौ तो हाजर लांया । छु
 १११ ॥ १११२ ॥ १६ ॥ नृप वहे हम ऐसे डुष्टका । मुख न देखांइ ॥ परवारो बध
 १११ ॥ १११३ ॥ गृहीशं चडाइ ॥ कर्म ॥ १७ ॥ नृप हुकम जाणी भट पासे । मदनने
 १११ ॥ १११४ ॥ मदन कहे कथो वन्धो कहां तियां । चाटूहूं भाइ ॥ कर्म ॥ १८ ॥ कणेर साल
 १११ ॥ १११५ ॥ रत्नांगणी लगाइ ॥ फुटो डोल तस आंगे बाजे । मशाणे लेजाइ ॥ कर्म ॥
 १११ ॥ १११६ ॥ महभ्रतगन जोदा ने भिलिया । देवी विलवाइ ॥ मदन मनमें फीकर न किंचित
 १११ ॥ १११७ ॥ मन् मुलकाइ ॥ कर्म ॥ २० ॥ पुण्य पसाये जोग वण्यो शुभ । ते सुणो चित
 १११ ॥ १११८ ॥ १११८ ॥ परागमी कृपि अमोलिक । कर्म गती गाइ ॥ कर्म ॥ २१ ॥ ॥ दुहा ॥
 १११ ॥ १११९ ॥ जय जय जय ॥ करण चरण गुण धार ॥ मांस २ तपस्पा करी । करे आ-
 १११ ॥ ११२० ॥ ११२० ॥ केननमें सदा रहे । मांस लगे करे ध्यान ॥ पारणे आवे प्राप्त में ।
 १११ ॥ ११२१ ॥ अन पान ॥ २ ॥ संतोपे मनु देहने । पुनः जावे वन मांय ॥ इम हिज तिण
 १११ ॥ ११२२ ॥ मेहद पुरिने पाय ॥ ३ ॥ गौचरी बक्त डूइ नहीं । जाणी रखा तरु तल
 १११ ॥ ११२३ ॥ ज्ञान पान मे रस रया । मेरु परे अबल ॥ ३ ॥ तिण अवसर तिण मांयेग । मदन

श्री जिन आया हा सारं दश मझार ॥ यह ० ॥ सुनीयर दीठा हो ॥ तव तिहां मदन
 कुंवार ॥ रोम २ दृढसित थया ॥ धन्य बडी महारी हो । दीठा दीन दयाल ॥ चरण
 धरण मन उमया ॥ १ ॥ तव तलवरने हो ॥ कहे धंभो इण ठाम ॥ दर्शन लेखु गुरु
 राजना ॥ ते संग रहियो हो । आया ऋषियर पास ॥ पहली ही कीजे धर्म काज न ॥
 २ ॥ सधिनय बंधन हो । नमन कियो तीन बार ॥ कर जोडी उभा रखा ॥ धन घडी
 म्हारी हो । अंत समय महाराय ॥ दर्शन दीठाजी सहू पापजगया ॥ ३ ॥ इस सुण
 वाणी हो । माथु अर्थाय पाप ॥ ध्यान पारीते इस उचरे ॥ अंतः सम्यो भाइ हो । कि-
 म दायो इणवार ॥ किम ए मनुष्य गम किहां चरे ॥ ४ ॥ मदनजी चीती हो । कही
 सहू मानी जी वान ॥ जेजे पोते अनुभवी ॥ दया सागर हो । पर उपकारी महंत ॥
 नहने बचाया इस उचरे ॥ ५ ॥ सुणो कोतवाल जी हो । पामी मनु अवतार ॥ अकृ-
 त्य थी वारो आत्मा ॥ किंचित आठु हो । शेर आधा अन्न काज ॥ पापे बुडा वो धात
 मा ॥ ६ ॥ सहू जीव मांही हो । मोटो पंचेन्दी जाण ॥ सनुष्य हिल्या हो जवरी वर्णी
 ॥ नयं समायना हो । मार दवाही बग्याण ॥ जे उपजे हो हलु कर्मी भर्णा ॥ ७ ॥
 आहना लक्षणहां । पगम धरम दया हांय ॥ मरम पेछाणां धर्म नां ॥ चेर विरोधेहो । जीव

नरक में जाय ॥ भारो बान्धीहो मोटो कर्म नो ॥ ८ ॥ जिन रीते बान्धेहो । जीव कर्म
 अज्ञान ॥ भोगेच तिम दश भयलगे ॥ ऋणन ही छूटे हो ॥ कडी बदलो तिन दीध ।
 द्रष्टान जाणो ज्यो भरम भगे ॥ ९ ॥ खन्धक जीवे हो । तेरा क्रोड भव मांय ॥ सराइ
 काचरो चीरियो ॥ साधुने बेसेहो । तस भमीनो जी बंते ॥ चर्म उतारी बदलो लीयो ॥
 १० ॥ गज सुख माले हो लाख निन्याणु भव मांय । शोक सून रोट बन्धावीया ॥ सो-
 मल सुत्तरे हो ॥ सिर धर्यो खेर अंगार । कर्म काटी मोक्ष सिधावीया ॥ ११ ॥ इस
 घणा छ हो ॥ उदारण शास्त्रने माय । श्री मन्दागन्त अघ्या तरेमें ॥ मांडव ऋषि हो ।
 टीनांडी मारी कुशाग्र । सूली चढाया भव फेरमें ॥ १२ ॥ जीव हिंशाथी हो ॥ दालिंदी
 कुप्ट जी थाय । दानु भवे संकट लहे ॥ इस मुणी कम्पो हो । दो भव दुःखथा हो
 भ्रात दया लावो हो जो निज हित चहे ॥ १३ ॥ जो कांइ देवे हो । दान सुवर्ण
 सुंमर । पृथवी भरिते हेमे थी ॥ कांइ छुडावे हो । मरतो एकही प्राण दर्याके ते तुल्ये
 नथी ॥ १४ ॥ जिम निज आत्मज हो । सदा जीवणो चहाय ॥ तिमही ज जाणो सहू
 प्रार्णया ॥ जो पोतापे हो । कधी संकट आय ॥ तो घयरावे तिम सहू जाणीया ॥ १५

॥ जिनो हो मरने अण्डि ॥ इम

अंतरमें हो पेसो ज्ञान की द्रष्ट ॥ ए अयसर आइ अणी ॥ १६ ॥ सुणी उपदेशज हो ॥
 चमारयो निल कोटवाल ॥ दीन दयाल धन्य आपने ॥ भलो बनायो हो । अनर्थभी
 मुज आज ॥ भरम जाण्योजी धर्म पाप ना ॥ १७ ॥ जाणी जोइ हो । नहीं कहूं मोटो
 अक्राज ॥ धर्म वन्य मदन मांझो ॥ आप पसाये हो । दीधो अभय पढाय ॥ उपकार
 मानां वानु थांसो ॥ १८ ॥ दिने नहीं करस्युं हो । कोइ पचेन्डी की घात ॥ ए प्रति-
 जा मुजने लगी ॥ आज थी आपने हो ॥ मान्यांमं गुरु देव । धर्म दयांमं देव जिनवरा
 ॥ १९ ॥ मदन जी लीभा हो । ते बेलां पद्यवाण । पर नारीने जाणू बेनडी ॥ तस
 मान जानज हो । सुधी थी मुजने परणाय ॥ तेहीज मुज प्रिया खरी ॥ २० ॥ दोनो
 प्रनसा हो ॥ लीनी इस उलसहाय । वंधणा करी वानु भावस्युं ॥ मदन पसाये हो ॥
 मसकिली यया कोटवाल ॥ दया भर्मी उत्सहास्युं ॥ २१ ॥ सुनी पधार्यो हो । ग्रामने
 गोवरी फाज ॥ तलवर मदन आगे चल्या ॥ लोकीक राखण हो । मदन बन्धन सांय
 ॥ अंग भर्म प्रेम मल्या ॥ २२ ॥ धन्य २ मुनीवर हो ॥ करं मांठा उपकार ॥ मरण
 अणी थी उगरीया ॥ बोइने तार्यो हो ॥ ढाल सोलमीरे माय ॥ अमोल वंधे गुण
 रागीया ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ थोडा दूरा जाय ने । सहू थी कहे कोटवाल ॥ देर घणी

दूर भागे । दिन थोड़े रह्यो हाल ॥ १ ॥ आज घात नहीं होवसी । देख्यो जाती काल
 ॥ गद्ग जायो निज स्थान के । गद्ग गया होइ सुराल ॥ २ ॥ कोंटवाल कहे मदन धी
 । न गद्ग्युक प्रसाद ॥ देख्यो भणी उगारीया । मेटी गद्ग चियबाद ॥ ३ ॥ हिते जा-
 न नृज बगला ॥ फिरीन आव्यो ए ग्राम ॥ मदन कहे अवसर विना । नहीं आस्युं इण
 ठाम ॥ ४ ॥ ए उपकार थांको हुयो । भव्यो भव न भूलाय । शक्ती आया फेडस्युं ॥ इम
 कही मदन सिधाप ॥ ५ ॥ बाल ११ भी ॥ उपमंन की लली ॥ यह ॥ देख्यो धर्म
 पनाप । पुण्य प्रबल जीव सब सुव पाय ॥ ओं ॥ कोंटवाल गुरी हुइ । गयो निज
 ठाम ॥ धर्म भेद जाणी तो पायो आराम ॥ देख्यो ॥ १ ॥ ब्रत गुजदाँ मारण । भूल
 पदी गेह ॥ सल जुग क्या धंत । कृप लेवे ऐह ॥ देख्यो ॥ २ ॥ धर्म ध्यान नित्य कर ।
 गेह कोंटवाल ॥ इम तेहने सुखे तिहां । धीते काल ॥ देख्यो ॥ ३ ॥ हिते मदन जी
 आया । बाग महार ॥ गरुड निकाली । तस लींयो सुधार ॥ देख्यो ॥ ४ ॥ हुइ सवार
 तर पैरी कल ॥ सग गग गगन मे गयो ने चल ॥ देख्यो ॥ ४ ॥ रात्री पड्या धी आ-
 या कैरी के गेहल ॥ सहेली रुवंती पैसी । पूछे जेल ॥ देख्यो ॥ ५ ॥ तिणरे धीतक

टाली । टल नाय ॥ प्रकाश करी जाइ । खाडी म जाय ॥ देखा ॥ ७ ॥ पता भेहा
 लाग्यो पाछा । बाहिर आया ॥ श्री पुर भणी चाल्या । मन समजाय ॥ देखो ॥ ८ ॥
 पत्र म्वानी तणे । आया घेर ॥ उत्तरिया मदन जी । देखे चउ फेर ॥ देखो ॥ ९ ॥
 म्वानी खानणन । ते लागा पांय । दंपती देखी तस । घणा हर्पाय ॥ देखो ॥ १० ॥
 प्राणा २ प्यारा पुन । लीनो उठाय ॥ उरथी चांपी घणो । प्रेम जणाय ॥ देखो ॥ ११ ॥
 दिन घणा किहां नुस । लगाया भ्रत ॥ तुम नही सांज आया । हस ववरात ॥ देखो
 ॥ १२ ॥ रंब गरुड थी पंड । झोकज खाय ॥ ओलभा दीया घणा । कारीगरजी तां-
 य ॥ देखो ॥ १३ ॥ लाय लागी पेट सांही । दुःख्यो घणो मन ॥ रंग संगे झुटयो ।
 नथे माया अत्र ॥ देखो ॥ १४ ॥ आज मोटा भाग । पाया तुज दर्शन ॥ हृदय कमल
 हुयो । पथे प्रपन्न ॥ देखो ॥ १५ ॥ मदनजी केहे । मेहंद पुरगयो मेय ॥ मुखमाहे रघो
 निशो । लःर्मा वत्त गेह ॥ देखो ॥ १६ ॥ राज माहे जातां । मुज लेगया संग ॥ राज कःया
 देखी मुज । हांगड दंग ॥ देखो ॥ १७ ॥ गंत गुप्त परंपयो । प्रांत जाणी नृप वात ॥
 कांट माल मांय भंज्यो । करवा घात ॥ देखो ॥ १८ ॥ माभूजी महाराज मिल्या दीनो
 छांडाय ॥ नाडी ने गरुड चडी आयो इण ठाम ॥ देखो ॥ १९ ॥ सार्चि वात कही ।

मदन निरकार ॥ ब्रह्मिन्वत् हृदय ले । पाम्या चमत्कार ॥ देखो ॥ २० ॥ मिट्टी सीस
 २१ ॥ बर्षा कीले पहरा पाग ॥ इहाँ हज रहो । सह पासो आराम ॥ देखो ॥ २१ ॥
 मीर म र्क भदत ली । रो विण धेर ॥ ग्याती स्वर्णगर्ग भर्की । कं बहु पेर ॥ देखो
 २२ ॥ पहर देवत पूरो हूयो । मतेर बाल ॥ अमोलख बहे । मदन पुण्य विशाल ॥
 २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ प्रथम गान्ध मारोसि हरीगीतच्छंद ॥ प्रथम खन्ड सम्भास मंडन ।
 वन्युप विदसे लया ॥ मदन नर्गना पुर बहाइ । पद्य स्वार्ती पर रहया ॥ गल्ट
 वा महर पुर पत्नीनी । कंव्या वर केशी थया ॥ मुनी राज साजे उगार्या । इत्यादी ए
 वांग्य रथा ॥ १ ॥

परम पुर्य धी ब्रह्मन्ती ऋषिजी महाराजके सम्प्रदाय के बाल ब्रह्माचारी
 मुनी धी अमोलख ऋषिजी रचित पुन्य प्रकाश मदन श्रेष्ठी चरित्रस्य

प्रथम खन्डम् समाप्तम् ॥ १ ॥

॥ दुहा ॥ सिद्ध साधुको गमन कर । सिद्ध करनको काज ॥ द्वितीय खन्ड प्रारंभ
 दो शुद्ध बुद्ध को साज ॥ १ ॥ चंद्र पुरीमें उपन्या । चंद्र प्रभू महाराज ॥ चंद्रवरण प्रणमू
 मन्त्र ॥ नारां दृच्छित काज ॥ २ ॥ चंचल स्वभावी जे नरा । ते तो मिश्र नहीं रेय ॥
 जे कस्य निश्चय कियो । उपाय करे ते तेय ॥ ३ ॥ श्री पुरु में खाती नरे । रह मदन
 कुंवार ॥ बेठा चेन पड़े नहीं । करी कांडक विचार ॥ ४ ॥ फिरवा निकल्या शहर में ॥
 जांचे कांड उपाय ॥ जेअथी इच्छित सिद्ध हुये । वेखे चित लगाय ॥ ५ ॥ विश्वेश्वर नामे
 निहां ॥ कलाचार्य प्रवीन । राज पुत्र पढावतो । करीने विद्या लीन ॥ ६ ॥ पाठकशालाने
 विषे ॥ छत्र बहुला आय ॥ मदन तिहां आइ खडा । जौये द्रष्ट लगाय ॥ ७ ॥ दो
 विभागने शाळना ॥ पट अंतर में डाल ॥ कुँवरी कुँवर भेगा भणें । राज कुल ना
 बाल ॥ ८ ॥ तिण में सतलत्र आपनो । होतो दीडो मदन ॥ चुप चाप फिर आधीया
 खार्ता कंज सदन ॥ ९ ॥ ढाल ? ली ॥ दया धर्म पावे तो कांड पुण्यवंत पावे ॥ यह
 देडी मदन कुँवर निज कार्य साधने । तुर्त ही बुद्धि उपावे जी ॥ जिम कोइ ओलखवा
 नहीं पाये । तिस निज रूप पलटावेंजी ॥ मदन ॥ ? ॥ मेला फाटा लीरा लटकता । घत्र
 धार्या निज अंगोजी ॥ राग रज मेले डलिले लगाइ । बहु तरह लगायो रंगोजी ॥ मदन

॥ २ ॥ खाती स्वातण ए तमाशो जोई । आपसे हँसवा लाग़ा जी ॥ आज़ किस्स्यो प
 ष्याग वणायो । के भूत श्रांतिग कोइ जागाजी ॥ म ॥ ३ ॥ हँसतो मदन कहे हूँ गेलो ।
 भूत तःय भग जाये जी ॥ वे फिकर आप में विराज्यो । कळं जिम लेहर मुज आवे
 जा ॥ म ॥ ४ ॥ इम कहीं आया वजार के मांही । लोक देख अर्धय पाइजी ॥ गम्म
 जम्मा पुछे नाम तेहनो । ते 'मूर्ख' वतलाई जी ॥ म ॥ ५ ॥ मूर्ख २ सहू वतलावे ।
 'व' पाळ हर्पाई जी ॥ हँसे कूंदेने स्याल वणावे । लोक भणी हँसाइ जी ॥ म ॥ ६ ॥
 इम भमनां ते गया शाल में । पंडितसे इम बोलै जी ॥ मुजने भणावो तो दावाशी ।
 कु. ध द्यंत गुजतोलै जी ॥ म ॥ ७ ॥ हँसी आचार्य भणवा वेठायो । दीधी हाथमें पाटीजी
 ॥ बोलै भाले ते कहे हूँ भोलो । पाटीये पडि चीरांटीजी ॥ म ॥ ८ ॥ पाठक सहू सुण हँसवा
 लाग्या । सधुंन लागे गमतांजी ॥ मूंडे लाग्यो पांडयाजीने । नित्य तिहां आइ रमतोजी ॥ म ॥ ९ ॥
 सो कंड तम काम भालांन । जाण ने समजे नार्हीजी ॥ पांच सात वार तेह थी कहवा
 वे । फिर शिष्र वेवे निपाइ जी ॥ म ॥ १० ॥ तेहयी सहूने प्यारो लागे । वेवे जेते मां-
 रो जी ॥ सधुंन सहाती वर मस्करी । जिम जागे अनुरागे जी ॥ म ॥ ११ ॥ तिणही

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इत्युक्तं ॥ अथ सिद्धो एकस्मिन् अह्ने ॥ इत्युक्तं ॥
 इत्युक्तं ॥ २२ ॥ दीपो सूर्वात् तं गुह्यं देवैर्गुह्ये ॥ सूर्वात् पाहिर आह्वी ॥ वांशी
 ॥ मन्त्रोक्तं ॥ इत्युक्तं ॥ २३ ॥ अह्ने वेदो प्रान पुनर्कने ॥
 इत्युक्तं ॥ २४ ॥ सदनं कुवरी कने जाह्वी ॥ स ॥ २४ ॥
 इत्युक्तं ॥ २५ ॥ से पण चाहुं अवस्त्रं निवस्त्रं ॥
 इत्युक्तं ॥ २६ ॥ तेतले लुई हुइ शाळकी ॥ पोताना वफनार लड
 की प्राम टाला ॥ कर्का असोट रतालोडी ॥ देखो सदन केंसा परंपची ॥ करे नम नम
 ॥ २७ ॥ इत्युक्तं ॥ २८ ॥ राज पुर्वी तंगी लर्गा ॥ सचीव पुत्रम्युं अँच ॥ त
 इहो जो अह्व्य करे ॥ होवे नम गुज अस्त ॥ २ ॥ हिंवे लालच छोडी करी ॥ सीव
 इत्युक्तं ॥ २९ ॥ लंगाय निज तान पाम ॥ भणपो गुण्यो वताइयो ॥ राय प्रधान हुड्याग ॥
 इत्युक्तं ॥ ३० ॥

गये प्रवृत्तना सइ ॥ ५ ॥ ढाल दूतरी ॥ पाडव पचिू घटना । स्हारमिनडामियाजी
 ॥ ५ ॥ रत्ता पुत्रे गुग सुन्दरी । प्रधान पुल विशेषी ॥ तडफडती अति मन विपे । हि-
 य वि.ल योग निरुवा जांग ॥ १ ॥ भधिकजन सांभलो । बुद्धि पुण्य मदन कासवाय ॥ च
 तु ॥ २ ॥ बुद्धि ॥ आ ॥ रूप वय बुद्धिसारथी । मुजसचीव तनुज हित दाय-
 ॥ ३ ॥ न अन्य गंम नहीं ॥ राज घरे दुःख घणो थाय ॥ चतुर ॥ २ ॥ शोकाने पर-
 ॥ ४ ॥ अर्थ जांग दुःख होयजी ॥ वाणिक घर रहतां थकां । मुज हुकम न उछेव
 ॥ ५ ॥ मनहर वंस सदा मनस । क्षिणेक नाहीं भूलायजी ॥ ते पण डम
 ॥ ६ ॥ कांडक भिलग उपाय ॥ च ॥ ४ ॥ बीजो कांड सूजे नहीं । सूख्योने
 ॥ ७ ॥ निण हाथे पल मोकला । हूं तो पुरे सवारी आस ॥ च ॥ ५ ॥ रजा
 ॥ ८ ॥ ते तो आइ तव तिण पामजी ॥ प्रणमी पद उभीरही । ते कह
 ॥ ९ ॥ साकहे मुज काज करणेने । चाहीये छे माणस एकजी ॥
 ॥ १० ॥ पली अन्य कार्य छे अनेक ॥ च ॥ ७ ॥ अरीविंद कह तुज चा-
 ॥ ११ ॥ फार तो भेजूं दरवारसे ॥ जे सदा रहे तुजपास ॥ च ॥ ८ ॥
 ॥ १२ ॥ अत वात्रलेइ रेयजी ॥ फारमावोतो राखूं तेहने । तव रायजी

आदिना देय ॥ च ॥ १ ॥ हरीं जाइ निजघरे । भेजी दासी शाळरे मायजी ॥ मूल्यो
 निना रामांवां हांमी । लावो तेह ने इहां बुलाय ॥ च ॥ १० ॥ मदन आयो शाळा वि-
 ष । राजपुत्री दंबी नायजी ॥ पूछे पण्डित थी तदा ॥ राय कुंवरी कहां महाराय ॥ च ॥
 ११ ॥ काम बगयो मुजपकी । पइसा आयप्या चारजी । आज देवण तणो कहां । तेह-
 र्था मित्रांवां इणवार ॥ च ॥ १२ ॥ पण्डित कहे ते घर गइ । अब नहीं आवे इण ठाण
 र्त्री ॥ गन्ना हुइ चित मदनने । अब कीहां जोवूं ठिकाण ॥ च ॥ १३ ॥ वेढो वादिर
 आयने । तव दासी आइ तत पासजी ॥ चल शिष मूलं मुजसंगे । वाइ बोलवे रखवा
 दास ॥ च ॥ १४ ॥ कहे मदन हूं तव चद्र । चार पइसा मुजने अपायजी ॥ दासी हूं-
 फारो भयो । सांय हुयो अति हर्षाय ॥ च ॥ १५ ॥ नाच तो कूदतो मरगे । बली उ-
 डातो पूरजी ॥ चेढी जोइ चिंतरे । वाइ किन चाले लया भूल ॥ च ॥ १६ ॥ राय
 कुंवरी गांव रही । मूलं आवंतो जोयजी ॥ खुशी हुइ मनमें घणी । इण थी कारज
 म्हारां हांय ॥ च ॥ १७ ॥ हरे बुझाइ कने लियो । दीया लावाने पकानजी ॥ कहे
 सदा तुम इहां रहे । तुज कळो कारस्यु प्रमान ॥ च ॥ १८ ॥ मूलं कहे हे रेवस्यु । जो
 मरे पेसा मिटावजी ॥ रासरा रासरो नही कहे । साजपणजे रेवस्यु ॥ १९ ॥

भुक्त्या समाचार ॥ च ॥ २० ॥ खुशी हुई मदन रघो । करवा इच्छित कामजी ॥
 दूजी ढाल दूजा खडकी । कहे अमोल पुगे किम हाम ॥ च ॥ २१ ॥ दुहा ॥ गुणसुन्दरि-
 गकान ग । मूर्ख ने इस केय ॥ मुज मननी तुजने कहू । उयो भदन दूजो लेय ॥ ? ॥
 मूर्ख सांगनया कहे । नहीं तुम हुकमेने वार ॥ कहस्यो सो कहस्युं सही । नहीं किहां करुं उचार
 ॥ २ ॥ कुँवरी कहे प्रधान का । ओलखे छे तूं गेह ॥ मूर्ख कहे जाणु अलु । ते दिन
 राख्यो नह ॥ ३ ॥ हां तेहीज कुँवर तणे । छाने जाइ पास ॥ थे पल लिखने देखु । तूं
 गुम दर्ज नाम ॥ ४ ॥ दो तीन वा समजाइयो । तव भरीयो हुंकार ॥ प्रेम पल लिखवा
 यर्था ॥ गुण सुदरी तेवार ॥ ५ ॥ ढाल ३ री ॥ भे मुख देख्यो गोडी पारस को ॥ यह ० ॥
 दया चतुर्नर मदन परपंचने । करे हे कैसे उपाय जी ॥ आं ॥ अहो प्राणेश्वर आप
 र ग्ही । तरशे महारो तन्न जी ॥ परवश पण हं घरमे रही छूं । पक्षा ज्यो उंडे मन्न
 जी ॥ देखो ॥ ? ॥ पांड्याजीने धैस पड्यार्थी । पहुँचाडी मुज गहजी ॥ तुम मुज मन
 मन्दिग्मा रभीयां । कैसे निभावुं नेहजी ॥ देखो ॥ २ ॥ आज लगण दिल खोल बोल
 णगं । अवसर मिलियो नाय जी ॥ दिवगं चाततो छे कागदधी । सोदो कोइ उपाय

१ ॥ देवो ॥ ३ ॥ दीपो कागद मूर्धे नै हाये । ते आयो निज गेहजी ॥ वांचने प्रमा-
 २ ॥ थावा । उत्तर इण विष देवजी ॥ देवो ॥ ४ ॥ तुम विरह मुज नाल समाणे ।
 ३ ॥ हाया मांय जी ॥ तुम उपाव यतावो ते करुं । मुजने नै मूजे उपायजी देखो ॥ ५ ॥
 ४ ॥ भाग्य कर धरो प्योशे । जाणो ले कर मांय जी ॥ आया राज पुखी नै पासि ॥ कृ-
 ५ ॥ ॥ भाग्य जी ॥ देवो ॥ ६ ॥ कहे मुजने इनाम दीयो ए । बुलायो नित्य एम जी
 ६ ॥ ॥ ॥ उमाद उत्तर किम्यो लायो । छे फिस्यो मुज पे प्रेमजी ॥ देवो ॥ ७ ॥ मुख
 ७ ॥ ॥ ॥ कागद दीनो हाय जी ॥ कथा एकांत जाइने वांचजो । मनमें राख
 ८ ॥ ॥ ॥ देवो ॥ ८ ॥ प्रेम पत्र ज्यो कुंवरी हुल्लासि । खोली हृदय लगाय जी
 ९ ॥ ॥ ॥ सुभावाल सतिचा अक्षर । मतलबी शब्द जणाय जी ॥ देवो ॥ ९ ॥ सुभागे मुज
 १० ॥ ॥ ॥ पतिमिले । लज्ज जाती सुत मांय जी ॥ मुजने अंतःकरण थी चीविं । शिष्य करुं हूं
 ११ ॥ ॥ ॥ देवो ॥ १० ॥ इहां रथां मेलो न्हो होये । रहणो प्रवेश जाय जी ॥ तोमन
 १२ ॥ ॥ ॥ पुनर्षि पत्र लिगाय जी ॥ देवो ॥ ११ ॥ प्यार प्रेम सदाइ नी-
 १३ ॥ ॥ ॥ ॥ पर देवे पत्र सुख भोग्या । दाख्यो आप को मनजी

॥ पाप बहुत आयां मरन जी ॥ डाल तीसरी गांप जी ॥ दूजा खण्डकी कही अमोलख
 ॥ अग गुणो विमलाय जी ॥ देवो ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ गुण सुन्दरी पुड शालधी ।
 ॥ २४ ॥ उचार ओं ॥ लाइ निज पर बान्धिया । मूर्ख हाथ सोय ॥ १ ॥ गुत कर
 ॥ २५ ॥ ग्यात पान संभाल ॥ मूर्ख पास करावे ॥ निज निहाल ॥ २ ॥
 ॥ २६ ॥ रत्ना सणा । गणा नगदी धत ॥ अल्प भार बहु मोलका । संग्रह कियो
 ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ तयोशरी ने पत्त लिख । मूर्ख हाथ पठाय ॥ काल गतका निश्चय ।
 ॥ २९ ॥ शालका ठाय ॥ ३ ॥ तुम अज्ञा प्रमाण में । कियो बंदोवस्त सब ॥ पाछो उत्तर
 ॥ ३० ॥ दान गहारे अय ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ कुंवर अभय ब्रुद्ध को भडारी ॥ यह ० ॥
 ॥ ३१ ॥ लाखंत भारी । निज फारज संपदन कारन । कर केर्ना दृशायागी ॥ आं ॥
 ॥ ३२ ॥ ददा जाइ तिज दिन । सदन जी विचारी ॥ आज निशा कुंवरी आ-
 ॥ ३३ ॥ लोका दुयागी ॥ मद ॥ १ ॥ हू पहला जा गहुं निहां अय । करी रुह तैयारी ॥
 ॥ ३४ ॥ ते पहलो लाती । सुन कमी कटु नारी ॥ म ॥ २ ॥ गार्ता खानण ने
 ॥ ३५ ॥ ग्यजो ह्यारी ॥ घोडा बिनमें पाछो आसू । काम छे इणवारी ॥ म ॥ ३ ॥

॥ १५५५ ॥ अज्ञान अज्ञान ॥ अज्ञान अज्ञान ॥ अज्ञान अज्ञान ॥ अज्ञान अज्ञान ॥ अज्ञान अज्ञान ॥

॥ म ॥ ४ ॥ महल में कुँवरी अवसर जोड़ । कीनी तैयारी ॥ गेणो नाणो भया तोवर ।
 च्य श्रय धारी ॥ म ॥ ५ ॥ सरदानी सिरे पाव सडयो तन । धामनी अतिकारी ॥
 च्च दम्ब रज हुइ अश्रपर ॥ कीनी सवारी ॥ म ॥ ५ ॥ गली गुंची गुप्त मार्ग फिरती
 । अल गाम चारी । देवालय पासे लभी रही । मधुरी पुकारी म ॥ ७ ॥ चालो बद्धम
 दान बगीच । प्रगो डच्छासारी ॥ हुकम प्रमाणे आइ ऊभी । नाथजी अवलारी ॥ म ॥ ८ ॥
 नार्ण मदन चूप चाप उठीयो । आयो कुँवरी धारी ॥ रीते घोडे आइ बंठो । बोल्यो न
 लसार्ण ॥ ९ ॥ आगल मदन पाछल कुँवरी । चाल्या आगारी ॥ कुँवर मन रीजावण
 भागण । कुँवरी उचारी ॥ १० ॥ दुहा छंद चोपाइ गुढार्थ । कह छे तेवारी ॥ पहली में
 प्रशाचर प्रुं । बुद्धि देखाडी ॥ ११ ॥ मदन चित्तवे चुप्प रेवणो । इहां छे गुण कारी ॥
 मन रधि । बल्लु उचर न दे ॥ कुँवरी विचारी ॥ म ॥ १२ निशा घोर तमँ दीसे नांही ।
 राग चोर ग्राहारी ॥ न जाणे कोइ नेडो माणस । सुणे बोली यारी ॥ म ॥ १३ ॥
 अन्वर्थ जा कहं राज सचीवने । ककोइ आगारी ॥ तो कोइ लारे आइ पकडले । कर
 ने शुसार्ण ॥ म ॥ १४ ॥ इस जाणी बुद्धवंत कुँवर ण । रखा मून धारी ॥ में मूर्खणी
 कं ॥ १५ ॥ विगर विचारी ॥ म ॥ १५ ॥ नेडो घोडो लेइने पूछे ॥ हुइ जिम

१ ॥ अक्षय्ये सन्नेत्रे अश्वये पायरे ॥ मुजेन जेइ सुरजा गइरे ॥ चिंथी न मिल्या ॥
 २ ॥ जांचा करासात सदन कीरे ॥ आं ॥ करे अचिंत्य उपायरे ॥ मूर्ख
 ३ ॥ जिहां लगण नहीं चाहायरे जो ॥ २ ॥ दिशी विदिशी अवलोक
 ४ ॥ लेइ आयो कुंवरि कनेरे । मुख पर छांट्यो तोयरे ॥ जो
 ५ ॥ प्रग मायध हुइरे । बंठी करत विलापरे ॥ हाय देव किस्वो कंररे । प्रग-
 ६ ॥ किणने धार्यो कुण आवियो रे । एतो मूर्ख सिरदार
 ७ ॥ जे देता नित्य समाचार रे ॥ जो ॥ ५ ॥ हिवे आगल कि-
 ८ ॥ सननी इच्छा सनेम रही रे । हूं गइ पूरी छला-
 ९ ॥ कुंवरिने रोती देखनेरे । सदन बेठो आइ पास रे ॥ मूर्ख पणो भ-
 १० ॥ भरी सास रे ॥ जो ॥ ७ ॥ मूर्खने रोतो देखनेरे । कुंवरिने
 ११ ॥ जिमतू पाडे चीसरे ॥ जो ॥ ८ ॥ ठसका
 १२ ॥ थाया रोजर ॥ थारा सुख थी में सुखी रे । तुम दुःख मुजेन हो
 १३ ॥ किम लाग्यो मुज लाररे ॥ दगा करी
 १४ ॥ ते कहे दगो सगो नहींरे ।

॥ १३ ॥ वृत्तियों अपार रे ॥ में तार कितके नहीं लग्यो रे ॥ मुणों वीत्या समाचार रे जे
 ॥ १४ ॥ तुम मुज कोले दिन उतारे ॥ सीस दीवी घर जाणरे ॥ मुज धर ना पूछो स-
 ॥ १५ ॥ ओ कस्यो कहाइयो मुज हाण रे ॥ जा ॥ १२ ॥ सहू लडवा लग्या मुज थकोरे
 ॥ १६ ॥ पुज मुद्र सिरधार रे ॥ फोइ स्थान टिके नहीरे । जाव तिहां दे कहाडर ॥ जो
 ॥ १७ ॥ कभाथा ने फोडी नहीं रे । ग्यावा दोडी आयेरे ॥ मुफ्त में माल आवे नहीरे ।
 ॥ १८ ॥ जहा थी बयो नी जाय रे ॥ जो ॥ १४ ॥ कूटी कहाड्यो घर बाहिरे रे ॥ में
 ॥ १९ ॥ मन प्यानरे ॥ कालि देधी देवालयरे । सूतो जा एकंत ठाणरे ॥ जो ॥ १५ ॥
 ॥ २० ॥ था नाट आद नहीं जी । जितरे थे आया तिण जागेरे ॥ बोली में थाणी ओल-
 ॥ २१ ॥ न्या मुग अधांगरे ॥ जो ॥ १६ ॥ में जाणयो बुलावा आर्धिया रे । उठ आयो
 तुम ॥ २२ ॥ ॥ तुम दुवेम अंश चख्यो रे । साथ हुयो धर हुछास रे ॥ जो ॥ १७ ॥
 अन्धागंभे मन्दा नही रे । तिण थी आयो इहां चाल रे ॥ तुम बड बड्या ग्यादी छाछ
 ॥ २३ ॥ म नहीं समथ्यो म्याल रे ॥ जो ॥ १८ ॥ तो उचार किस्यो देवूरे । में जाण्यो
 ॥ २४ ॥ अन्धागंभे ॥ महाराय रगो दीठो किस्यो रे ॥ ते तो कयो प्रकाश रे ॥ जो ॥ १९ ॥

॥ तू धी अग दांयने । मदन नी लारे जाय ॥ सु ॥ २ ॥ मध्य बजारे आधीयाजी ।
 लारु बहू मिया जाय ॥ विके जागा पंच खंडनी । मोल घणों न लेव कोय ॥ सु ॥ ३ ॥
 नदन नित्या उभा रहा जी । कुंवरी थी, पूछे एम ॥ कहो तो ए जोगा लेवू । सब बात-
 रो पार नां श्रम ॥ सु ॥ ४ ॥ कुंवरी मुद्रा वी तेहने जी । बेंची जवरीने जाय ॥ चाहीता
 दाम लेऊ करी । बच्या ते जमा कराय ॥ सु ॥ ५ ॥ मोल लीवी तेह जायगाजी ।
 दुःख सहन ते बार ॥ छेली मजले सुंदरी ने । सुखथी वी वेठाय ॥ सु ॥ ६ ॥ जे माल
 वी भगव्यां जी । ते तुर्त दीयो लाय ॥ वास वासी राख्या घणा । जे पोताने आ-
 न जाय ॥ सु ॥ ७ ॥ सवाइ नोकरी दीवी सवने । सहूने पकाते लेय ॥ मधुर वयणे
 लिख दिने । बर्दा लालच अधिको देय ॥ सु ॥ ८ ॥ काम करजो इच्छा जिसो । रह
 जो तम हुकमंग मांय ॥ महारी यात तिण आगलें । किंचित ही करनी नाय ॥ सु ॥
 ९ ॥ मांगन करा पक्षी करी । फिर आया दूजे मजल ॥ वेटक राखीं आपणी । जिहां
 कुंवरी न आव चल ॥ सु ॥ १० ॥ थापण राखी एकम थी जी । लाया सिरे पोशाक ॥
 ११ ॥

॥ ११ ॥

नकाया समा डया जी ॥ राख्या सुनीम झंझार ॥ माल घणो खरीदियो । सहू शोभा
 बर्ग श्रकार ॥ सु ॥ १३ ॥ महिमा फेली शेहर मे । कोइ आया जवैरी कुंवार ॥ छे
 पहटा धनना घर्णा ॥ बली निधा बाज सिरदार ॥ सु ॥ १४ ॥ बहोल कला में सीखीया
 नि रागानी पेछाण ॥ तिण जोणे पुन्य प्रवलेजी जमी चौखी दुकान ॥ सु ॥ १५ ॥
 पहली मद्रा कंगडनी जी । धन कमी नहीं कोय ॥ द्रव्य तिहां सर्व संपजे जी । पोलो
 दास राम माहय ॥ सु ॥ १६ ॥ दुकान थी आइ निज परे जी । दूजी मजलके मांय
 ॥ गट नणा बडा पगहरी । लेवे मूर्ख स्वांग बणाय ॥ सु ॥ १७ ॥ पंचम महाले कुंवरी आगे ।
 बचण क पेट आय ॥ गेलत्यां करे घणी । पोते हंसने तास हँसाय ॥ सु ॥ १८ ॥ भोजन
 पेट घर्णा ने । ते धरे सन्मुख लाय ॥ शक पेहली आरोग ले । पाछे
 पाय पाव नाय ॥ सु ॥ १९ ॥ घडी बोघडी तिहां रही ॥ इम ख्याल करे सहू परे ॥
 रोटी ने नीचा उतरी ते । आछा वक्र ले पेहर ॥ सु ॥ २० ॥ उत्तम भोजन खाय ने
 जी । आट चलाय दुकान ॥ उत्तम ज्ञान की पुस्तकां जी । वेवे कुंवरी ने आन ॥ सु ॥
 २१ ॥ कळ तुमना तुमारे धरे नित्य । पढता ऐसी कितान ॥ तेहवी मिलती लाइदी ।
 ना नदी समज्युं साव ॥ सु ॥ २२ ॥ यों वात भोल पे डालने जी । कुंवरी ने कामे

लगाय ॥ इग सुखे काल अति कर्म । ढाल छट्टी अमोलक गाय ॥ सु ॥ २३ ॥ ॐ ॥
 कुहा ॥ तिण अवसर कोइ वेदाधी । जोहरी माल घट्ट संग ॥ आया ते पयठाण पुर ।
 ज्यत्रमांय धर रंग ॥ १ ॥ मक्र केतू मही पाल ने । नमी निजराणो कीध ॥ सत्कारी
 नृपतेहन । योग्य स्थान तस दीधि ॥ २ ॥ माल घतायो भूपने । सुक्का फल वट्ट तेज ॥
 विविध वरण अदलोकी ने । वृध्दो नृपनो हेज ॥ ३ ॥ दो दाणा नृप छांटीया । पूछे तेह
 नो माल ॥ सवा क्रोड तिण उचर्य । अटल एक ही बोल ॥ ४ ॥ अश्वर्य पाइ राजवी
 । माम जवेरी बुलाय । देशां माल चौकस करी । जे सहू जन टेहराय ॥ ढाल ७ मी ॥
 नाइता गोमा पाडजे ॥ यह ० ॥ दीपती मदन नी पुन्याइ जी ॥ दी ० ॥ मुक्त फळकी सागी
 । मिन । रती नभासांही ॥ आं ॥ सांमंत माथे शाह बुलाया । जवेरी कह वाइ ॥ नृप भे
 । अ । स । थया सहू । मनमें हर्षाइ ॥ दी ॥ १ ॥ मदन अने पुरना सहू जोहरी । दि-
 । दि । ॥ ॥ आया सभामें नम्या नृपने । नम्र अति थाइ ॥ दी ॥ २ ॥ सत्कारी
 सहू ने अतरा । तिहां योग्य थाइ ॥ मोती ताशक धरी तस सन्मुख । ते दोइ मिलाइ
 ॥ दी ॥ ३ ॥ दण सेधी उत्तम जोडी एक । कहाडी दो मुज तांइ ॥ सांचो माल विचा

॥ १ ॥ तर्होज दाना सावा छट्वा
 ॥ २ ॥ उत्तम थी उत्तम ए श्रामी । हम निजरे आह ॥ दी ॥ ६ ॥ जे
 ॥ ३ ॥ मुर्धा हुइ श्रावानी दीनी । कीमत कहे भाइ
 ॥ ४ ॥ के काह जुदाइ ॥ वीथे विज्ञाने जाया
 ॥ ५ ॥ ए दोनू मम सीप तनुज छे । फरक नहीं कांइ
 ॥ ६ ॥ दी ॥ ८ ॥ ए दोनू मम सीप तनुज छे । फरक नहीं कांइ
 ॥ ७ ॥ दी ॥ ९ ॥ मदन जी वेटा मून
 ॥ ८ ॥ विन बाल्यायां उत्तम नरतो । दाने न चतुराइ ॥ १० ॥
 ॥ ९ ॥ इन की मती महू था हे वेगली । पूछां
 ॥ १० ॥ य कोइ नचाइ ॥ किहां थी आया किस्यो
 ॥ ११ ॥ वृद्ध जेरी कहे नरसाइ । प्रदेशी आयाइ ॥
 ॥ १२ ॥ वृद्ध जेरी कहे नरसाइ । प्रदेशी आयाइ ॥
 ॥ १३ ॥ विषणा जम्पाइ ॥ दी ॥ १६ ॥ बुद्धवंत धनवंत इण सम ।
 ॥ १४ ॥ विषणा जम्पाइ ॥ दी ॥ १८ ॥ धराधर
 ॥ १५ ॥ परिधा कीमत दायो । जे तुमें जणाइ ॥
 ॥ १६ ॥ मदन न वीथाइ ॥ कृषी परिधा कीमत दायो । जे तुमें जणाइ ॥
 ॥ १७ ॥ मदन न वीथाइ ॥ कृषी परिधा कीमत दायो । जे तुमें जणाइ ॥

जाणू । भे दन इण सांही ॥ दी ॥ अने वृथने आगे बोलनां । अशातना थाइ ॥ १६
 फरसांधे नंहीज कीजे । ये सुज इच्छाइ ॥ दी ॥ १७ ॥ इत सुणी राय शंकित हुये ।
 भेट्ज दीव्याट ॥ अती अग्रह कर पूछे नरवर । कहो जे जणाइ ॥ दी ॥ १८ ॥ जुदा क
 पाले जुडीं हे बुद्धी । न मोटा छोटाइ ॥ सहू जेवरा कहे कहेजी । खुशी हम सगलाइ
 ॥ दी ॥ १९ ॥ सहू नी रजाले कहे मदन जी । सुज जे सुज्याइ ॥ एक ए मोती छे जी
 अमोलक । दृजा निष्माइ ॥ दी ॥ २० ॥ सुणी रायजी अश्वर्य पाया । ढाल सात गांइ
 ॥ ए ते मनुष्य दीसे करमाती । अमोल ऋषि गाइ ॥ दी ॥ २१ ॥ दुहा ॥ सुणी वाणी
 इम मदनकी । सहू शाह भया उदास । ईर्ष्या लाइ इम कंइ । आपो जमावे खास ॥ १ ॥
 घात कियो थी स्पूं हुये । दो प्रत्यक्ष घनाय ॥ ए अनुन्य ए कोडीनो । कीमत किण गु-
 ण पाय ॥ २ ॥ मदन कहे सान्ची कही । एसात्रिलनी रीत ॥ बालकने सुधारवा । धारे
 नारेली प्रीत ॥ ३ ॥ आज्ञा लेइ आपकी । से प्रकाशी वात ॥ नैलेही कर दाखवुं । सहू
 स्वप्न साक्षान ॥ ४ ॥ निकसे मंती वीदता । फुटसी ए तरकाल ॥ तीजा पडमां रेत
 छे । जांचो सहू कुराल ॥ ५ ॥ ढाल ८ मी ॥ सधुरा अर्धे सायबी । हेरु सगनी ॥ यहा ॥

हके रोजन ॥ जीर्ण परितति आय ॥ क चतुरा सिकली गरा ॥ हक साजन ॥ मदन बुद्धि
 प्रत्यक्ष ॥ आं ॥ १ ॥ अती चतुर सिकली गरा ॥ हेकेसा० ॥ राजा लिया बुलाय ॥ क
 हे इंद्रो इण मोतीने ॥ हेकेसा० ॥ जिम फुटवा नहीं पाय ॥ के ॥ चतु ॥ २ ॥ तो इ-
 नाम देस्युं घणो ॥ हेकेसा० ॥ करिगर हर्पाय ॥ विविध मशाला लगायने ॥ हेकेसा० ॥
 मार उपर नडाय ॥ केच ॥ ३ ॥ चतुराइ कीनी घणी ॥ हे० ॥ पूण संबो तरकाल ॥
 गिकलीगर गुण ऊनयो ॥ हेके ॥ हर्पा तत्र नुयाल ॥ केच ॥ ४ ॥ ले रूपानी थालीमि ॥
 हेकेसा० ॥ जोया पट उघाढ ॥ बालु तृतियों पडमे ॥ हेकेसा० ॥ निकली देखी काहाड
 ॥ के न ॥ ५ ॥ अथर्य पाया सगृजणा ॥ हेकेसा० ॥ नृप कहे शावास ॥ साचा जेवरी
 ग मती ॥ हेकेसा० ॥ सभाजन करे प्रकाश ॥ केच ॥ ६ ॥ राजेश्वर कहे मदनने
 ॥ हे केसा० ॥ अथर्य मोटो एह ॥ रेती किम मोती विपे ॥ हे केसा० ॥ दावो कारण
 ना ॥ केच ॥ ७ ॥ नरसाइ मदन भणे ॥ हे केसा० ॥ अवधरो महाराज ! मुकाफल
 नी उरपती ॥ हे केसा ॥ हावे पांच जगाज ॥ केच ॥ ८ ॥ चक्रवती राजा तणी ॥ हेकेसा ॥
 पल श्री देखी होय ॥ पुन न होवे तेहने ॥ हे केसा ॥ मोती प्रसवे सोय ॥ केच ॥ ९ ॥
 जानियत ज यंशनी ॥ हे केसा ॥ गांठ में मोती थाय ॥ तीजा उत्तम नागनी ॥ हेकेसा ॥

फण भे मोती पाय ॥ ले ॥ १० ॥ मयंगल उत्तम मस्तके ॥ हेकेसा० ॥ मोतीनो भं
 डार ॥ ए चउस्थान किंचित मिले ॥ हेकेसा० ॥ इण हीज जक्त मझार ॥ केच ॥ ११ ॥
 पंचमी जग प्रसिद्ध छे ॥ हेकेसा० ॥ सीप तर्णी पेदास ॥ तिणभे पण जाती धणी ॥
 हेकेसा० ॥ करी मन्य प्रकाश ॥ केच ॥ १२ ॥ हिचे इणमें रेती तणो ॥ हेकेसा० ॥ का-
 रण देउं वताय ॥ स्वांत नक्षेत्त लमती ॥ हेकेसा० ॥ सीप जलवर आय ॥ केच ॥ १३ ॥
 तिण अवसर कोइ पक्षीयो ॥ हेकेसा० ॥ सागर वर उडजाय ॥ घन वूठे तिण उपरे ॥
 हेकेसा० ॥ नीचे पडे रडकाय ॥ केच ॥ १४ ॥ ते झेले कदा सीपडी ॥ हेकेसा० ॥ तेह-
 नो मोती थाय ॥ पक्षी पाँखनी रज ते ॥ हेकेसा० ॥ मोती पडभे रहाय ॥ केच ॥ १५ ॥
 इत्यादी मंजोग थी ॥ हेकेसा० ॥ इणमें रहगइ रेच ॥ हे ए उचम जातीनो ॥ हेकेसा० ॥
 पण संग विगड्या पंत ॥ केच ॥ १६ ॥ वीद्या विन'ए सोभतो ॥ हेकेसा० ॥ वीद्या
 प्रागट्या गुण ॥ गुरु गंस जे विद्या गृह ॥ हेकेसा० ॥ तेहीज जगमें निपुण ॥ केच ॥ १७ ॥
 इण कारण इण सार्तीन ॥ हेकेसा० ॥ में निक्कमो कद्यो नाथ ॥ रूप देखी म रानीये ॥
 हेकेसा० ॥ परर्वा ज गुण जात ॥ केच ॥ १८ ॥ धमा फरीयो सह जेष्ट जन ॥ हेकेसा० ॥

... ए आपकी प्राण ॥ सह के धन्य छे मम अर्णरि ॥ हेकेसा० ॥ परिष्कृत स्वरे पाठकाः

के ॥ १९ ॥ नेनां वीथि पत्त चोगुण ॥ हेकसाठ ॥ नमज कुलेस ॥ अथलाक ॥ पुत्रा ॥ कुं
 दस अति भजा ॥ हेनसाठ ॥ यगमी आंगल अंग ॥ २० ॥ मदन दिष्ट बुद्धि
 करी ॥ हेकसाठ ॥ महेने वडा ये कीथ ॥ भीत्र मंड डाल आठमी ॥ हेकसाठ ॥ कही
 अंगाल सडी थिप ॥ २१ ॥ वृषा ॥ प्रमुक्षि मयच भंगे ॥ अहो श्रेथी सिरदार
 ॥ एक मणी परिक्षा करी ॥ वृषार्ना वरो उचर ॥ २ ॥ असुन ए किण करणे ॥ इ
 मी पसा मी गुण ॥ ने दिने धिध प्रकासीये ॥ अहो जेपर निपुण ॥ २ ॥ मदन कंठ
 माजा भंगी ॥ इ यम गुण बनाय ॥ क्षियणा जो अचर नदी ॥ अट मंजोग जेच थाय
 ॥ ३ ॥ इने स्व पर नीर भग ॥ श्रेय जेय अटंय ॥ कांके जतर पूतन निधी ॥ अथे पुण्य
 मरत ॥ ४ ॥ मणी भुषण मृडी दृवा ॥ मिच्छरि म्हु मंजोग ॥ डेगवो जेपारी ने ॥
 ॥ ५ ॥ म्हु गुण भंग ॥ ५ ॥ डाल २, मी ॥ भयविज भग गुण ॥ यह ॥ राजाजी ने
 मदन जेरी ॥ म्हुयारि आनी जेपरी हो ॥ पुण्यना कळ भीटा ॥ चट्टार मदन ने
 जेथी ॥ ए कीने तान नपांच हो ॥ पुण्य ना कळ भीटा ॥ ६ ॥ इस करणां शरद पू
 नेर ॥ ७ ॥ ७२ म्हु पंके जेपरी नांड हो ॥ पुण्य ॥ मुका कळ गुण देवाडो ॥ तुम मन-
 नी जेके कावणी हो ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ म्हुने जे वम्हु म्हाणु ॥ कयो जे मज जमानु ॥

॥ पुण्य ॥ कहे जोहरी आजरी राते । मोती गुण थंसी विख्यते हो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥
 तोवा ना पसा मंगाइ । देवो चावणी उंची मां वीछाइ हो ॥ पुण्य ॥ रज मेल कलंक
 हरिजे । बरोबर शुद्ध जाय पाथरीजे हो ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ सहू मध्ये रंजत घट मेलो ।
 सच्छ मूघाट उदक भरेलो हो ॥ पुण्य ॥ इम सामग्री जमवावो । इष्ट पूरसी आपणो
 उमवावो हो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ जेजे मदन बताइ । राय ते ते सहू कराइ हो ॥ पुण्य ॥
 तब अस्त थया दिन राया ॥ नृप मदन ना मन उमाया हो ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ दोनो आया
 आकाशी मांड । सहू दरवजा बंध कराइ हो ॥ पुण्य ॥ सुखासन त्या चिछाइ ॥ दोनो
 आनंद घर निसीजाइ हो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ बुद्धी गुण वृथी मांड्यो ख्यालो । जेहथी
 प्रमाद को होवे टालो हो ॥ पुण्य ॥ पूनम पूरा चांद प्रकास्या । भूमी व्याप्त तैम सहू
 न्हास्या हो ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ जिम ३ शशी उंचो आवे ॥ तिम २ सौम्य प्रकाश बढावे
 हो ॥ पुण्य ॥ क्रांतीजिभी मोती पे आइ । दोन्यारी एक जोती थाइ हो ॥ पुण्य ॥ ९ ॥
 तब मोती बधतो देखावे । जिम २ इन्द्र उभज आवे हो ॥ पुण्य ॥ मध्य अंतलिखे जा
 आवे । मोती कथ

वायु फलिया हो ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ तव मदन जा अवसर जाइ । तव यडा सरका ल
 धःड हो ॥ पुण्य ॥ तव मूल रूप मोती थइयो । नृप मन अश्रय भइयो हो ॥ पुण्य ॥
 १२ ॥ नव जेवरी कहे राय तांइ । रात्र बहू गइ निद्रा आइ हो ॥ पुण्य ॥ दोनो सूता
 तिण टामो । मुंन निद्रा आइ जामो हो ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ निशा चितिकृत थाइ ।
 दिन कर तव प्रगटाढ हो ॥ पुण्य ॥ जायत हुवा ते जामो ॥ मदन अने नरश्यामो हो
 ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ जांचे चांदणी मांड । सब पीली २ देखाइ हो ॥ पुण्य ॥ नरवर
 अश्रय पाया । ताम्र पत्र लिया करम यां हो ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ उत्तम कंचन जोइ ।
 अति हियडे हर्षित होइ हो ॥ पुण्य ॥ मदन कहे नरमांड । एतो एकही गुण देखाइ
 हो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ एहवा गुण छे एमा सोला ॥ ते किम जाणे नर भोला हो ॥
 पुण्य ॥ भे मीळ्यो गुरु पासे । ते आप आगे करुं प्रकाशे हो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ पांचो
 इन्दि ना रांग गमांचे । स्थावर जंगम विप न्हशावे ॥ हो पुण्य ॥ पांचो स्थावर उपद्रव
 टाल ॥ श्रुती जीवनां जोर न चाले हो ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ स्त्री शत्रु मोहवावे । सहू इष्ट
 कार्य मित्त थांचे हो ॥ पुण्य ॥ ते कारण असौलक एह । बहू पुण्य संचित जन लेहू हो
 ॥ पुण्य ॥ १० ॥ इण कारण इने गुत राख्यो । भरी सभाने भाव न भाख्यो हो ॥

पुण्य ॥ एतन् एव धनं संसारी जे । ऐ भेदन किण ने दीजे हो ॥ पुण्य ॥ २० ॥ कीर्तित
 भाग महारांनी दीजे ॥ दही नेह रहे सो कीजे हो ॥ पुण्य ॥ पण इण ने मर्ती गमा
 वा । इच्छेव ० अगमा पायां हो ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ ए इज खन्डे सुखदाइ ॥ डाल नव
 कीर्तित ॥ २२ ॥ गाड हो ॥ पुण्य ॥ देखो बुद्धि मदन जी करी । आंग पुण्याड फेले घणे
 कीर्तित ॥ २३ ॥ १०५ ॥ २४ ॥ ० ॥ दुहा ॥ मदन जेरी ले कखा ॥ चन्द्र कान्तका गुण ॥
 न ॥ इ पाया राव जी । जाण्या मदन निपुण ॥ १ ॥ मंत्री ऐसा चाइये । न्हारा राज
 मन्तार ॥ ना ॥ १९.१ मुज कांड कामशी । फीकर न गहे लगार ॥ २ ॥ इम निश्चय मनमें
 ॥ ३ ॥ वर्षा । वर्षा अर्षा प्रांत ॥ सीक दीवी मदन भणी ॥ वर्सीया ते नृपचित ॥ ३ ॥
 पुण्या शिष्य आरजा । छ तुम थी यहु काम ॥ राते जे कोइ दुःख हुयो । तेक्षमजो गुण धाम
 ॥ ४ ॥ नमन वर्गिन मदन जी । पहोता निज दुकान ॥ खुशी हुवा मन में घणा । जे
 कर्त्ता निज जयान ॥ ५ ॥ डाल १० मी ॥ तेंहीर याद प्रभू आवरे वर्दमें ॥ यह ॥ मदन
 इतर ती पुण्य का दर्शया । निर्मल बुद्धि मे पदाः निरर्षिया ॥ ओं ॥ पूरी भंडेले नृप

नृपती गोम नृपि कित् कर्मगया ॥ म ॥ ४ ॥ देव सभा सम ते रही दीपी । राज बल
 तज जो अंगि अय दर्शया ॥ म ॥ ५ ॥ मोटा सन्मान थी मदन बुलाया । सामा भे-
 न्या हय धर्मगया ॥ म ॥ ६ ॥ टाट पाट जाइ लाया जर्वेरी तांड । ते पण आया हर्ष
 दरभग्या ॥ म ॥ ७ ॥ नृसादि सहू आदर दीधी । नत्र वयणे अति सत्कारीया ॥ म ॥
 ८ ॥ पातन पाम नृप मदन बंठवे । न बंठे जर्वेरी उभा नसी टरीया ॥ म ॥ ९ ॥
 गय कह मदार नीन भा प्रयानो । पण इण सम नही एक अवतरीया ॥ म ॥ १० ॥
 तिण कारण न नीन भा उपर । प्रथन पदका दीधा जरीया ॥ म ॥ ११ ॥ मोहर स्मरपी
 उपर बंठया । राय जो दृष्टम में मदन अनुसरीया ॥ म ॥ १२ ॥ मदन कहे हूं नहीं पद-
 जागा । पण दिव किम जांचे ना उचरीया ॥ म ॥ १३ ॥ जैसा बढाया वैसाही चढाया ।
 निमाल्यगी नय नृप गुण दर्शया ॥ म ॥ १४ ॥ नमन करी वेठा संचीव आसने । सज-
 न नीन ना दृष्टय दर्शया ॥ म ॥ १५ ॥ हर्षा नन्दकी बटी बधाइ । दुशमण नो हृदय
 आग रीग म ॥ म ॥ १६ ॥ मुक्ता फल ना वैपारी बुलाया । पास बंठया नृप प्रेम
 भगा धर्मग्या ॥ म ॥ १७ ॥ कहा मांती नी कीमल भाइ । नीती बंत तव इस उचरी-

॥ १८ ॥ एतन्नी बीसत सध शोड दीनार । शिष्य दीरावो अत्र जावां हम घ-
 रीया ॥ न ॥ १९ ॥ साध कहे कृष्ण मोतीयोकांड लो । ते कहे फूटो गयो तंतो कचरी-
 वा ॥ म ॥ ० ॥ मल्लंत सतापी जोइ साय हर्ष्या । मदन न कहे देवा ओ जोम
 चरीया ॥ म ॥ २१ ॥ तप सचिव कहे सुजो विदेशी भाइ । अमुल्य मोतीना न जाय
 दाम मर्या ॥ म ॥ २२ ॥ थं निकल्या छो विदेशे कमावा । घरको धन तो न जावे
 परदा ॥ २३ ॥ कृष्ण जे गोती हम लीया फिर । तिणरी ही बीमत देस्या हम भे-
 रदा ॥ म ॥ २४ ॥ पांच प्रोड सोनेया दीलाया । दाण माफ रुद्र तेहना करीया
 ॥ म ॥ २५ ॥ मार्ग गावण मरन सहू दीना । अति हर्ष गया ते निल धरीया ॥ म ॥
 २६ ॥ २७ ॥ दामर्भा असोल अपि गाइ । दृण गुणै मदन ना यश परसरीया ॥ म ॥ २७ ॥
 ॥ दुहा ॥ गुण पमाय मदन ली । पाया निर्मल बुद्ध ॥ राजा प्रजा मोहीया ॥ कीर्ती
 पमर्भा अत्र ॥ १ ॥ पुरपयटाज ना नुप नो । पाया पद प्रधान ॥ प्रिती बर्धा घणी राय
 की । वन मदन गुणगान ॥ २ ॥ क्षिण अत्र खावे गर्ही । करे एकान सहवास ॥ स-

१ ॥ आधा आम पधारी पुज्य ॥ यह० ॥ सुण जो होणहार गत भाइ । ते अचिंत्य
 गुजर आइ ॥ आं ॥ तिग अवसर वसंत ऋतु आइ । वन वाडी फुलाइ ॥ कंद्रप मिल
 अट्याद वधावा । वन क्रिडाने जाइ ॥ सुण ॥ १ ॥ राजा राणी सामंत सहेली और
 पुर का नर नारी ॥ हिल मिल आया वागके मांही । करे भोजन तैयारी ॥ सुण ॥ २ ॥
 गान्या गंटा बाटी वाफला । धृते पूर्ण भरीया ॥ तेज मशाले डाल झोलकी । चतुराइ
 मयूं करीया ॥ सुण ॥ ३ ॥ और कंइ पका नज लाया । जवेरी झारा वणाया ॥ गटकाइ
 लाटा भर २ ने ॥ कंफ मगनज थाया ॥ सुण ॥ ४ ॥ रंग गुलाल उडाइ गेरी । मिल
 बगंबर्गीका माथे ॥ चंग मृदंग झालरी बाजे । गावे धमाल लटकाते ॥ सुण ॥ ५ ॥ इम
 रमंता नशाज उतर्यो । क्षुधा तत्र प्रगटाणी ॥ माल मशाला जीम्या सहु मिल । मन
 मान्यः उरगार्णा ॥ सुण ॥ ६ ॥ लेइ तंबोल बेठा एक स्थाने । मिल सहेली परवरीया ॥
 वद्ध विनाद की करी मखरी । मधुर गायन उच्चरीया ॥ सु ॥ ७ ॥ मक्र केतू भूप केतू-
 र्मातगर्णा । रूप सुन्दरी वाइ । रूपे रंभा दीठा अचंभा ॥ सुर नर ने उपजाइ ॥ सु ॥
 ८ ॥ मुकमाल वाला मोहन माला । सहेली संग संचरीया ॥ नाचे गावे नवरंगे । हेत

दिवागे भगिषा ॥ १ ॥ १ ॥ सोहेल्या शिचपी रायजी पुती । अदर्श थड ते वारो ॥ स-
 देल्या गही देखंची कुंरी । शिमस्य पाइ अपारो ॥ सु ॥ १० ॥ चाइजी २ सह पुकारे ।
 उरार नही १ पु पापो । आस पास सह टुंटी जागा । तो पण नहीं देखायो ॥ सु ॥ ११ ॥
 परराद नथ सह सोहेली । हाहा कर नचायो ॥ दोडो २ धाइ किहां गड । कंडक रुदन
 कराया ॥ गु ॥ १२ ॥ के तुमति राणी आइ दोडी । आतुरी आइ पूछे ॥ किहां गड
 ॥ १३ ॥ प्यारी । रोवानो कारण सूं छे ॥ सु ॥ १२ ॥ हम सह मिल इहां खेलती ।
 ॥ १४ ॥ दुमी पाइ ॥ अदर्श हो गइ । एकाकी न देखाइ ॥ सु ॥ १४ ॥ नजांण
 ॥ १५ ॥ कां आकारा उडाइ ॥ गइ होवे तो ठाम वताचां । अथर्य येही आइ
 ॥ १६ ॥ प्यराइ मुरछाइ राणी । दास्या भागी जाइ ॥ अर्ज करी राजाजी अ-
 गळ । तिहां अन्थ निपउयाइ ॥ सु ॥ १६ ॥ रंगमें भंगथयो तिण अदस्तर । सह दोडी
 तिहां जाइ ॥ किहां गइ धाइ पतोन पाइ । सह रसा प्यराइ ॥ सु ॥ १७ ॥ गुल प्रसि-
 द गोया सह स्यागक । प्राग जंगल के मांड ॥ स्वार प्यादा पणा दोईयें । मिल्की
 नहीं दिण जाइ ॥ गु ॥ १८ ॥ आन रो प्याक ॥ सा ॥ १८ ॥

३ ॥ में जाणतां बहू तज्जन महारं । महारं कमी नहीं
 ४ ॥ वरुण पड्या सदुना गुण जाण्या । मतलधी महूनी मगाड हो ॥ उत ॥ ४ ॥
 ५ ॥ नप वयण सुर्णाने । सभा सहू अकलाइ हो ॥ निजथी काम न होतो देवी ।
 ६ ॥ गुढा गुढाक हो ॥ उत ॥ ५ ॥ तुम प्रकामी, तुम गुण वंता । तुम छो नृपने
 ७ ॥ तुमने नृपने प्रिती घणेरी ॥ तुम जागीरी पाइ हो ॥ ६ ॥ इम कर
 ८ ॥ वक्त विहाणी । तव ल्युना मंवी अकुलाइ हो ॥ इपां लाइ मदननं उपर । दावी
 ९ ॥ मुज टकुराइ हो ॥ उत ॥ ७ ॥ चिते इणने दुःखमें न्हाखु । राय राख्यो छे फुलाइ
 १० ॥ मुज थी एह सरोड घणी करे । पण अय धासी सीथाइ हो ॥ उत ॥ ८ ॥ उठ
 ११ ॥ महू थी अपणी समांमें । मदन जौरी सवाइ हो ॥ बलमें पूरा काम में सुरा । मुख्य
 १२ ॥ प्रथान कहाइ हो ॥ उत ॥ ९ ॥ ए बुद्ध वंता पत्तो लगासी । निथय लांसी बाइ हो ॥
 १३ ॥ यहाँ छे इण काम ने जोगा । जावे तो काम थाइ हो ॥ उत ॥ १० ॥ इम मुणी मदन
 १४ ॥ नी समज्या । ए घेल्या इर्य भराइ हो ॥ मुज ने दुःखमें न्हाख्या । चावे । उंचा एम
 १५ ॥ पण आपने तो सीधी लेणी । काम जिन थी सिख थाइ

ममन्यः मनमें । को जेवरीनी इपाइ हो ॥ परदेश भज दुःख म न्योखयो । पंग धन्य जयरी
नाइ हो ॥ उच ॥ १३ ॥ नामही लेता तत्वधिण उगा थया । डरन जरा लागाइहो ॥
इ बुद्ध चंता काम सिद्ध करसी । जोइ ए आगे सी थाइ हो ॥ उ ॥ १४ ॥ मुजरी कर्म
को मदनजी । आसी दो आसाइ हो ॥ थोडा दिनमें कुंघरी खोदी । लाइ वैसू तुम
नाइ हो ॥ उच ॥ १५ ॥ नरपत भाये तुम पर देखी । इहां आइ ने रखाइहो ॥ गहुका
रन ता गम इच्छक । रजा किस देवाइ हो ॥ उच ॥ १६ ॥ माता पित्त पण दूरा तु-
म थी । मांथ छे गटलाइ हो ॥ एकली छोडी किस जयाय । विचारीं गन मांड हो
॥ उच ॥ १७ ॥ नमन करीने मदनजी बोले । सटु नी छे कृपाइ हो ॥ मुजंन पैसे काम
मायाया । निश्चय थी ते थाइ हो ॥ उच ॥ १८ ॥ आय सटु के आसिखा-
द । अन मुज पुन्य सहाइहो ॥ तिणथी दुःख जरा नहीं थासे । मुख भंकट विरलाइ हो
॥ उच ॥ १९ ॥ इम सुणी राजाजी हर्षाइ । कहं धन्य २ तुम तांइ हो । महारी सभामें
नमना मंडंठा । प्रत्यक्ष गुण दीटाइ हो ॥ उच ॥ २० ॥ शिघ्र जायो बाद ले आवो । छे
प्रभाश सहाइ हो ॥ धार्यो कार्य सिद्ध तुम थासी । मुज मन इम दरशाइ हो ॥ उच ॥
२१ ॥ तुम गुणी हर्षाया मदनजी । टाल छावश सांइहो ॥ पुण्य वंतने सटु काम सुइभ ॥

नापि अमोल्य गाई हो ॥ उत्तम ॥ २ ॥ ० ॥ दुहा ॥ राजा लेइ नृपात तणी । करी लुली प्र-
 णाम ॥ बहु परियारं परियर्या । आया हाँटे ताम ॥ १ ॥ भोलाधे मूनीमेने । राखजो पूरी संभाल ॥
 जोगा जोग विचारने । लेजो देजो माल ॥ २ ॥ हूं राजानी राजा थकी । जांबूहं परदेश
 ॥ पुढी लास्यू रायनी । करी चौकस धरी रेश ॥ ३ ॥ मुनीम कहे अश्वर्य करी । एतो दु-
 वार काम ॥ पुढी पल साहस करी । पूर्ण करजो श्राम ॥ ४ ॥ फिर न कीजो पाछली
 । सयाइ जोजो आय ॥ हाँटे बंदोवरत सहू करी । फिर निज सदेन जाय ॥ ५ ॥ ढाल
 ॥ ३ मी ॥ उम्रसेणकी लली ॥ यह ॥ सुणो सभा चित लाय । मदन कुँवरी ने इम सम-
 जाय ॥ आं ॥ आया हवेली निज औरा मांया ॥ मूर्खको तब रूप बणाय ॥ सुणो ॥ १ ॥
 फटी चिंदी का लीरा लटकाय । साथे बांधी बाल विवराय ॥ सुणो ॥ २ ॥ एक बांय
 फाटी एक मूल नाय । फाटी अंगरखी घाली तन माय ॥ सुणो ॥ ३ ॥ ज्युनी फाटी
 दोषी लीबी पर । सरिरे लगायो धूल राख केर ॥ सुणो ॥ ४ ॥ इत्यादी भेष सज
 दरपण जोय । श्रृंगार गाहे खामी नहीं कोय ॥ सुणो ॥ ५ ॥ शिष्य चड आया पांचमे

एक आयो भुज मग को आत ॥ सु ॥ ८ ॥ तिण पूढया इहा तू आया कम । एक
 घर रहे । नुज मगरेन मग ॥ सु ॥ ९ ॥ भं कथां महारा तात दीनां भिकाल । रीस
 चाट इहां आट । राई मुशो माल ॥ सु ॥ १० ॥ एक राज कन्या पांस रणो छे नोकर ।
 बोव्या पग अट नन आपे पटभर ॥ सु ॥ ११ ॥ फिर ते मुजसे कहं थायरे चियेग ।
 मान तात थायग कर घणोसोंग ॥ सु ॥ १२ ॥ एक यांर सिणाथी तं भिल जरुंर जाय
 । थोडीक मानानम जेपने थाय ॥ सु ॥ १३ ॥ भं कथो पूढस्युं हूं मालकणीने जाय ।
 न हुकम नेवगी नो मिलस्युं हूं आय ॥ सु ॥ १४ ॥ तिहां गही दोडी आयो तुमार
 पाय । आपनी जे इच्छा ते कीजे प्रकाश ॥ सु ॥ १५ ॥ कहे तो हूं जाइ भिलु कुटंब
 न थाय । थोडो माल गिहां गही भिले पाछो आय ॥ सु ॥ १६ ॥ इस सुण कुंनरी ने
 नण आय नीर । एक तीरी भंधो मुज छोड जाये तीर ॥ सु ॥ १७ ॥ महारी उमम
 विम परी होगी पन । कर्म बण्डालणी भं गिहां पाडं येस ॥ सु ॥ १८ ॥ मूर्ध नि-
 थाम नाली आश्रु नेणं त्याय । सोमन ला कहे पाछो आस्युं इण टाय ॥ सु ॥ १९ ॥
 नगी कर भिल पाछो आयजो सही । महारी घात कियेने केवणी नही ॥ सु ॥ २० ॥
 नही ननं पाव कोइ आस्युं पाछो सही ॥ पचन वेडने चाल्या मचन जी तही ॥ सु ॥

२१ ॥ नीचे आइ महु दाम दामा न ॥ विश्रामा कह एक धारा महारा दाय ॥
 सु ॥ २२ ॥ पोंडा दिन काज हूं तो जाबूं प्रदेश । बंदावमन पाटयो राखजो विंगोपं ॥
 सु ॥ २३ ॥ बाहीर कोइ तरह जाणे नहीं पाय । घर मांह अन्य नहीं आवे चलाय ॥
 सु ॥ २४ ॥ गहारी कोइ बात जगा जो कधी मत । हुकम भें रहजो दुःख न धर चिन
 ॥ सु ॥ २५ ॥ छे महाना की पहला की नौकरी चुकाय । नीती सर रखां देख्यं इनाम
 हूं आय ॥ सु ॥ २६ ॥ इम पुक्त बंदोवेस्त कीनो मदन ॥ शुभ महानं चाल्य छोड सुंदन
 ॥ सु ॥ २७ ॥ हलमा भार को लियो द्रव्य घणों लार ॥ जिम सह सुख रहे विदेश
 मझार ॥ सु ॥ २८ ॥ डाल तयोदश अमोल्य ऋषि कहें । पुण्य पसाय जीव मध
 सुख लहे ॥ सुगो ॥ २९ ॥ ७ द्वितीय खण्ड सांगंम हरीगीत छंद ॥ दूजे खंड श्री पुं
 पतिनी । करामांत कन्या हरी ॥ पुर पयठाणे जेवरी होड । मुक्ताफळ परिक्षा करी ॥
 पयठाण पुर राजाकी कन्या सोधवा वीडो गरी ॥ चालीया आंग जेवरी । अमोल गती धड
 चरी ॥ २ ॥ परम पुत्र श्री कहान जी ऋषि जी । महाराज के सत्प्रदाय के बाल ब्रह्मा
 चारी सुनी श्री अमोल ऋषि जी रचित पुण्य प्रकाश मदन कुंवर चरित्रस्य द्वितीय

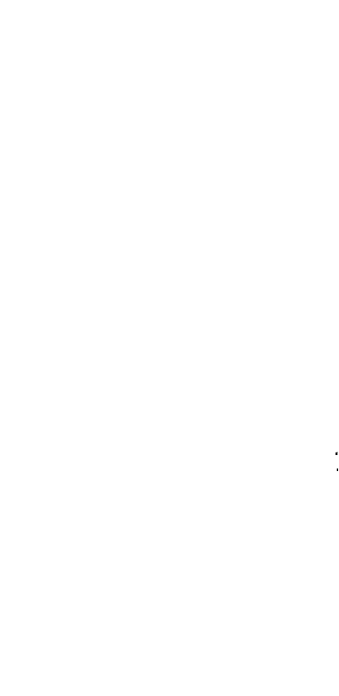
कहुँ तितु खन्द उच्चार ॥ १ ॥ मदन चरी छे मनहरी । अधिकाधिक सवाद ॥ ते
 मुर्गायो श्रोता गर्णो । छांडी सहू विखवाद ॥ २ ॥ सत्य बडो संसारमें । आरधि
 पुण्यबन ॥ प्राणति हंटे नहीं । तस होवे सहू कंत ॥ ३ ॥ पुर पगठाण थी मदन जी।
 करी सहू बंदोवस्त ॥ चाल्या आगे भीदेश में । पुण्य महूर्त परसस्त ॥ ४ ॥ आय ग्राम
 ने बाहीरे । सिद्ध करण ने काज ॥ वाणिक वेश छिपाइयो । बाया जोगी महाराज ॥ ५ ॥
 भगवा बन्न पहरीया । गले रुद्राक्ष की माल ॥ अन्न भभूती औपती । काप्या सिर का
 बाल ॥ ६ ॥ झोली घाली बगल में । कर में सांटी सहाय ॥ कम्बल खन्धे लटकती ।
 शिर शिव तिलक लगाय ॥ ७ ॥ दिन आडंबर शांत चित । फिरे भूमंडल मांय ॥ ग्रामा
 रण्य शिखरी गीरी । हुंढता सहूजाय ॥ ८ ॥ साधू रूपथी तेहने । हटकी न सके कोय ॥
 बात घर्णा हाथे लग । आदर सहू जगे हांय ॥ ९ ॥ ढाल ? ली ॥ जंबू द्वीपरे भर्त
 बखारणथिरे ॥ यह ॥ मदन कुंवर जी बुद्धि आंगला जी ॥ कुंवरी सोदण काम ॥ जोगी
 रूप हो पृथवी उछेवाता जी । रहता शुभ जोइ ठाम ॥ मदन ॥ ? ॥ बहू पुर बहू
 स्थान चाकश घणी करे जी । किहांइ पता नहीं पाय ॥ तो पण साहस रति नहीं खन्डियो

३० ॥ आग आगे भी आय ॥ ३ ॥ आगल जाना ते मार्ग भूलीया जी । पडया
 प.पार भे आय ॥ पन्थ दिनाही ते विशानुसार थी जी ॥ जोता पन्थ क्रमाय ॥ म ॥
 ३ ॥ पहाड खाड तिहा मोटा आर्षिया जी । हुम दट मर्हिलि सर्व ॥ कुश कौटाने
 निशण कर्णर ही । लागे मन तिश् पर्व ॥ म ॥ ४ ॥ उतंग चडाने ते नीचा आवता
 जी ॥ ५ ॥ गांग गांग गांग ॥ दनेचर नेचरे शुद्धी जीयडा जी । बहुला ब्रष्टी जी आय
 ॥ म ॥ ६ ॥ आगल पोगान वन रलीया मणो जी । सुन्दर वृक्ष उतंग ॥ ताल तमाल
 व आय ॥ ७ ॥ वाजा । गडिम लिखू सू चंग ॥ म ॥ ६ ॥ रायण केला सेतूत ने आम
 लीला । गृह भगिवा फल फूल ॥ गहरी सुखदा शीतल छांयडी जी । लागे मन अनुकुल
 ॥ म ॥ ८ ॥ पराजडा छे पंच रंग पहाणमे जी । केइ आसण आकार ॥ मध्य पुष्करणी
 याथा सोभती जी । मयराणा भे ते सार ॥ म ॥ ९ ॥ निर्मळ नीर. स्फटिक समजिहा
 भयो जी । कमोदनी सो फेर ॥ मध्य कमल पट्ट पद्य ने पुंडरी का जी । बहू रंग दीपे छे
 लेदर ॥ म ॥ १० ॥ साता फारी टाम ते जाण न जी । दंड कमंडल टाय ॥ धाक उता-
 रण लिहा मश्वल किणो श्री । जले ले कश्चित् आय ॥ म ॥ १० ॥

चित्त धरणा हो ॥ श्रो ॥ ४ ॥ आप जैसे असंगी देखके । पाया में आणंद ॥ गुरु जी
 मुज ऐसे चार्हिये । सदा सुखदाइ सम्यन्ध हो ॥ श्रो ॥ ५ ॥ जोगी कहे हमतो नहीं
 रखते । चेला मेला कांइ ॥ और जोगी हे वहीत जक्त में । करना गुरु तू जोड़ हो ॥
 श्रो ॥ ६ ॥ मदन कहे सामे आइ गंगा । छोड़ दूर कोण जावै ॥ चेला तो गुण देस के
 कर्णा । मठ देखण मन चावे हो ॥ श्रो ॥ ७ ॥ एक दो दिन सेवा कर के । कहोगे
 तो फिरजास्युं ॥ पुण्य जोग मिल्यो संत समागम । मूकथो जाय न महास्युं हो ॥ श्रो ॥ ८ ॥
 जल कुम्भ ए मुज ने आवी । मठ लगे पहोचावुं ॥ सहारे सामे आप उटावो । में तो
 घणो शरमावु जी ॥ श्रो ॥ ९ ॥ बल जोरी घट लियो छोडाइ । करी घणी नरमांड ॥
 जोगी देख के अश्रय पाया । चिते करणो कांइ हो ॥ श्रो ॥ १० ॥ यो बाल ने बली इके
 ला । करेगा क्या उत्पातो ॥ राते इसका मन समजा के । कल करुंगा जातो हो
 ॥ श्रो ॥ ११ ॥ महा विपम झाडी में चाल्या । मोठा शैल मझारे ॥ आगे पांछ फिरता
 आया । एक गुफा ने द्वारे हो ॥ श्रो ॥ १२ ॥ जोगी आगल साहे पेठो । मदन जी तस
 लांग ॥ पंक्तीया थी नीचा उत्तर्या । महान्ध कार मझारे हो ॥ श्रो ॥ १३ ॥ अन्ध गुफा
 में आगे चाल्या । थोडी दूर जातां ॥ प्रकाश देख्यो चीगान आयो । सुन्धर सदन तेज

॥ २ ॥ बाल धाटान चूरमा । कथा तदा तयार ॥ घृत पुरित सजा साजता । दखा कर
 विचार ॥ ३ ॥ दो हमतो प्रत्यक्ष छां । करवा भोजन भोग ॥ किम निपाइ तीन की ।
 देखूं ए संयोग ॥ ४ ॥ तजानि देख्या विना । जायत होणों नाय ॥ इस निश्चय कर सो
 रखा । जो वो तीजो कुण आय ॥ ५ ॥ ढाल ३ जी ॥ आउखो दूटा ने सान्धो को न्हारे
 ॥ यह ॥ मुक्त तयार हुयां थकारे । जोगी मदनने जगायरे ॥ उठरे भोजन करी लहरे ।
 सरल सावे बतलायरे ॥ १ ॥ पत्तो लागो कुंवरी तणारे ॥ आं ॥ मदन मन हर्षायरे ॥
 उठायो उठे न्हारे । रघो नदि घुरायरे ॥ पत्तो ॥ २ ॥ उठाइ घेठो करेरे । तेतो पडर
 जायं ॥ बड २ करे जोगी मनथारे । पत्तो वारिद्रि देवायरे ॥ पत्तो ॥ ३ ॥ मांथा
 फोड इण थी क्रियारे । कांइ न निकस सी साररे ॥ जड मुंड ए कोइ जंगलीरे । उठसी
 मनथी कांइ वाररे ॥ पत्तो ॥ ४ ॥ भोजन शीतल क्यों कररे । लेवूं शिष था भोगं ॥
 उगयो ते मूकी देउरे । इण पर कर मन्योगरे ॥ पत्तो ॥ ४ ॥ उठी गयो गुफा विपेरे ।
 जेवि मदन द्रष्ट पसाररे ॥ गुफा माहें थी सुणावीयोरे । जाणे रोवे कांइ नाररे ॥ पत्तो ॥
 ६ ॥ अरे दुष्ट मुज छीवि मतीरे । क्यों लाग्यो म्हारे लाररे ॥ प्राण लवण इच्छा दिखेरे
 ॥ नहीं करूं तुज संग प्याररे ॥ पत्तो ॥ ७ ॥ दूर रहे म्हारा थकीरे । जो जरा म्हारी

चार ॥ जोगी कंठ सं मनीरे । तुज खुशी करूं कोइ वारें ॥ पत्तो ॥ १८ ॥ पुनपि
 मन्दा गुहा चियें । सिद्धा मजबूत लगायें ॥ विचार कंइ करता थकारे । अहार पेट
 भरवायें ॥ पत्ता ॥ १९ ॥ बच्यो अहार पातल विपेरे । मंली दियो गुडाले ॥ जाणे
 ग उठ वायें । सदन पास ते डाले ॥ पत्तो ॥ २० ॥ विद्याके प्रभावसरें । उड गयो
 जोगा अरायें । वायसा खन्ड की तीसरीरे ॥ ढाल अमोल प्रकाशे ॥ पत्तो ॥ २१ ॥ ०
 बुद्धा ॥ जोगी । सदनतरे । मदन हुवा साधन ॥ हर्षित चित में चितवे । हुगो
 धारा प्रमाण ॥ जहने जोया नीकल्यो । ते कुँवरी इण ठाम ॥ हिचे लेइने चालिये
 । तरे पानान गाम ॥ २ ॥ श्रुया पण लागी अछे । छे ग भुक्त तैयर ॥ अन्न तणो
 आदर करु । मुक्तन यह श्रंकार ॥ ३ ॥ जीमी ने लस हुइ । कुँवरी लेवा काम ॥ आया
 गमान जरण । मिलपट नेडा जाम ॥ ४ ॥ लंवा कर करवा लग्या । मत २ शब्द सुणाय
 ॥ चमत्कार पाछे लियो । जोता को न जणाय ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ चार पंहेर को
 सदन होत थाल ॥ यह ॥ फिर तिहां छातथी बोलीयोरे लाल । भले पधार्या मदेने
 शब्द । जण ॥ मार्ग जोतां तुम तणोरे लाल । वील्या घणा दिनेश हो ॥ जंवेरी ॥ १ ॥
 काज विचान काजीयोरे लाल ॥ आं ॥ देखी पहलां निज जोर हो । जंवेरी ॥ तो सगला



जाय हो ॥ ज ॥ असुरत्त काय भयार लाल । कहे चोरी फंसी होय हो ॥ ज ॥ का ॥ ११ ॥
 जाणं नहीं तं मुज भणीरं लाल । आयो लेवा माल हो ॥ ज ॥ मार मारी मुजने घणीरं लाल
 में जाग्या आया काल हो ॥ ज ॥ का ॥ १२ ॥ विनवणी कीनी घणीरं लाल ।
 नहीं आइ नम पीरं हो ॥ ज ॥ ततक्षिण विद्या प्रभावधीरं लाल । मुज ने वणायो कीरे हो ॥ ज ॥
 ॥ १३ ॥ १३ ॥ मंत्र थकी मुज बान्धीयोरे लाल । न जवाय बन्ही उड्य हो ॥ ज ॥ फिर आइ केहू
 डगं ल ल ॥ ध्यान तुमारो अभंग हो ॥ ज ॥ का ॥ १४ ॥ मदन आसी मुज छो डसीरं लाल ।
 बग कोट दाय उपाय हो ॥ ज ॥ आज पुण्य प्रभाव धीरं लाल । तुम भेटया मुज आ-
 य हो ज ॥ का ॥ १५ ॥ ना कछो इण कारणे रे लाल । रखो उलजो इण ठाम
 हा ॥ ज ॥ छोडन हार और को नहीं रे लाल । कुण करे सवला काम हो ॥ ज ॥ का ॥
 ॥ १६ ॥ जागी रूपे ढांगी छेरे लाल । निर्दय हृदय कठोर हो ॥ ज ॥ रीयसायो बुरा-
 धर भगवंतान् । छे म पफो चोर हो ॥ ज ॥ का ॥ १७ ॥ लंपटी नारी तणो रे लाल
 अइकारि अथाग हो ॥ ज ॥ विद्या पण जाणे घणीरं लाल । मरण स्थंभन मोह भाग
 ॥ ज ॥ का ॥ १८ ॥ गहनी विद्या आगले रे लाल । सुरासुर जावे भाग हो ॥ ज ॥
 ना आपणा किम्यां दागवूरं लाल । इण ने आंगल लाग हो ॥ ज ॥ का ॥ १९ ॥ तेथी



दुकलगा मुज दुख ताजी । मखन्मिख निरधार ॥ म ॥ ३ ॥ धम पडयो तेहने मन ॥
 न उड आयां मुज पास ॥ कुण किहां ना रहवासीया । इम पूछे ते विमास ॥ म ॥ ४ ॥
 में कळो तुम पूछो किस्वों जी । तुमने कक्षा स्यं थाय । तुम हम तो सरीखा मिल्याजी
 चाल्यां व्यर्था जाय ॥ म ॥ ५ ॥ विस्मय हुयो ते इम सुणी जी । बली पूछे इण पेर ॥
 तुम मांग तोता नहीं जी । छे कोइ दुःख की लेहर ॥ म ॥ ६ ॥ में चमक्यो मनने
 थियेजी । ए छे चतुर सुजाण ॥ बोली में मतलब लख्यो जी । हा हा ! पशु विघ्राण
 ॥ म ॥ ७ ॥ में कळो तुम केवो जिकीजी । साची छे सहू बात ॥ पण दुःख जेहने
 र्नाजायेजी । जेहथी दुःख विरलात ॥ म ॥ ८ ॥ सुक कहे तुम किम जाणीयेजी । में न
 करं दुःख दूर ॥ पथी सरीखा जक्तमें जी । कुण नर लायक पूर ॥ म ॥ ९ ॥ वीर
 मर्ना शुकने कहेजी । पामिं बहुली रिद्ध ॥ कुसुम श्री शुक जोगर्धीजी । सील राख्यो
 भर्ता थिभ ॥ म ॥ १० ॥ दमदंती हैस पसायर्धीजी । कीधा बहुला काम ॥ विपथी
 राय उगारियो जी । जो वो पोपट का काम ॥ म ॥ ११ ॥ एकावतारी तीर्यच हुवेजी ।
 ले वारा वृत ॥ भगवंत भाख्यो निज मुखेजी । जोवो पशुना कृत ॥ म ॥ १२ ॥
 त्याथी परघू तणाजी । व्रष्टांत बहु जग मांय ॥ निज मुखर्धी निज कीर्ती जी । करतां

गिनद्ध कराम्ने भाय ॥ ३ ॥ कथा विना नही चालसा ॥ जागो जातण धात ॥ उपकोर
 हागी अतिघणा । तीन गनुय मुख पात ॥ ४ ॥ इस अग्रह थी पूछतां । ते कहे सुण
 धा ध्यान ॥ कर्हाणो इकर मदन ने । ते करसी पुण्य वान ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ नही सं
 इत लगार निरोपस ॥ ६ ॥ ॥ नुणा मदन धरी हृदय सदन ए । कीजे सुख को उ-
 वा ॥ ७ ॥ इत मय दय गिनद्ध हांवे । शुकवर मुजन वतायो ॥ सुणो ॥ १ ॥ इण हिज
 वर गिनद्ध अकर नाम । आगी था गुण वंता ॥ ध्यान ज्ञान सील संतोष वैराग्य । करीने
 विद्वान् इहना ॥ २ ॥ ॥ निण नो ए ऋद्र शंकर नामे । चेलो छे अभी मानी ॥ वा-
 रण गीर्वाणी धरान । गिनद्धाट विद्या छानी ॥ सु ॥ ३ ॥ हुवो प्रवीनि यो योवन वंतो
 गिनद्धाट विद्या लग्या । काण सयाद न माने गुहंकी । अशुभो दय तस जाग्यो ॥ सु ॥
 ४ ॥ ॥ विद्या वर शंकर जने । ते नहा माने लगारा ॥ अविनय वणो करवा लाग्यो
 ॥ ५ ॥ ॥ सट श्री कर्ता ॥ ५ ॥ ॥ गुन्जी मन रमावा काजे । पाल्यो मुज धर अ-
 ॥ ६ ॥ ॥ विद्वान् इहना । कर भाप(आदी तेम ॥ सु ॥ ६ ॥ एकदा गुरु चिंतांमं
 ॥ ७ ॥ ॥ नाना विद्वान् ॥ नामाड में पूछ्यो श्वासी । स्पूं विचार मन म्यान ॥ सु ॥
 ॥ ८ ॥ ॥ विद्या विद्वान् । कर्ग विद्यकी क्षारी ॥ अतीत को इण धर्म लजाया !

नि.स.ग.या आड नाम दसोप ७ जोनिदर १० यशस्व ११ तं जस्य चयने ज्ञानं तप १ तपुना
 १२ अम वय ॥ सु ॥ १० ॥ तं कने मांगे ते वर आपे । रदने ते मय गाले ॥ ए
 १३ ए र नी मणाड । करगया ते काल ॥ सु ॥ २० ॥ गुरु द्वियोगे हूं तुःख पाशु । रंहु
 १४ एण रनमार्हा ॥ इम गांचं शुकेअर मुजने । हितकी यात चेताइ ॥ सु ॥ २१ ॥ कहे
 १५ मदन म यात मुर्णीय । महारी मन हर्षायो ॥ वाट तुम्हारी जोतो वेठो । तुम दर्शने
 १६ एण पाया ॥ ए ॥ २२ ॥ ए कारज तुम हाये थार्हा । कजे सहास धारी ॥ तीजा
 १७ ॥ एण ए इहा । ऋपि अमोल उच्यारी ॥ सु ॥ २३ ॥ ० ॥ दुहा ॥ मदन कहे
 १८ ॥ एण ए इहा । अण्णाहितकी यात ॥ हिम्मत धर निपजा वरयु । थोडेइ काले भ्राता ॥ १ ॥
 १९ एण ए इहा । मुज मत जाजो भूल ॥ डिम कुंवरीने सुखी करो । तिम मुज
 २० एण ए इहा ॥ २ ॥ मानव पुनः मुजने करी । मिलवो परिवार ॥ यह मुज इच्छा
 २१ एण ए इहा । मचा आधार ॥ ३ ॥ मदन कहे कार्य द्रया । पहलां छेव तुम दुःख ॥ कुंवरी मिलावु
 २२ एण ए इहा । पान्पुन ॥ ४ ॥ निश्चय चित राखजोगहजां सवा दुंशीयार ॥ हूं सट्ट कार्य साधना
 २३ एण ए इहा । एण वार ॥ ५ ॥ दाळ ० भी ॥ गग वेलावलां रंगडीं याला वावला ॥ यह ॥ साहस धारी
 २४ एण ए इहा । एण वार ॥ ६ ॥ जे साहसवंत ने उयासी । तेहना सट्ट सिद्ध यावे

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ मन पचे न नम्र करे । आइ पक्ष सन्मुख ॥ कर प्रणामी स्तुती करे । बहु वितय ले-
 या सुख ॥ ४ ॥ मन रली पूर्ण करण । कला सुधारण काज ॥ एकांत स्थानक लखी ।
 सर्जीयो नाटक साज ॥ ५ ॥ ० ॥ बाल ८ मी ॥ लावणी ॥ आश्चर्य जे कथा रसाल
 थकी ॥ पह ॥ काम देव री जावण कारण । रंभा गडी ज्यो इन्द्र परी ॥ चार सारंगी
 चारले तपले । चार मजीरे कर घरी । चार परीने पहरा घाभरा । घेर दार यहू झलके जरी ॥
 ओड पिताम्बर अतिही सुन्दर । रेशमी बहु रंग भरी ॥ बुल्न्द अवाजी पाय घुघरी ।
 वान्धी वरोबर सोले खडी ॥ होय पुण्य पूर्वले जिन के । जव जन को मिले ऐसी घडी
 ॥ आं ॥ १ ॥ धप मप २ वाजे मृदंग । थाप लगे हे सम्मत से ॥ सण २ वंर सारंगी
 बोले । तान मिलाइ रम्मत से ॥ टन्नक २ वाजे मजीरे । हिला सीस को जम्मत से ॥
 चारोही श्री श्वर मिलाइ । राग अलापी गम्मत से ॥ प्रथम तो धृषद उच्चारी । ध्वनी
 जाय गगन चडी ॥ होय ॥ २ ॥ तीन तान और सप्त श्वर से । राग रागणी छत्तीसो ॥
 योग्य वक्त तिर रीत रायसे । मिला ध्वनी उच्चारी सो ॥ घननन २ घाले घुमरी । ठमकं २
 फ. घाले ॥ लटक २ फा. फे । कति क. क. २

मन्की जी रली ॥ मंत्र तैल परितंत छुड़ तय । आपसमें मन्की चली ॥ हार घड़ी गय
भरणी उपर । पक्षीनं के उतारे रेलें ॥ मूर्त खुड़ी गुलाब कुसुमज्यू । सुनके नूर नेणा खेलें ॥
नाय उद्योगे शिला प्रष्टपे । जाणे नागन खेले पडी ॥ हां ॥ ३ ॥ फाँ चली पुष्करणी अ-
न्धर । थाक समायां करो नरायण ॥ नृत्य मामग्री सूफी त्यांघी । कपट बवलें तन शायण
॥ आइ खली चायडी पाजपर । उतार साडी तिहां रखे । सडू पडी निर्मल नीरों । जल
फिटा कने भय पत्ये ॥ दीक न किजकी सडू मिठी नारी । ख्याल गम्मत में रही अडी ॥
हां ॥ ५ ॥ मवन वेद्य कर आनंद पाया । आज मिठा मोंका भारी ॥ अपूर्व नाटक नणे
निरन्ता । क्या सोएँ किछरी नारी ॥ क्या नृत्य? क्या गायन इनका? क्यातानी? रहे अक्षय
पा ॥ सजा अनेला मुजसो घताय । भद्रसेण शुक्की कृपा ॥ अब वक्त कार्य साधन फल
कहा प्रमाण यह जैधी ॥ हो ॥ १६ ॥ पडी चरण यक्षराजके बाले । सरगोंद श्यामी थां
रा ॥ लुपते २ चले अघर जन । छिपते झाल जो अन्धारी ॥ बल्ल पास आ चन्द्र चांवरणे
ख्याम्बर ओलन लिया ॥ लघुलपथी कला प्रगोंय । हरण करी देखल में गया ॥ घंटे वं
नर सुशहां विलेंभ । बोंगो पट को लिये जडी ॥ हां ॥ ७ ॥ जलकिडा कर मथी सु
ग । आइ तन गावडी गारे ॥ शीतल पयनंस अंग थरे २ । दोनों बहा भीडी जांग ॥



उदकं लाय । तं भिन्दी कीजरे ॥ १० ॥ मक्कन कक आप प्रशाय । तं नगत्रायूर ॥ नश्वय
 हे मुज मन । नं जल लायुरे ॥ १० ॥ तोतो शक्सी काम । महाय सहू शिद्धारे ॥ किन्नरी
 भयो हे कार । वनाम्भुं विधीरे ॥ ११ ॥ आचती पुनम रात । जल लेइ आजरे ॥ मंकी
 रंभुं नंद । कृती नं जजारे ॥ १२ ॥ हम ने हृद बहु धार । अब हम जास्यारे ॥ आ-
 र्त्ती पुनम रात । निश्वय आस्यारे ॥ १३ ॥ देखी मदन पुण्यवंत । सहू हर्षाहरे ॥ रती
 मन्दी प्रसरन । सीम करे हाइरे ॥ १४ ॥ होसी फते तुज काज । रखा हूंसीयारीरे ॥
 हम कर्त्त चर्त्त । माण । मोल्लह नारीरे ॥ १५ ॥ मवन जी कियो प्रणाम । ते उड चा-
 लार ॥ चर्त्त मदन नं चित । रो घर सालीरे ॥ १६ ॥ मवन जी करे विचार । वध्यो
 र्त्ती कामार ॥ करगुं हिम्मन राख । प्रभू पूरे हामारे ॥ १७ ॥ सूता वेवल मांय । रात
 मन्दी ॥ प्रांत यक्ष मन्मुख । सीसन मांडारे ॥ १८ ॥ मान्यो घणो उपकार । रक्षा
 कीनीर ॥ हम अंग हां ज्यो मदाय । हो ज्यो मुज चींभीरे ॥ १९ ॥ होइ सज तल्काल
 । आंग चाल्यार । भयका अट्टी पहाड । नेणे निहाल्या रे ॥ २० ॥ ते नहीं उरे लगार
 । हर्षी चाल्या जारे ॥ करना निल फळ अहार । झाड पर रहारे ॥ २१ ॥ थोडा यिन
 माय । नथर दिव्यांगरे ॥ मनार तोहना भवन । वेख हर्षायारे ॥ २२ ॥ आतां तेहने

ग गो आत्मा दूषण नारी ॥ दया किम नाम स्त्रियो जहारिरे ॥ भा ॥ ६ ॥ इती लुशा-
 मट करे किण कांज । नही धीम छे एह टगारिरे ॥ भा ॥ ७ ॥ अपणां पास से कित्यो
 छरी । मे तो पहला छी चाथारिरे ॥ भा ॥ ८ ॥ तिहां विराजी आणद पावा । थाक
 मद्र गन्दी गथारिरे ॥ भा ॥ ९ ॥ दूजो जोगी बेटो पासे । रघो मून ते थारिरे ॥ भा ॥ १० ॥
 पूछ मदन निण बंन्या तांइ ॥ किण कारण रहो एक लारिरे ॥ भा ॥ ११ ॥ किण का-
 रण पर ए उजइ । किहां गया नरनारिरे ॥ भा ॥ १२ ॥ महारो नाम थं किम पहवाणो
 । किण काज मांग निहारिरे ॥ भा ॥ १३ ॥ तव कुंवरी कहे नरमाइ । भोजन जीम्यो
 मद्र थारिरे ॥ भा ॥ १४ ॥ नही अंतर आपसे हे कांइ । जीवां छं आप आधारिरे ॥
 भा ॥ १५ ॥ मदन अंबी अजे ते मानी ॥ तव उज्यादक थथारिरे ॥ भा ॥ १६ ॥
 दीदा नेद नो मर्षन कीयो । किर भुद्धोदक नथारिरे ॥ भा ॥ १७ ॥ ते तले तिण
 म्याद पगाइ । भनि चगुरा मथारिरे ॥ भा ॥ १८ ॥ शान दाल दृत सिष्ट पकान ।
 अजन्वारी पद्र थथारिरे ॥ भा ॥ १९ ॥ खजे पाट संनारी थाली । मुखमली गादी वि-
 थारिरे ॥ भा ॥ २० ॥ बंधी रत्न जटिन कटोरि । स्वादी नाय हेम झारिरे ॥ भा ॥ २१ ॥
 अनुपम मद्र जीभाया । कुवरी करी पुरस्कारिरे ॥ भा ॥ २२ ॥ धीजा जोगीने भला के-

मं ता आलावृ इणने नाही ॥ इण किम नाम किया जहारीरे ॥ भा ॥ ६ ॥ इत्ती खुशा-
 मंद करे किण काले । नहीं दीसे छे एह टगारीरे ॥ भा ॥ ७ ॥ अपणां पास से किस्यो
 लेसी । में तो पहला छां वाचारीरे ॥ भा ॥ ८ ॥ तिहां विराजी आणद पाया । थाक
 मह गली गयार्गं ॥ भा ॥ ९ ॥ दूजो जोगी वेडो पासे । रख्यो मून ते धारीरे ॥ भा ॥ १० ॥
 पंडे मदन निण कंन्या तांइ ॥ किण कारण रहो एक लारीरे ॥ भा ॥ ११ ॥ किण का-
 रण पुर ए उजड । किहां गया नरनारीरे ॥ भा ॥ १२ ॥ महारो नाम थें किम पहचाणो
 । किण काज मार्ग निहारीरे ॥ भा ॥ १३ ॥ तव कुंवरी कहे नरसाइ । भोजन जीम्यां
 कहं मार्गं ॥ भा ॥ १४ ॥ नहीं अंतर आपसे हे कांइ । जीवां छां आप आधारीरे ॥
 भा ॥ १५ ॥ मदन अचंभी अर्ज ते मानी ॥ तव उण्णोदक थयारीरे ॥ भा ॥ १६ ॥
 पाटी नल तो मर्दन कीधो । फिर शुद्धोदक नद्यारीरे ॥ भा ॥ १७ ॥ ते तले तिण
 रमांड वणाइ । अति चतुरता संवारीरे ॥ भा ॥ १८ ॥ शाल दाल घृत मिष्ट पकान ।
 व्यंजनादी बहू ल्यारीरे ॥ भा ॥ १९ ॥ रजत पाट सोनारी थाली । मुखमली गादी वि-
 छांगं ॥ भा ॥ २० ॥ मेली रत्न जडित कटेरी । स्वादी तोय हेम झारीरे ॥ भा ॥ २१ ॥
 अनुक्रमे महु जीमाया । कुंवरी करी पुरस्कारीरे ॥ भा ॥ २२ ॥ वीजा जोगीने भेला दे-

१) नाम चहे नाम हा ॥ म ॥ ४ ॥ सबे ओंगे सहू सायनी । गुने निभी काल हो ॥ म ॥
 २) मन्त्र अच्युत ठीयो । इण पुर पर तेताल हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ५ ॥ कोयो मूर अवि
 ३) आनन । एयां अचिकाल हो ॥ म ॥ आयो इतो चलयने । आणे आयो जय काल हो
 ४) ॥ म ॥ म ॥ ६ ॥ अरगट झरु कियो अति । संपे पात्री वीग हो ॥ म ॥ भूजा हो
 ५) म ॥ म ॥ ७ ॥ ७ ॥ हाट हनेली पूजीया । पशे-
 ६) या ॥ म ॥ ८ ॥ लोक सहू भय धंत थया ॥ पय्या भणां विगसाद हो ॥ म ॥
 ७) ॥ म ॥ ९ ॥ दो भर पन मरजना । न्हाटा लंद जीव हो ॥ म ॥ कंद न जॉने
 ८) लंद ॥ १० ॥ म ॥ म ॥ भव्य ॥ ११ ॥ राजाजी भय धंत भद । लंद निज
 ९) पाप ॥ १२ ॥ म ॥ आगा मन में जा सधा । करता सोश अपार हो ॥ म ॥ भव्य ॥
 १०) ॥ १३ ॥ पापबल मूजीया । जो जे भागा लोक हो ॥ म ॥ चउवानी भी नु-
 ११) ॥ १४ ॥ म ॥ म ॥ भव्य ॥ १५ ॥ मान पान मकान को । कियो
 १२) ॥ १६ ॥ म ॥ म ॥ भव्य ॥ १७ ॥ जन पाशी सहू जन बणया । सहता युःख ते करत हो ॥ म ॥
 १३) ॥ १८ ॥ म ॥ म ॥ भव्य ॥ १९ ॥ गहा भग थी गया नाश हो ॥ म ॥ मनु-
 १४) ॥ २० ॥ म ॥ म ॥ भव्य ॥ २१ ॥ इण कारण इण

ली इण ठाम हो ॥ म ॥ जोगी तणो रुप धारने । बन्धव गया आप साम हो ॥ म ॥ भ ॥
 ॥ २१ ॥ नैमित्तिकना कहेण थी । पेछाण्या हम आप हो ॥ म ॥ द्वादश ढाल असोल
 कही । टर्क्याया गद्द संताप हो ॥ मदन ॥ भ ॥ २५ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ दर्शन दीठा राजरा ।
 हुयो यणो आणंद ॥ वीर्यां वृतांत हम तणो । कळो सर्व सम्वन्ध ॥ १ ॥ हिवे कृपा हम
 पर करी । एतां कीजे काज ॥ सरणे आया राजके । रखीये हमारी लाज ॥ २ ॥ मदन
 कहे मुज शक थी । जो थागी उपकार ॥ तो पाछो हटस्थुं नहीं । करस्यु काम विचार
 ॥ ३ ॥ मंध्या वृड निण अवसर । भग्नी बन्धव दोय ॥ नरमाइ कहे मदनने । अब रहं-
 गोा नही होय ॥ ४ ॥ अमुर आचण वेला वृइ । पधारी वन माय ॥ रयणी तिहां सुख
 थी रही ॥ प्रांत आचम्यु धाय ॥ ५ ॥ मदन कहे जावो तुमे । हूं रहस्यु इण ठाम ॥
 गंत मिलम्यु अमुर थी । करम्यु थाणों काम ॥ ६ ॥ प्राते तुम सहू देखजो । इम सु-
 णो हयाय ॥ प्रणामी पद मदन तणा ॥ दोनू ते तव जाय ॥ ७ ॥ ॐ ॥ ढाल १३ मी ॥
 कपर होच आंत उजळो रे ॥ यह ॥ उभय गया तदनंतरे जी । मदन चिते मन माय
 ॥ अमुर आचण अज्ञ वार छेजी । किस्यो करूं इण ठाय ॥ चतुर नर । साहस वंत मदन ॥
 आं ॥ ६ ॥ जिण कामें इहां में आवीयो जी । ते करूं पहली जाय ॥ सत वट वृक्ष

१२ ॥ मदन कहै इम ना कथा जी । नही मीनू म धात ॥ ना कही कृष्ण कारण ॥ जी
 कही होइ साक्षात ॥ च ॥ १३ ॥ इम कही कृप में चालीयाजी । वेवने आइ रीस ॥
 उटाइ न्हाख्यो वाहिरे जी । पूगी नहीं जगीस ॥ च ॥ १४ ॥ मदन सावय हुइ कहे
 जी । इम करणों नही जोग ॥ तुच्छ वरत जल सारीखी जी । किम नहीं करवा दो
 भांग ॥ च ॥ १५ ॥ विन कारण तुम मुज भणीं जी । क्यों न्हाख्यो दुःख माय ॥ गृह
 उदक लिया विनजी । मुज थी नहीं जवाय ॥ च ॥ १६ ॥ इम कही उठयो तत्क्षिणे
 जी । चान्यो कृप मझार ॥ वेव कहे धीटा थनेरे । लज्जा डर न लगार ॥ च ॥ १७ ॥
 कमयर्क्षा आइ थार्यरं । क्यों तू वल्लि मोत ॥ पण मदन जी सुणं नहीं जी । कहे इम
 क्यों कांड हान ॥ च ॥ १८ ॥ अमुर तव असुरत्तथयो जी । तत्क्षिण मदन उठाय ॥
 वट आग्यान चंटावीयो जी । हाल्यो चाल्यो नहीं जाय ॥ च ॥ १९ ॥ मदन चिंते रुडो
 वणयो जी । करणों किस्यो उपाय ॥ होणहार तिम थावसी जी । चिंता कियों काइ
 थाय ॥ च ॥ २० ॥ मदन लटक्या धट शाखने जी । ढाल तेरवी मांय ॥ अमुल्य
 अश्रय आंग घणों जी । सुणा जो चित लगाया ॥ च ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ क्रोधे
 व्यायो व्यंतरं । महा वायु चलाय ॥ मूल सहित बट उपडी । उडी देशांतर जाय ॥

जी ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ मेहर निजर म्हारा पर काँजे । जीवित दान मुज दजि जी ॥ मर-
 णातिक उपमर्ग मुकाइ । अभय दान फल लीजे जी ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ उपकार मुजंप
 मोटो थाप्पी । मानव जान वच जासी जी ॥ इत्यादी विनंती करी कद्यो । छोडावो मुज
 फाप्पी जी ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ सेठजीने दया दिल आइ । मदन तर्णो कर साइ जी ॥
 खंची तत्क्षिण नीचे न्हाख्यो । तेतले अश्वर्य थाइ जी ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ सेठजी लटक्या
 वडने जाइ । मदन जी अश्वर्य पाइ जी ॥ सावंत शाहतो अती ववराया । हे प्रभू अव
 करुं कांड जी ॥ पुण्य ॥ १० ॥ ए नर नहीं कोइ छे इन्द्र जल्यो । मुजने फंद में डाली
 जी ॥ थाप छुटीनें किहां अव जावे । सेठजी पाडी किकाली जी ॥ पुण्य ॥ ११ ॥
 धावंर धावां दुष्ट ने पकडो । इण कीधो अन्यायो जी ॥ उपकारनो बदलो इण दीधो ।
 अपकारग ए सवायो जी ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ मदन कहे सेठ दोप नहीं महारो । हूं नहीं
 जाणू भंडो जी ॥ उपकारी आपणे संकट जोइ । हूं पावूं हूं खेदो जी ॥ पुण्य ॥ १३ ॥
 मटकट कर दृष्टको हारो । तो तूं जीवतो जासीजी ॥ नहींतो फिर फजी नी पुगी । था-
 गी इण टाम थासी जी ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ मदन सेठ नेडो नहीं जावे । खं पाछो जावूं
 चटी जी ॥ उनार सेठनो साद सुणीयो ॥ थी थोडीसी छेटी जी ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ सहू

बंद अग्नि घणो ॥ इष्ट आन वशोम ॥ १ ॥ ॥ ॥ कायल टडुक री
 मधुन में ॥ यह ॥ गुणी की संगत गुणी जन पावे । गुणी नें गुणी मिल्या हयवि
 ॥ आं ॥ मदन गुणयन जोगी जोइ । मन मांहे सुखी घणो होइ ॥ गु ॥ १ ॥ तत्क्षिण
 आइ पढनो जांगी चरने । स्तुती करी रघो उरसहा धरने ॥ गु ॥ २ ॥ हिचे सरणो छे
 नाय गुमागे । ए महा मंकट माहरो निवारो ॥ गु ॥ ३ ॥ हूं निराधार पडयो फंद मांइ
 । मुज अपगंध उण में कुळ नाइ ॥ गु ॥ ४ ॥ सेठ जी मुज पे कियां उपकारो । अशु
 भां उदय थी भयो धपकारो ॥ गु ॥ ५ ॥ सहू कहे यो सीटो कपटी । मत चाले लागो
 दंभ्या चपटी ॥ गु ॥ ६ ॥ मदन की क्या जोगी ने आइ । महू जनने विश्वास की याइ
 ॥ गु ॥ ७ ॥ घांया की तत्क्षिण चट के लगाइ ॥ सेठ जी तत्क्षिण पड्या हेटे आइ
 ॥ गु ॥ ८ ॥ उर्टने जोगी चरणे लागो । गुरु दर्शन थी सहू दुःख भागो ॥ गु ॥ १ ॥
 मर जन जोगी की करे यडाइ । ऐग्या करामाती जग थिगलाइ ॥ गु ॥ १० ॥ नमन
 । भी महू जागीने नांइ । निज २ उत्तार सुंघ आ ग्याइ ॥ गु ॥ ११ ॥ मदन जी चाल्यो
 नांके का लागे । चिने काम होसी यांस महागं ॥ गु ॥ १२ ॥ ए करामाती पाणी
 । मदन चिण थी गय मंन्या दुःख जासी ॥ गु ॥ १३ ॥ शानंद पुंने येही वसासे ।

जांगो के गोमांसो पाइयो । क्या भोगे भेन्हे तासो । असोल् कोवे कसोसियो ॥ ३ ॥
 परम पुत्र्य श्री कथान डी कसिय डी महाराज के समप्रदायके पाल ब्रह्मचारी मुनी
 श्री अमात्य कसिय डी रचित पुण्य प्रकाश मदन कुंवर चरितस्य तृतीय खण्डसु
 प्रसार ॥ ३ ॥ ७

॥ बुदा ॥ अहंन सिद्ध साथ धरम ॥ एही यह संरणा चार ॥ नेमी नाथ नमन करी
 ॥ कहे चौथो अर्पीकार ॥ १ ॥ मदन कथन अति मन रमन । सुगता विरसे दुहास ॥
 कथा मन कथ उरसग तिस । कंसुणी गुण प्रकास ॥ २ ॥ बुद्धिबल सहूथी अधिक ।
 जो माहग नन होय । अर्थय चकित सहूने करे । गुण जो ते सहू कांय ॥ ३ ॥ रही मदन
 जांगी नन । मया सांरे प्रमेश ॥ निते जांगी परधीये । देइ को आदेश ॥ ४ ॥ एकदा
 मया अर्थ मे । जांगी अने मदन ॥ विनोद बाल करता थका । नेट(अन्व सर्वन
 ॥ ५ ॥ मन शब्द गुणीयो नदा । जांगी को कृण गेय ॥ मदन कहे नारी अछे । कहा
 ना साथ जाय ॥ ६ ॥ साकस पंथी मदन को । जांगी दुखम फरमाय ॥ जायो खबर
 आता रही । किण कारण अरुदाय ॥ ७ ॥ तगक्षिण उठी मदन जी । जांगीनि पग

2

3

4

5

6

7

8

9

10

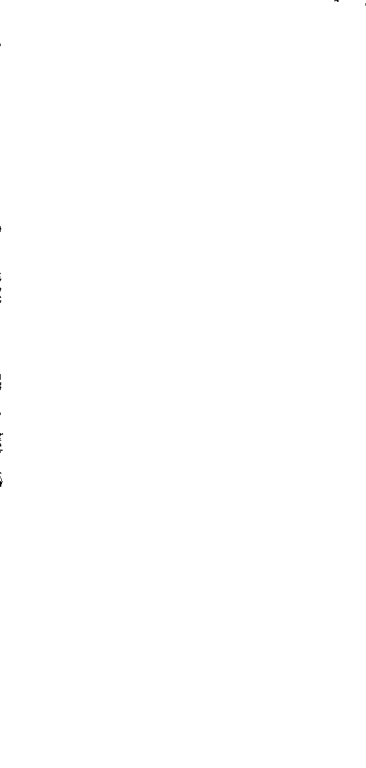
11

हुँ राघु इण कारण । मुज जमवार जासी कम ॥ सा ॥ म्हारो रक्षण कुण करे । विण
 प्यारे म्हारो प्रेम ॥ सा ॥ ९ ॥ मदन कहे गत वातनो । वाइ पश्चाताप अजाग ॥ सा ॥
 थारे प्यारे सबन्ध को ॥ वाइ इत्ता दिन संजोग ॥ सा ॥ १० ॥ समता धारी विरमी-
 ये वाइ । भण हूँतो ए विलाप ॥ सा ॥ महीला कहे इम किम कहो छो । सत्पुरुष हो
 आप ॥ सा ॥ ११ ॥ मदन कहे किस्यो करूं ॥ कांड मूवा न जीवता होय ॥ सा ॥
 आर कहां भो में करूं । तुम उपाय बतावो सोय ॥ सा ॥ १२ ॥
 कांता कहे मुज कंत नो । मन मुब जोवा नी हाम ॥ सा ॥ मनडो अति त-
 र्भो रगो । ते किम होवे मुज काम ॥ सा ॥ १३ ॥ सूली तो उंची घणी । कांइ मुज
 थो नर्हा चडाय ॥ सा ॥ १४ ॥ कृपा करी मुज उपर । आप दर्शन देवो कराय ॥ सा ॥
 ॥ १५ ॥ मदन कहे पर नार ने तन । कर लगावा पञ्चखाण ॥ सा ॥ पण उपाय एक
 दाखव । तिम देखो तुम प्राण ॥ सा ॥ १६ ॥ नर्मनि में उभो रहूँ वाइ ॥ इण सूलीके
 पान ॥ सा ॥ तुम चडी मुज पीटपे । सहु पुरो मन की आस ॥ सा ॥ १७ ॥ खुशी
 हः नार्ग भणे कांड । ठीक बताइ रीत ॥ सा ॥ मदन नम्यो नारी चडी । तब करवा
 प्रांनम प्रांन ॥ सा ॥ १८ ॥ प्रेम धरीने निरखथी । तब मुग्दे मुंज दीयो फाड ॥ सा ॥

कहे व्याग दुण भव सार्ही। छोडू नहीं तुज साथो जी ॥ ते गील्यो मुज गिणती भे नांही।।
 नुसंधी छो मुज सथो जी ॥ म ॥ ११ ॥ सदातो वंगो मरतो (जातो) घरकानी । अ-
 चकं दट घर्णा लीधोजी ॥ देखूं जांचे नहीं तो उपाचे । पर भव प्रगा स्यूं सीधो जी ॥
 म ॥ २० ॥ इम मुर्णा नार अति हर्षाया । काम क्रिडा करवा लाग्या जी ॥ सुणी वात
 श्रंतांग कृतव्य जो । म्हारो कांधानल जाग्या जी ॥म॥ २१ ॥ लल कार्यो भे रे दुष्ट अ-
 न्याइ । आज नग्यां नूं लंथरे ॥ इत्ता दिन मुज घणो सतायो । लुब्धी नार मुज साथे
 ती ॥ म ॥ २२ ॥ ते दुष्ट म्हार सामे थड्यो । करवा लाग्यो लडाइ जी ॥ हाक हमारी
 गुणन निनां नच । लोक घणा आया भाइ जी ॥ म ॥ २३ ॥ राज सूभट पण वोडी आ-
 या । पुंदा हर्षगत मारो जी ॥ जाण अन्याइ कब्ज कियो इट । पकडी लेग्या जारोजी
 ॥ म ॥ २४ ॥ नारी दारमाड घर गइ भारी । प् थाइ दूजी ढालोजी ॥ रुपि अमोलख क-
 २५ ॥ नार अंग । नारि चरिख निहांलो जी ॥ म ॥ २५ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ प्रात समय ते
 २६ ॥ इमा कियो नृप पास ॥ वंती वारता गान की । कीनी सह प्रकाश ॥ १ ॥ मुज
 न पण वादना या । भे कही साची वात ॥ इण नर मुज मारण भणी । रच्यो हूंतो उ-

हियो नींद मझार ॥ च ॥ १३ ॥ पाछली थाडी रात रही जत्र । सुणो म किलकार ॥ च ॥
 १४ ॥ दोडो रे मुजने छोडा वो । मार मुज भरतार ॥ च ॥ १५ ॥ दचकी उठ्यो मे
 नत्र जायो । देखू तो मुज नार ॥ च ॥ १६ ॥ मे तस पूछ्यो क्यों तूं चिछावे । कुण
 नुत्र दुःख देनार ॥ च ॥ १७ ॥ ते मुज गाल्या देवा लागी । अरे दुष्ट अविचार ॥ च ॥
 १८ ॥ महारी नाक ते नींद मे कापी । भोलो वणे इण वार ॥ च ॥ १९ ॥ तव अती
 मे अर्थय पायो । घाणन जियो तस ठार ॥ च ॥ २० ॥ कुण काढ्यो नाक घरेमे आइ
 । गुंग्या मे भरे मझार ॥ च ॥ २१ ॥ तेतेले मुज सयन घर वारे । लोक आ जम्या अ
 पार ॥ च ॥ २२ ॥ सासु मुसरा मांये आया । तेकिमाड उखाड ॥ च ॥ २३ ॥ असूरत्त
 हा मुजने पकळ्यो । देवा लाग्या मार ॥ च ॥ २४ ॥ कुंदी खूब करी तिहां महारी ।
 लाया मिपाइ मिगकार ॥ च ॥ २५ ॥ नकटी नाक सहने देखाडे । सहू रखा सत्य धार
 ॥ च ॥ २६ ॥ मुज बान्धी आया राज पास । नटप कोण्यो धर क्षार ॥ च ॥ २७ ॥
 काल दृजान शिश्ना दिलाइ । आज थे कियो अनाचार ॥ च ॥ २८ ॥ म्हारो बोल्यो कान
 न धरे नहीं । दीयो हुकम पुकार ॥ च ॥ २९ ॥ जावो एने सूली चडावो । एमोटो गुन्हे
 गार ॥ च ॥ ३० ॥ दिन इन्साफ मुज बान्ध ले जावे । कियो करे हूं लाचार ॥ च ॥







... पटनः पार वः । न
 ... जं भन वार्य माथनां । न क
 ... चाला नर्गा आ
 ... नर
 ... ५ ॥ नर्गा जावा चार्था । मय वजार क भांय । नर
 ... ७ ॥ दाल ८ र्गा ॥ धन्य २ मना
 ... १ ॥ वेम्या अन विप्र सर्णा । तिहां लग्गा लडाइ ॥ वि
 ... २ ॥ लोक सरु टठा करे । देवे वि
 ... ३ ॥ विप्र कहे
 ... ४ ॥ एकरार मुज छोर्दीया । नही कले अ
 ... ५ ॥ दया मदनेन आइ ॥ छोटावुं हूं इण भर्णा ।
 ... ६ ॥ जोगी मय आसा दीर्घो । सट करी नमस्कार ॥ आया

॥ धारणा ५।६ भगवत्या विन । हुं कि किणने दवावूं ॥ धीरपे न्याय निवेदने । सद्
 भवन लामु ॥ १। ॥ १० ॥ इम मुण सह विस्मय दृषा । वैस्या धैर्ये लाद् ॥ ढाल श्राठ
 धीया भन्द र्धा । अमालय गाद् ॥ ११ ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ मदन कहे तव विप्रने ।
 अशाया मन विन ॥ धैर्ये लाद् सर्धा कहे । हुं जे पूढं मित ॥ १ ॥ कर किम झाल्यो
 ठरना । विरगं विद्या अन्याय ॥ ने तुम कहे सह मांढने । जिम मुज समजण थाय
 ॥ २ ॥ पिर भूत प्रभादसे । धरस्यं यथा योग्य ॥ मन दोदका राखस्यं । खुदी होसी सह
 गा ॥ ३ ॥ धीर र्धा बुद्धि निलो । मदन ने जाणी तेह ॥ विप्र कह श्रामी सुणो ।
 न्याय निवेदा ठर ॥ ४ ॥ इण टर्गायां मुज मिलने । मे टर्गी इण तांय ॥ कलतव्य कहूं
 इतरगने । न इण कियो अन्याय ॥ ५ ॥ ६ ॥ टाल १ मी ॥ गाफल मत रहरे ॥
 पड ॥ भग १ ॥ मर । सह सुज्ञ संग तज दोरे ॥ वैस्या नही दुइ किस कीनारी । घात
 ६०० ००० विरगारी ॥ सं ॥ अं ॥ चंपानगरी मझारी । वसे कमल सेठ भन धारी ।
 अन अंगारही ए नारी । दृपयप नन्दन एक भयो । गुण चन्द नाम तस देयो ॥ संग ॥
 १ ॥ टार धाद घना धरिपार । पूर्वा विद्या नारी कडा ५ मि र वर



न नृपति न गाय ॥ प्रमथ मय ज्ञो नार नो । आप घणो हर्षा ॥ १ ॥

॥ डाल ११ र्मा ॥ मन कर्ना परर्नान रंठकी ॥ यह ॥ लायणिसिं ॥

नक्तनु दरम्यान । कूर्त्वा हे मवर्ही वनराइ ॥ कंद्रप केरी वहार लुंठने

॥ आय वाणकं मांय । खेल्ने गाने मिटाइ ॥ नाच रंग विनोद ख्याल

वहु । रह ग र्गाइ ॥ यह अनर्गी नार । पार ले सेहल करण जाइ ॥ म ॥ १ ॥ राजा

रर्णा र्गाइ ॥ संग सव सज आया ॥ यथा योग्य सज्जन संघ रम्मत । गम्मत

लगाया । रर्णा कंठ हार । हीरा तारांगण सोभाया ॥ नाचत कूदत भलक पडे । जाणे

इन्द्र नारा ॥ टप पट्टी गणिकाकी उसुपे । मन गयो ललचाइ ॥ म ॥ २ ॥ जो

मिल मना हार । जिया सफल मेरा थोपे ॥ इस घिना रिणगार अलुणा । मुजकी

लगा । किम आवे यह हात । वात विषमी बहु देवाये ॥ राजा तर्णा प ट्यारी

। अल दुपार से पाये ॥ हृद चित्त उदास । यह सब सरनी विलनाए ॥ म ॥ ३ ॥

॥ अल दुपार से पाये ॥ हृद चित्त उदास । यह सब सरनी विलनाए ॥ म ॥ ३ ॥

पाइ ॥ म ॥ ८ ॥ गुण चन्द गयो धराराय । वचण उपाय न देखाइ ॥ पढ्यो राणिके
 चरण । रोधनो कहं सुणो मांइ ॥ अब आपको सरण । करी में पूरी अन्याइ ॥ अहो
 प्रथी पाल । उगारो मेरी दया लाइ ॥ इस सुण राणी धयण । अर्चभो मनमें अति पाइ
 ॥ म ॥ ९ ॥ चोर तणा नहीं चैन । वचन पण बोलें ए मीठा ॥ कोमल अंग सुरंग ।
 भोल पण अंगमें बहु दीठा ॥ पूछे कहे तूं सच । इहां तूं अचो किम थीठा ॥ अब करे
 नरमाइ । कर्म तें कर्मा पहली चीठा ॥ कर जोडी कहे तहां दया कर छोडावो मांइ
 ॥ म ॥ १० ॥ चंपा नगरी कमल सेठ को । बाजूं हूं वेढां ॥ उभा जणने द्रव्य । हटकर
 विदंश मां पेठो ॥ रह्यो आपने रोहर । वैश्या कंद रखा सेठो ॥ लूट लियो सब द्रव्य ।
 कर्म दुःख मुज हृदय पेठो ॥ न मानी में सीख । जे दीधी तातजो नहराइ ॥ म ॥ ११ ॥
 षसंत रमण गाय वाग । हार आपको रांड जोइ ॥ भरमाइ मुज कहे । लाइवो हार मु-
 जे साइ ॥ मोह अन्य मानी वात । आप के महल आयाइ ॥ न जाणू चोरी कर्म । रांड
 मुज कंदे न्हारयाइ ॥ कही में साची वात । जीविन दान दो मुज तांइ ॥ म ॥ १२ ॥
 सुणी गुण चन्द चरिख । दया राणी के मन आइ ॥ बढायो निज पाल कर दिया आ-

धार्वाषो । इंद्र सृष्टाट लार ॥ ४ ॥ धाहना रुद्र पर पर्वोचीया ॥ वीतक कियो प्रकाश ॥
 उपशार मान्या राणी क्षी । सज्जन हुय हुछास ॥ ५ ॥ ७ ॥ ताल १२ भी ॥ रंगीला
 भटा ॥ पर ॥ विप्र मदन से करे उच्चारो । गुण चन्द्र छे भंवी महारो । एकांत मिल्यो
 नं धारो हो ॥ मदन जी सुर्णीये ॥ १ ॥ मे पृछे कमावा सिधायो । पण कंगाल होइ
 विप्र ज्ञाया ॥ तव गुण चंद्र दृणा दारमाया हो ॥ स ॥ २ ॥ वीतक हाल दरत्तायो । सु-
 र्णा मज्जे प्रान्ध शरायो । मर्म वेदया नो पाया हो ॥ स ॥ ३ ॥ तव मे कह्यो गुण भाइ
 । हिव हूं आस्य तिण ठाइ । गमावु देदयानी शुभराइ हो ॥ स ॥ ४ ॥ धारो पन पाछो
 लायं । भा मे धाछण कहलावुं । नहीं तो पाछो नहीं आहुं हो ॥ स ॥ ५ ॥ गुण सुन्द्री
 नां पत्तो लग्गासुं । क्षी पुर राय राणी ने मिल्हासुं । एता कारज कर पर आसुं हो
 ॥ स ॥ ६ ॥ गुण चन्द्र मुज लभगाइ । ते वस्त्रा से नहीं जीताइ ॥ चढा भूपत तिण
 सुं हायां हो ॥ स ॥ ७ ॥ मे तिणरो पचन आपसानी । आयो निज पर भाविब
 कानी । आसा भांगी वीदरा जावानी हो ॥ स ॥ ८ ॥ भाविब पण सप्तजाया । चन्द्रवा-
 नां राज भजाया । ऐर ब्रह्म पण्य स्मियावा हो ॥ स ॥ ९ ॥ छियो वी पुण्यां विद्याया

धात ॥ इण भं जो खोटी हुं । तां साक्षां साक्षात् ॥ १ ॥ मू माभू इह गदला । न र्ना
 कीधो काल ॥ धृतीभं इती भणी । प्रगट । हुइ सहू पोळ ॥ २ ॥ दूजा को धन लेषता ।
 जिम प पाइ सुख ॥ तिमही इणारो धन लियां । हर्पासी मुज सुख ॥ ३ ॥ घणा जीव
 संतापतां । इण नहीं कियो विचार ॥ तां कहां दुःखीयो कृण हुं । जोइ ईने निराधार
 ॥ ४ ॥ सहू को धरलो भं लइ । इण नं करूं सहू परं ॥ तां सुख पावें आत्मा । लं धन
 जावुं धर ॥ ५ ॥ ७ ॥ टाल १२ मी ॥ कमल दल लोचना ॥ यह ॥ बुद्धिवंत । मदन
 जी । पतां न्याय कियो इण परं ॥ तु ॥ आं ॥ गंभीर धरने कहे मदन जी । करां भुंदां
 अत्र मंहर ॥ बुद्धि ॥ १ ॥ वात गाची सहूडे जी तुमारी । प कुटिला जा जेहर ॥
 तु ॥ २ ॥ सहू लांक तव कहें मदनसे । करी ने उंची खेर ॥ तु ॥ ३ ॥ प कुटिला नहीं
 दया ने जोगी । धन्य २ विप्र बुद्ध धेर ॥ तु ॥ ४ ॥ इण विना और काइ न जीरयो
 । ण पापणी कीं लंर ॥ तु ॥ ५ ॥ हमतां जाणता जावुं टोणा । कोर देवता करे खेर
 ॥ तु ॥ ६ ॥ द्विये पहनी कुंभी दारो पुरी । फिर न कर धणपर ॥ तु ॥ ७ ॥ वैश्या
 धरगार कहें नरमार । अत्र नहीं रमू जूया जेर ॥ तु ॥ ८ ॥ गुणी काता सहू सहायक
 हांय । महारा तुम करां खेर ॥ तु ॥ ९ ॥ मदन कह तुम मत धरवाघा । प्रभुजी करसी

स्वर धांसया हो ॥ व ॥ म ॥ ८ ॥ इशो वचन देइ हम निकल्या । एक नांस तो गली
 या ॥ आज हमारा सुभाग्य जोगे । अचित्त आप इहां मिलियारे ॥ व ॥ म ॥ ९ ॥
 निराम होइ परजाना धा । इण नररी से आया ॥ नचित जेतां आप दिग्याया । असि
 ही अणंद पाया हो ॥ या ॥ म ॥ १० ॥ तफल बेहनत सुख उज्वल आज । आप हमारा
 रीया । सर्व काज थया औरभो धानी । आप जोग्या सह सिद्धा हो ॥ व ॥ म ॥ ११ ॥
 अलंभो किन्ध्या आपने दजिं । न्ह प्रताक्ष दिग्यावे ॥ आप जेसाने इसां नहीं लाजे ।
 अल्प हम मन अचि हो ॥ व ॥ म ॥ १२ ॥ दारद्रीने चित्तमर्णा परे । आप हमारे कर आ-
 या ॥ भूग नर्दा कस्त्युं पहलां परे । घणी मेहनत थी पाया हो ॥ व ॥ म ॥ १३ ॥ सदन
 कह चुनकहां । न मन्ची । अलंभो स्तिस चडावुं ॥ कारण तुम जाण्यो नहीं जे वयो । ते मे
 राज जणावुं ॥ व ॥ म ॥ १४ ॥ तुम गया पीडे दिन धणो जोगे । मुज पूरो करवा
 काना ॥ सान पंड शब्द कृपमं पेढो । नरि लेखनी हामो हो ॥ व ॥ म ॥ १५ ॥ अचित्त मुज
 ने कोइ उडावो । एक दूजे चेटायो ॥ ते बटवुश नगन उड चाल्यो । जवंती चारे टायो हो
 ॥ व ॥ म ॥ १६ ॥ तिलां पण एक कोतक निपज्यो । एक कोतक जे जे ॥









भाग ॥ गणों में प्रवचन ॥ अभिर्षो करती कर्म ॥ ३ ॥ इस निश्चय मन धर्म करे ।
 गण प्रवचन धार ॥ निर्या तार्का पाठकी । करणो किरपो उपाचार ॥ ४ ॥ गार्धा
 रणो जोगा रस । देखा गद धिण टाय ॥ आगल हृदां ह्येसी किरयो । इस चिंतन घर्षा
 आय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ काल उ री ॥ ब्रण जारा ॥ सखी पणियां भरण कैसे जाणा ॥
 गद ॥ तुम सुर्णियों धान हसार्मा । नहीं कीजे विगर विचारी ॥ आं ॥ देवी सुन्दर रूप
 वणाह । गाल श्रुंगार सजाह जी । आह नेपुरेन क्षणकारी ॥ नहीं ॥ १ ॥ कुँवरों स-
 न्मुख टाई । माहे अंगो पांग देखाई जी ॥ बोलें अतिही करी लाचारी ॥ नहीं ॥
 २ ॥ हं विरह चंटी धी दाई । सीची संभोग जल करों राजी जी । विलसो सुख
 हृदा सुंभार्मा ॥ नहीं ॥ ३ ॥ तव कुँवर नरमांड बोलें । देवीकी खटपट खोलेंजी । थं
 धां तव अजनाग ॥ नहीं ॥ ४ ॥ महा दुर्गन्धी हस काया । यह उदारिक सन पाया
 नी । मल सुम अभुर्ना की पर्यार्मा ॥ नहीं ॥ ५ ॥ बली क्षिणिक भोगेछे सहारा । कि-
 म लज्जामा सन धारा जी । किन्चो देखा गया छो मोहारी ॥ नहीं ॥ ६ ॥ देवी कह
 ७ ॥ मन म सुभावं । नह अभुर्ना पणो निघारंजी । सगो वणावु देव जितारी ॥ नहीं ॥





१, नान्या मृग होय ॥ ४ ॥ दं दंडं जोगी न नमो। आया नज आगार ॥ ६८ साधना
 जाया । दृवा द्विध तैवार ॥ ५ ॥ ० ॥ टाल १२ ॥ भी ॥ लालना हो राम रूप कीधो
 भया ॥ यह ॥ श्रोना हो । पुण्य थकी इच्छित फले । अभी नव वस्तु पाय । श्रोता हो ।
 पुण्य शार्ता मदनंश्री । कार्य करता उमाय ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ १ ॥ कन्क सुन्दरी कर
 श्रो ॥ प्रं प्रकाशो श्यामा ॥ श्रो ॥ उताचल दीसे षणी । किहां जावा को काम ॥
 श्रो ॥ पुण्य ॥ २ ॥ यहां थी जोजन झाईजे । जावो पूनम शाम ॥ श्रो ॥ तव प्रेमे
 श्यां प्रमत्या । गतां क्षिणनो काम ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ गगन गामनी साधीये । वि-
 या न मृत्र पाम ॥ श्रो ॥ इच्छित स्थान पधारीये । नही देखीये दास ॥ श्रो ॥ पुण्य
 ॥ ४ ॥ विद्या गृही साधन करी । तत्क्षिण हुइ ते सिद्ध ॥ श्रो ॥ पुण्य पसांथी जीव
 न । दृश्य नही कोइ सिद्ध ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ पुनम को दिन आवीयो । शितम
 शर्मा काम ॥ श्रो ॥ विद्या प्रभावे निपाइयो । कनकावतीये विमान ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥
 ६ ॥ पंच घुमंट रत्नालणा ॥ सुवर्ण स्थंभ सुचंग ॥ श्रो ॥ पूतली या सजी नाचती ।
 शिव त्रिचिंत कहु रंग ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ सयनासन स्थान जुहुवा । भोजन जलका

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

10

कः । जाण्या पुण्य विद्याल ॥ १ ॥ पूढे मदन कुँवरी थकी । अन्य गुमा ने मणि ।
 मुज नाम किम सांभयो । कुँवरी कहे शरमाय ॥ २ ॥ राय आंण नें मंगलर्न ।
 यना तात ने पास ॥ खे मुज मन मोहीयो । सुणी गुण प्रकाश ॥ ३ ॥ निबंदा नान ५
 नय क्रियो । धीजा तात समान ॥ प्रनज्ञा ए माहरी । पुरसी श्री भगवान ॥ ॥
 जन हेवे आपणा । दुःख में मुख ते आय ॥ सहायतापण नेही कर । ५ ॥ सुल

५ । मदन दा पुण्य चडता दिन कार ॥ आं ॥ भद्र सेण पूढे तदा । अब कहे आप
 सगत ॥ कामात किम पाभीया । दो मास किहां वरतंत ॥ सु ॥ १ ॥ मदन कहे हिचे
 भंगनें । फहे न्हारा सहू हाल ॥ पुर पयठाण चीडो मद्यो । लेना कुँवरी निकल्प्या
 नेमाल ॥ सु ॥ २ ॥ भटक तो आयो तुम कने जी । तुमे वताइ सुक्त ॥ ते करवा
 न्हाले दल्यो दी । देवा वयण थी सुक्त ॥ सु ॥ ३ ॥ काम देव ने मंदिरे जी । कि
 र्वायां मिली मोंय ॥ तिण वली नीर मंगायियो । हुं आगे चलयो खुश होय ॥ सु ॥

दुःखान्तरात् ॥ १६ ॥ यामाण जाण एवा दूस्तरा जा । करा रहा झल हल ॥ वाइ वंठा
 माप ने र्जा । सील गुण धामल ॥ च ॥ १७ ॥ सह धडरै करे मदन की जी । अहो २
 गुण भंठार ॥ वः सही दुःख नष्ट किया । जे लाया राज कुंवार ॥ च ॥ १८ ॥ तंतले
 राजिंद आर्थाया जी । हर्ष निराण घुराय ॥ धीमांण आदी क्कटि देखी । अश्वर्य अतिही
 पाय ॥ च ॥ १९ ॥ ए ज्वैरी के देवता जी । पुण्य प्रवल नर एह ॥ इम मन में अनु
 मादता र्जा । परता अधिक केह ॥ च ॥ २० ॥ सह जन ने मध्य धी जी । आवे श्री
 नृपाल ॥ अमोल हर्षानंदकी ए । भाखी पखरे ढाल ॥ च ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ नर
 धर आया देस के । मदन पणा हर्षाय ॥ दोडी सामे आचीया । नमिया लुली २ पाय
 ॥ १ ॥ राजा वंटे लगार्थाया । आणी अधिक केह ॥ धन्य ज्वैरी तुम भणी । कियो
 उपकार अहेह ॥ २ ॥ अहो नरोशिर सेहता । सूर वीर सिरदार ॥ असक्य कार्य तुम
 कियो । दुषो मुजपे अमार ॥ ३ ॥ कर जोडी मदन भणे । मुज में दाकी न कोय ॥
 आप कृपा प्रसाद धी । सह सह कामा होय ॥ ४ ॥ सेवक योग्य सेवा करी । नहीं इपा
 म अमार ॥ सुर्णा नृपार्दा हरिंधर । धन्य २ रखा उच्चार ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ङाल १६ मी ॥
 र्था जिन अजिस नंसु जय फारी ॥ सह ॥ धन्य २ मदन उच्चार । सह । जन । कर्ण

विह हियो दर्शाय जी ॥ धन्य ॥ २ ॥ प्रेमोत्सुक नप लीनी खोला म । बुचकारी धर
 प्रद जी ॥ आज सकल दिन वाइ हस छे । तुज दीठां पाया क्षेमजी ॥ धन्य ॥ ३ ॥
 रूपवर्ना कहं आप विरह थी । हुं तड फडती दिन रेन जी । मोटो उपकार जवैरी को
 छ । मिलायी मुज ने सेण जी ॥ धन्य ॥ ४ ॥ मुज काजे यां दुःख सहो धरणी । कह
 र्मा नहु भद्र मंण जी । अब जाउं माता जी पास । दरसेण तरसे नेण जी ॥ धन्य ॥
 ५ ॥ उटीं ननुशिण आइ जननी कने । प्रेमे लागी पाय जी । उटाइ ली खोलः माहीं
 । प्रेमे हिये चिपकाय जी ॥ धन्य ॥ ६ ॥ नेणा नीर नहांखंती बोले । करी अचंभो मात
 र्जा । थंडा मांनरे माइ वाइ । सुखयो सहु गात जी ॥ धन्य ॥ ७ ॥ किहां किमगाइ
 रर्दा किहां किम । सहो दीसे धरणी दुःख जी ॥ कुंवरी कहे माजी मुज दुःखडा । किम
 कह वाचं मुज जी ॥ धन्य ॥ ८ ॥ उडा मंखसे लेगयो जोगी । राखी महागिरी सांय
 र्जा ॥ अहां निश एकली झुरती रहती ॥ ते पापी नित्य सताय जी ॥ धन्य ॥ ९ ॥
 धन्य २ जवैरी र्जा तांइ । मुज काज भन्या प्रदेशजी ॥ महा कष्ट सहै सुखी करी मुज ॥ हुं

चर्मा न भङ्गं रमा जी ॥ धन्य ॥ १० ॥ सहेल्या घेरी वाइ ने आइ ॥ मयुर वचने
 धन्य माय जी । राजन गेले हर्षी होइ । गत दुःख दूर कराय जी ॥ धन्य ॥ ११ ॥ शुभ
 भाळ्य आवापेर नारायति । सहृ सजाइ सजाय जी ॥ पदण मयंगल मदन ने भूपत । वेढा
 आभर गाव जी ॥ धन्य ॥ १२ ॥ मध्य घजार होइने चाल्या । देखण प्रजा उमाय जी
 ॥ भाग्य हाट हदेल, चांदणी । नर नांरां थी भराय जी ॥ धन्य ॥ १३ ॥ मदन नणा
 भुजा सहृ जन भावे । राधास नरवर धीर जी । महा दीकट काम केसो उठाये । तें
 राह । घेवायाघे सीर जी ॥ धन्य ॥ १४ ॥ उत्तर्पा आइ राज सभा में । सिंहांसण वेढा
 राय जी ॥ मदन रे. खेर्पा पास वेढायो । अरी गया शरमाय जी ॥ धन्य ॥ १५ ॥
 भ्रम मना टाभ ठिकारणें देठी । महीला पडदा माय जी भद्रसेण उभो होइ वोलि ।
 भुज । सहृ जिन लाय जी ॥ धन्य ॥ १६ ॥ लक्ष्य धांतक जेवरी जी को । जे हुर्यो पट
 भाग माय जी ॥ सुगवा जेसी यात हे साहेव । तिण थी कह्या चाय जी ॥ धन्य ॥
 भद्र भरण कर एकद्वना थी । जोगी विद्या प्रभाव जी ॥ उटा लेगयो रुपवतीने
 भुजा भ राई। डिपाय जी ॥ धन्य ॥ १८ ॥ मदन जी धांडो प्रयो जारे । में गयो

१९ ॥ सुष्वा सुष्वा कर्हा जभरा न । स नया आन भाल जी ॥ वल रमजनाह सुरय गायो
 । राजा हुया परण्या नार जी ॥ धन्य ॥ २० ॥ बड ने धर्टा उजगया दूरा । सरतो
 मनुव्या झाडाय जी । करामती जोगी जिलिया । सुवर्ण पुरुष निपाय जी ॥ धन्य ॥
 २१ ॥ पाडा आया विद्या पाया । विमाण केरीगत जी ॥ हम ने छोडाय जोगी हराया
 । इहां लाया देवो सत जी ॥ धन्य ॥ २२ ॥ चमत्कार सह हृदय पाया । सुणी मदन
 विरनन जी ॥ धन्य झार सह मुख्य धी निकल्या । ए नर महा पुण्यवंत जी ॥ धन्य ॥ २३ ॥
 वर्दा वथाह दर्ना मीटाह । वृत्य जय २ कार जी ॥ टाल सोलनी कहे अमोल्य ।
 पंचम नंद महार जी ॥ धन्य ॥ २४ ॥ ॐ ॥ दुहां ॥ शभा वरकास दुइ तदा । नपत
 आज्ञा त्ये ॥ आया मदन दुकान निज । सत्कार सह देय ॥ १ ॥ सुर्ना मार्दा संतांधी
 गा । मह जन पाया सुख ॥ मालक पुण्यवंत पार्थिया । धन्य २ कहे सुख ॥ २ ॥ वकु
 र्मान देह मदनजी ॥ कर्म कर सह संतोष ॥ गुण सुन्दरीने मिलण । उटीया मंगल पाप
 ॥ ३ ॥ आया हवेली आपणी । नफर दियो सत्कार ॥ धन वचने संतोष ने । पुछा
 न्ह मननार ॥ ४ ॥ जिस आंण छेडी गया । तिमही सब सुख मांय ॥ वंदोवस्त पुका
 गा । जग जगी माल पाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ दहा ११ मी ॥ इंदारे आंवा आंवलीरे ॥ यह ॥

कं प काज ॥ ३ ॥ आइ हवेली ने विषे । मूर्ख रुप घणाय ॥ हैरता रमता कुंबरी कन
 । पडया मदन जै जाय ॥ ३ ॥ मिथ्या लापे गप्य थी । सुशी कियो तस मन ॥ फिर
 कह भ्राज मुज काम छे । आस्युं काल के दिन ॥ ४ ॥ शुण सुन्दरी कहें मूरल्या । धार
 छ किस्यो काज ॥ तब मूर्ख कहें सांभलो । कहूं हूं तजेन लाज ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल ३ जी
 ॥ कर्म नर्णो कथनी रे किहां जाइने कहूं ॥ यह ॥ इणहीज नगरिरे मांये रहे । प्रभुन
 धन नाम एक सहू कारजो ॥ धन धान घणो छे तस परने विषे । राजा परजा सहू देव
 सत्कार जो ॥ सुणियो मदन जी चरित्र करे छे केहवा ॥ आं ॥ मदन नामें नंवन छ एक
 छ तहन । रूपनेतो अतिघणो सोभाय जो ॥ बोलणरी कुछ धुल्ल नहीं छे तहन । ति-
 णर्था प्रिति धरी कोइ न बोलाय जो ॥ स ॥ २ ॥ मंत्रयादिये हरण करी राय पुर्खा का
 । तिणर्था उपज्यो राजा प्रजाने खास जो ॥ धडिों कर्यो पुबी लाये जे माहेरी ॥ परणा
 र्थ इ नही कुबरो तास जो ॥ सु ॥ ३ ॥ सेट पुल न मदन वडिओ क्षर्कियो । पर देशे कि-
 र महन कर्यो घणो दुःख जो ॥ सोधी लायो राय पुर्खा प्रयास थी । तिणर्था पाया राजा
 परजा सुख जो ॥ ४ ॥ वचनानु सारे परणाये राय पुर्खा का । दोनो परसे मडीयो हर्ष

हुकम जो ॥ चौदघर्णा ने परणी लावू लाडी भर्णा । आज रातरा मजा देवांगा हम जो
 ॥ सु ॥ १३ ॥ इम कही करे हंसे तेतो घर्णा । गुण सुन्दरी ने हांसी आइ अपार जो
 मर्ग्यो मार झूटी गणा ए सहू । कोइ तमाशो जेवण जावा विचार जो ॥ सु ॥ १४ ॥
 लग्न लक्षण तो फटी कोडी जिस्त नही । होवा जावे सेट सुत धी अधिक जो ॥ लपरा-
 या सर्ग्यो ए इहां रेइ करी ! मुज भरमावा वात चर्णावे टीक जो ॥ सु ॥ १५ ॥ कहे
 मदन ने जाथारी इछा जिहां । पण मत जाजे दूरो ग्राम ने छोड जो । प्रांत येगो आज
 भोजनने इहां । झूट तणी मत लगावे अंग खांड जो ॥ सु ॥ १६ ॥ सुणी मदन जी खु-
 री हुचान कूदता । उत्तर्या मेडी नीचे तिणही वार जो ॥ चिते कला तो जमी छे पूरी
 महारी । अजु लगण नही ओलखे एह लगार जो ॥ सु ॥ १७ ॥ भेष बदल ने आया चल
 इकान पं । लगया अपणे कास करण ने मांघ जो ॥ टाल दूसरि कही ए छटा खंडकी ।
 कह अमोलव कपट किम प्रगटाय जो ॥ सु ॥ १८ ॥ ० ॥ दुहा ॥ मदन आपो छिपा-
 वा । रवी पश्चिम छिपाय ॥ अन्यकारके व्यापला । दी रोदानी झलकाय ॥ १ ॥ दुखहा
 वणिपा मदनजी । सर्जाया सहू सिणगार ॥ रयण सुगट झग मग करे । मोड जरी जर-
 तार ॥ २ ॥ की लंगी तुरी द्वार । कुंडल चोकरा कान ॥ ३ ॥ ॥

योनिमा त्रयो राजान ॥ ४ ॥ उत्तरायणं वेदीया । छत्र चमर हुलाय ॥ औपसा
 इन्द्र जिम्मा । रूप गुणे सोभाय ॥ ५ ॥ ॐ टाल ३ जी ॥ आवे वर लटकं तो ॥
 धनानंद मद्यराज ॥ यह ॥ आवे वर गुणवंतो । मदनजी समान रूप गुण सोहंतो ॥ आं ॥
 गय गणगत्या रुढ हुवा जी । सोहे इन्द्र समान ॥ वरोवरीरा सोभता जी । जानी
 मिन, गर्जा जान ॥ आ ॥ १ ॥ केह गज गाजी रथे । केह मुख पाते हे स्वार ॥
 पायग, निणगारिया जी । जाणे अमर अवतार ॥ आ ॥ २ ॥ वन्ही रोशनी ते जधी
 । निणयो उयो भान ॥ नाच रंग वहू विधना । वंदी जन गावे गान ॥ आं ॥
 ॥ ५ ॥ अगम नर परवर्षा जी । चाल्या मध्य वजार ॥ चालो रायवर जोइये । इम
 ॥ ५ ॥ नरनार ॥ आं ॥ ४ ॥ टांती गुण जो मदन का । सहू जन जनी कहे हे
 ॥ ५ ॥ गय मन्दरी सी भायवंतनी । जग नारी नहीं अन्य ॥ आ ॥ ५ ॥ इम अनुक
 ॥ ५ ॥ आया । गुण मुन्दी मेहल पास । ते पण उभी थी गोख में फांइ । दखण
 ॥ ५ ॥ आं ॥ ६ ॥ तिकांड आइ उभा रखा जी । करता सह जन खेल ॥

गामं मर्द । मां मृतं पृह ॥ इम हिया ऐ निश्चय कियो । पनां मयं नही संदेह ॥ आ ॥
 ८ ॥ अहा सर दिव्य पहनो । वंठयो कियो हंरीयार ॥ अहा मोहनी मूर्त्ती ऐहनी ।
 अहा मन्ना सिणगार ॥ आं ॥ ९ ॥ साची प् पणो मर्हा जी । इहां राय ही धीय ।
 ना विमा मूर्त्त जाणिये । अती अश्रय उपजे जीय ॥ आ ॥ १० ॥ देखो जेव्हे नही मुज
 मर्णा जी । वंटां मुख फेलाय ॥ आज कपट से जाणियो । मुज आगल दोग वणाय ॥
 आ ॥ ११ ॥ जय आवे मुज साम ने प् । तव वणं कंगाल ॥ गेलीं वानां वणाय ने ।
 भुमने उपजने जंगाल ॥ आ ॥ १२ ॥ आप वण वंटा राजर्तार । मुज न प्रकाउयो
 भः ॥ न्हें भांडं परणार्त्तिया । हाहा देखो दनां प् नेवद ॥ आं ॥ १३ ॥ हुंनो जाण नी
 मूर्त्ता छ । पनां गुण भंडार ॥ सय कला गुण मरु धो अथका । हुं चूकी निराधार ॥
 आ ॥ १४ ॥ तयो परपंच इण टेटयी । मुज लायो इहां भगवाय ॥ वंटाइ छे केवमा
 । भ विरग्यो लियो अन्नाय ॥ आ ॥ १६ ॥ आज दान करो मुज कले जी ॥ सेठ की
 गुण भजन ॥ राय मूना लायो इंडने । नेतो सत्य इणारो कथन ॥ आं ॥ १७ ॥ कुटम्ब
 म ॥ ११ कट मयो । इण लगाणा छे मांस । ते सव करामात प्दनी छे । आजं पडव्यो
 पजाजा ॥ अर ॥

निदान आबे लगार ॥ भवन चरिख संभारीने । पत्तो अधर्य करे उषार ॥ आं ॥ २० ॥
प्रभाने तो आवणी । तव करस्युं पुरो फज्जित ॥ दिण २ उट्ठने जोधती । निधा पुरी
दांवे किण गिन ॥ आं ॥ २१ ॥ दिवे वरात मदन तणी जी । पहेंती तौरण जाय ॥
मायु पयाड तांय लिया । और कीधा सह उषाय ॥ आं ॥ २२ ॥ आरण कारण सांच-
र्ग । र्गना चंपनी जोंड मिलाय ॥ अमोल ढाल तीजी कही । जोधो पुष्य तणा पसाय
॥ आ ॥ २३ ॥ ० ॥ दृष्टा ॥ कंन्या दान तणे विधे । दीधो आधो राज ॥ हय गय रथ
गायक, मर्ही । राज के शुको साज ॥ १ ॥ संतोप्या सह लोकने । योग्य करि सत्कार ॥
ध्यान आया संल भे । हीयं उभरा ते प्यार ॥ २ ॥ आलंदे निशी अतिक्रमी । प्रगटि
गा दिनकार ॥ चंदी जन वरदावली । सुणी ने जाया कुंवार ॥ ३ ॥ जाचक नं संतोपी
गा । र्गया जन वपवहार ॥ भुची रुद्र भोजन करी । करे मदन विचार ॥ ४ ॥ राते
तागा पुत्र भणी । दिज्यो उपज्यो तस यन ॥ दिवे मजा मिलिये जह । इस करी चिं-
नना ॥ ५ ॥ श्री ॥ ढाल ५ धी ॥ ओलंभे मत गीजो ॥ यह ॥ ओलंभो खरो दर्जरे
भजन ओं ॥ आं ॥ महर पुण्यधत मदन ते वारे । आया हवेली महारि ॥ सूर्वको नीचे

ॐ ॥ ५ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ ६ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ ७ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ ८ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ ९ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ १० ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ ११ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ १२ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ १३ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

ॐ ॥ १४ ॥ इन्द्र २ इमना उपर वर्द्धाया

॥७॥ टाल ५ भा ॥ सपुत्रान पदना ॥ १ ॥ निज देश जाघा चित
 मज हांचे । राजाजी पास आयेजी ॥ प्रेम नभी विचार दरदाचे । निज देश जाघा चित
 हांचेजी ॥ म ॥ १ ॥ इम सुणी राजाजी करमाये । जावण चित किम चाइजी ॥ इहां
 रांग करं दृच्छित कासा ॥ कृण हयो तुमे दुःख दाइ जी ॥ म ॥ २ ॥ आभी आप
 कृपाका हायां । दुःख नही मुजने लगारोजी ॥ स्वजन मिलण
 अति चिन चहावे ॥ ते पण करे हे संभारोजी ॥ म ॥ ३ ॥ स्वजन थी मिल पाडोआंसु
 । थंडाह कालके माइजी । अन्य कार्य मुज मार्गे वहुला । दो आज्ञा हित लाइजी
 ॥ म ॥ ४ ॥ अतिहट जाणी दीनी आज्ञा । सेहलां माही आया जी ॥ रुप सुंदरी से
 कं मयं ॥ हुं दंश जावुं काम सायाजी ॥ म ॥ ५ ॥ नेणा श्रुत हो कहे प्रेमला । या
 नंर्या चान मुणाइजी ॥ किस्यो देश आपरो नही जाण । या किस्मी मन आइ जी
 ॥ म ॥ ६ ॥ मदन कहे हुं हुं प्रदेशी । वेपार काजे आयाजी ॥ माता पितादी सहू हे
 नारं । इहां सहू सुख पाया जी ॥ म ॥ ७ ॥ मिलजारी मुज उमंग वणेरी । जर
 पक्याग जाम्युं जी ॥ तुम इहां सुख माहे रहींये । थोडाही दिन माहे आस्युंजी ॥ म ॥
 ८ ॥ अति अग्रह जावणरो जाणा ॥ त्रिया कहे कर जोडीजी । भे पण आपरे साथ

॥ कर्म मुक्त दुःख असमान्नी ॥ कृपा करीने दुःख समाधा । धनसा ॥
 ॥ १० ॥ सुवर्ण रूपा को कंके नाणो । जोइ सोर सोनानी ॥
 ॥ नदीव जिम लेवे मानी ॥ म ॥ १० ॥
 ॥ न निर्भानी होव रुप्या ॥ इम कीर्त
 ॥ करे खीरानी ॥ निमित्त प्रकाश करे केइ आगे । केइ
 ॥ साक्षात देव
 ॥ गुण खानी ॥ ११ ॥ निर्लोभी गुण
 ॥ भूत
 ॥ न लेवे । निर्लोभी गुण
 ॥ १२ ॥ दोनोइ आया यथा विधी
 ॥ १३ ॥
 ॥ आया कोइ ब्रह्मज्ञानी ॥ भूत
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥ राजार्जी पण सुणी परसंस्या । आया
 ॥ १६ ॥
 ॥ हस कर आया देखानी । वात भूप ने मन मानी ॥ म ॥ १७ ॥
 ॥ कहु गया तेहि ए जानी ॥ ब्रह्मचारी मुज वात वता
 ॥ १८ ॥
 ॥ न पण मन हर्षानी ॥ म ॥ १९ ॥ दोनोइ आया यथा विधी
 ॥ २० ॥
 ॥ तज पुंज्य जोगी जो हर्षया । ब्रह्मचारी पहचानी । तजी
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥ द्रव्यसनी द्रव ध्यान लगायो । प्रभा नहीं जोवानी ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ कर जोई नरमानी । जाणं हिवे करे मेहरवानी ॥ म ॥ २४ ॥
 ॥ राजा सन्मुख जोइ बोले । हस

ननु ज्ञानि जी । ज्ञानि गुणी सुख कार ॥ १ ॥ मांस घणा धीती गवा । प्यारी
 ननु ज्ञानि जी ॥ नेह तो अत्र भिलावसी । ब्रह्मचारी संयोग ॥ २ ॥ हाहा धन्य दिपस
 गद्ग । इता मन अति उमंगाय ॥ क्षिण जावे वर्षा समी । खान पान
 विमगाय ॥ ३ ॥ अप्रमादी सुभटने । नदी कंड वेढाय ॥ सावध रही
 ज्ञाना गद्ग । रक्त द्रव्य आय ॥ ४ ॥ नीकाली तलक्षिण लइ । दीजां वधाइ मुज
 ॥ ताजिद द्वा करी । देस्युं द्रव्य वहू तुज ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ताल ७ मी ॥ श्री अभीनंदन
 द्वाय नैकाल ॥ यह ॥ हिचे मदनजी निशा पड्याधी । कोइ पास नही जेयजी ॥ मंत्र
 माधन कां विराम करीने । पुरमें गुप्त चल्या सोय जी ॥ हिचे ॥ ६ ॥ सागे मदनको रूप
 बनाइ । पद्म मार्ता पर आदजी ॥ खाती खानण ने पंगे लागी । पोतानो नाम जणाय
 नैकाल ॥ ७ ॥ अचलक रादनने जोइ । दंपती अश्वर्य पायजी ॥ प्रेमें उभराइ गोद
 चरणाय ॥ ८ ॥ परदा आश्रु वहापजी ॥ हिचे ॥ ३ ॥ अहो बच्छ अश्वी किहांधी जाया ।
 विरामना उना कालजी । थारं थियोने हम दुःख पाया । चुंगे मोहणी झालजी ॥ हिचे ॥
 ॥ ९ ॥ गद्ग नां नुज इहाइ रहीयो । चोकर कीधी अपार जी ॥ पण तुज पत्ता किहां

में वणादं । देव शक्त प्रभाव जीं ॥ साटा कष्ट लह्न वपाय ॥ १५ ॥ इच्छित
 ॥ हिवे ॥ १५ ॥ पट जडनरी विध वताइ । दीनो मदन ने संभलाय जी ॥ इच्छित
 यो मदन हर्षया । मन सानी वस्त पाय जी ॥ हिवे ॥ १६ ॥ खाती खतणरे पाय प्र-
 णया । कहे मिलभुं पाछो आय जी ॥ हिवणां काम उतावल को मुज । शिष चल
 आं जाली ॥ हिवे ॥ १७ ॥ दैन्य पडावने स्थाने आया । सुन्दरी भणी जगायजी ॥
 नमर्का उर्दा देव मदनश्वर । आदर दे हर्षायजी ॥ हिवे ॥ १८ ॥ इण बेला किहां थी
 पार्या । मदन कहे मुणा वात जी ॥ सह उपाय करी हूं आयो । तुम सावित्र घणा च-
 तानर्ग ॥ हिवे ॥ १९ ॥ वेढो चम अन्वी इण खंभ माही । देवु में नदी भूं वहायजी ।
 नान नमारा नरे वेढा । कहाडी लेसी तुम तांय जी ॥ हिवे ॥ २० ॥ पूछ तो कहजो
 य दरा मुज । गार्वा घणी सुख सांय जी ॥ हूं सूती थी जागी इहां आइ । और न
 न. कंय ॥ ॥ हिवे ॥ २१ ॥ सह विद्या भली पर समजाइ । दीना खंभेस सोवायजी ॥
 कया मुज हू देव करमात । कुटंब मिलण ने उमायजी ॥ हिवे ॥ २२ ॥ गंभ भीडी-
 ग, कया गजिन तय । मरीता ने तट आयजी ॥ युके वहाइ दीयो ते तत्क्षिणे । असा

गिणनीसिं आइ जी ॥ बहु मांस भरमाइ । ता भा भाट कायाइ । आनंदे दिन मुज-
 ड । तंमा पति पयाइ ॥ बुद्ध ॥ २० ॥ निज २ स्थाने सह सुखेइ । आनंदे दिन मुज-
 १ रंजी । वाट जमाइनी जेव । डाल आठमी होवे । अमोल पूण्य थी सोहवे । खन्ड छ-
 २ रं मांवे ॥ बुद्ध ॥ २१ ॥ ० ॥ दुहा ॥ पुरमें पसरी वरता । साक्षात भगवान ॥ ब्रह्म-
 ३ चरिनी आनीया । त्रिकाल का जान ॥ १ ॥ बुलाइ राय पुढीने । वर्ष दिवसेने मांय ॥
 ४ र्त्ता बनाया जमाइने । ते पण रहसी आय ॥ २ ॥ तिणही पुर मही वसे । धन्ना नामे
 ५ गाहा ॥ रंभा संजरी तस घरे । रहे करी निर्वाह ॥ ३ ॥ तिण पण सुणी ए वारता ।
 ६ मन्म अति उमंगाय ॥ पूछूं ब्रह्म ज्ञानी भणी । देमुज पती वताय ॥ ४ ॥ अवसर ए
 ७ उत्तम मिल्यो ॥ जोबू महारा भाग ॥ इम चिंती अइ तुरत । धन्ना गाहा पण लाग ॥ ५
 ८ ॥ ॥ डाल १, मी ॥ अरिक्का के मन्दिर के मांय ॥ यह ॥ पूर्व पुण्य संयोग । अचिं-
 ९ त्यां जोग जमे ॥ आं ॥ रंभा संजरी आइ धन्ना जी पोसे । कर जोडी ने नमे ॥ अचिंत्यो
 १० ॥ १ ॥ भं सुण्यो तात जी ज्ञानी यहां आया । यक्ष देवालय रमें ॥ अचिं ॥ २ ॥ वि-
 ११ कालकी वात प्रकारो । मिलवे जे मनगमे ॥ अचिं ॥ ३ ॥ कृपा करी मुज तिहांले चा-

॥ २४ ॥ अहं २ शक्तिं महं भुजं वाता । इमं कभी परंवारं नमं ॥ अ ॥ २५ ॥ मान्दा
 एव र किंभं भुजं उपर । इमं कक्षता गया निजं धंभं ॥ अ ॥ २६ ॥ परस्वुं मुजं प्राणं-
 वागं शक्तिं । रंभा रंभं आणं रंभं ॥ अ ॥ २७ ॥ अणं शक्तिं मित्तां पहली परणी । स
 रनं मनं रंभं ॥ अ ॥ २८ ॥ टालं एव मन्डं नवंभं सवुरी । आइ अमोलं सहं रमे
 ॥ अ ॥ २९ ॥ ८ ॥ इता ॥ मदनं सुद्धं परंपंच धीं । जमायां सहं कामं ॥ हिंवे तं सहं
 गुणं । अशीं मनं रंभं टामं ॥ १ ॥ चमत्कारं सहं ए लकीं । अश्वर्यं पाया अपारं ॥ नर
 शक्तिं शक्तिं शक्तिं । अरयां रंभंवारं ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी कहे सुली रहो । हम जावां निज
 वागं ॥ अरुणां शक्तिं उरुवा । सहं रता अश्वर्यं पासं ॥ ३ ॥ देव वेंकुंडं सिधाइं या ।
 इमं वा रंभं पुषारं ॥ गुण उरुवंभं परं गया । परतीं वातं तं वारं ॥ ४ ॥ उत्तर्यां मदनं
 शक्तिं वनं शक्तिं । भुजं अरुपं वणासं ॥ आयां निजं शैल्यां शिपे । जो सहं जनं हर्षाय
 ॥ ५ ॥ ५ ॥ टालं १० भीं ॥ कौनं शिदांसं आपे पवनं सुतं ॥ यहं ॥ देखीं सब सुख
 शक्तिं वा मदनं नृपं शैल्यां ॥ अ ॥ शैल्यां मजाइ चले मदनजी । जयं नगारं सुराय ॥

१०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

॥ सुखं र वृद्धं रक्षाप ॥ बाल वसतिं खन्द छन्दे की । ऋषि अयोगिक गये हो ॥ म ॥ १११ ॥
 ॥ ७ ॥ बुद्धा ॥ धरासाहा सुर्णा धारता । पराया राज कुंवार ॥ रंभा मंजरी ने कंधो । ॥
 गुण हर्ष अपर ॥ १ ॥ दासमी कर जोड़ी भणे । आप लं चालो साथ ॥ कोइ चुकी श्री-
 श्री परी । मिटायां मुम नाथ ॥ २ ॥ धरा कहे चालो द्विषे । कस्त्युं शकें सहाय ॥ श्रीं
 धार धरती परी । कही ब्रह्मचारी थाये ॥ ३ ॥ अंजन मंजन कर सज्या । तन सोले धुंगार
 ॥ धारासाहा साथे चाली । शिवका हुइ सवार ॥ ४ ॥ खास मेहल मदन तणो । आया ति
 लोने चाल ॥ गुण सुन्दरी धनांस सुण । अचंभी हुइ खुशाल ॥ ५ ॥ ७ ॥ दाल ११ श्री ॥ हे
 रथा फो ॥ धर् धार जिनेभर गौतम ने कहे ॥ यह ॥ मदन यत्नायजी, सिवते आवीया ॥
 रती निगने र्म, अधरं पार्वीया ॥ चाल ॥ पाइ अधरं पूछे सेठसे । किणरी नार किम
 लार्थया ॥ कात्या फांइ सरं भालो । कित्यो तुम मन चार्थीया ॥ सेठ कहे प आप पत्नी
 म-र बेसन आपोपे ॥ निदंरि चाला सरण दीजे । ज्युंनो प्रेम पेडार्णीये ॥ १ ॥ तव ते
 रम अ का जोड़ी नर्मा ॥ हूं आप दार्मा जी. भलो किम गर्मा ॥ चाल ॥ गमी किम
 मलो उा भर्मा । भलद चण्ड उर आर्थाया ॥ महेंद्र पुरके मेहल गांही । मंथवं लग्न लगार्थी
 दा ॥ शाय विपोग भे कोय रश्मन । दण हाण खाइ पदी । तुम पुण्य आधुबल जोणे ।

आजा बुद्ध छ भय्य धरि ॥ ६ ॥ रावण कह मय, मानि निद्रा तिहां गयो ॥ सुर्गा हूकी
 परण्या नही ॥ चाल ॥ सही परणयो राज पुकी । हुकी निद्रा तिहां गयो ॥ सुर्गा हूकी
 नाइ में । जोतां पतो में न लखो ॥ अथाग जले किस जगरे । ए अथर्य अति मन
 मारं ॥ किस हुवे तूं रंभा मंजरी । ओलख वचन तूं थारं ॥ ३ ॥ काइ प्रयोग तूं
 जार्णा मुज बातडी ॥ आवी इहां तु मोह कंदे पडी ॥ चाल ॥ मोह कंद मुज न्हारया
 जाय । परर्या त्याग मुज भणी ॥ वृत्त भंगे नहीं न्हारो । किस वरं हूं तुज भणी ॥
 निण र्था जा तुज स्थान कं । इण छल में हूं आरसूं नहीं । इम वपण सुण कथना ।
 रंभा नण अंश्रुं वही ॥ ४ ॥ सत्य वचन नाथ, आव छो सतवंतं ॥ हूं निश्चय नहीं, छली
 नउं अना ॥ चाल ॥ लखूं अंत हूं छली केहना । इसी विसी नहीं जाणीये ॥ वैम आप
 या रं कया । कहुं र्वातो कहाणीये ॥ जिम उगरो इण दोहर आइ । पाइ प्यारा प्राणेश्वर
 यम नर्णा मील महीमां । आप आंग उच्चरं ॥ ५ ॥ आप गयार्था, में निद्रावस भइ ॥ दिन
 रं नदंयां न भुद्ध तहर्ना लही ॥ चाल ॥ लही भुद्धी थाय माता । लक्षण देखी
 मांहरा ॥ काइ बुलाइ मात तात ने । देखाया ने सहू वग ॥ रोस भराणी राणी राणी
 टंरिा जगाइ मुज भणी ॥ नाम टास तव पुञ्जियो । दीवी धमकी अति घणी

॥ वरुणा नम आचार, धर्म क्रियो वहे ॥ चाल ॥ वहे धर्म प्रकारियो नव नेकोह उत्तम
 हम् ॥ अमा सोभारप, शृंगार नित्य नव । भाग अर्भनव नर मे ॥ सोटा पुण्य हे था-
 परा, गेहर्था श्मोर् कर चर्डी ॥ सुर्णा वदण इम नेहना । हेनां भोग भागर पर्डी ॥ १७
 ॥ नर्दा भावु हे, पर कर्दा धारो ॥ अर्न नितक कर्म, न चर्हाये माहरे ॥ चाल ॥ माहारे
 र मूख नर्दा चर्हाये । ष धी नो मर्णा भला ॥ इम कर्दा हे चर्दा रोनी । ते कहे चर्दा
 चेला ॥ कर धर्मा नव वेनी मुजन । मया पशु ज्य वजात मे ॥ जोवे कर्म विद्वेण ।
 भ इम पर्दा देव धारमे ॥ १८ ॥ भे मन ममयो जा, नव नवकारन ॥ जो निर्भल जाल,
 ना कां मान ॥ चाल ॥ मार करा नामण मूर्ता । इम चिनवनां माहायक भया ॥ अनेक
 माप विचरुहुइ मुज चापेव चर्दा रहा ॥ ररण धर्मा र्दा नर्दा मे । वेस्या मह अन्तर्गा ॥ जोकर
 परणा माहा गा ॥ नम मांष विचरु डंक दह ॥ १९ ॥ द्यार्पा झणपाट, महु वेस्या
 नन ॥ जंवल भागा अश्वये धर्मा मेने । चाल ॥ अश्वये पा लांक जो नमाशा
 र्दा रगे निर्णार पणा ॥ तेनले ए गेट आड । दुर्दा पुर्दा हमतणी ॥ वाड
 र माहरे । हे रावस्युं धर्दा करी ॥ जैन धर्मा श्रावक हे हे । करस्युं

र्था । तस्मात्त दीयां सुजनं धर्मा ॥ सर्वं तस्मै नमः सुख पादः । एकं ध्याकर रथा आपत्ता ॥
 तस्मै नमः जोग इत्यां । ब्रह्मचारि एक आर्थाया । अनुभव ज्ञान तेषां प्रसादः । आप
 र्था धर्मार्थाया ॥ १० ॥ पञ्चदश पुरपत्त, जसाह आवसो ॥ इहां राजभर, धृया परणा
 र्था ॥ गाल ॥ परणनी तंही पनी थारा । नाम पण बलावीयो ॥ निश्चय आयो सुजं
 र्था ॥ सन धर्मा र्थायां ॥ नार्थ संत पर जावती । आज नीट दर्शन पाव्याया ॥
 र्था ॥ सन सत्त्व सत्त्वा आह । तह संगल वरतावीया ॥ २० ॥ न कही साहीवा, वीती
 र्था ॥ सुद न समजोती, सागतं हं लहं ॥ चाल ॥ हूं लहं सोगन निश्चय कांज ।
 र्था संदर्भा तान नं ॥ जाण आपकी राजा राव्यां । संतापा सुज गात ने ॥ टाल एक
 र्था संदर्भा ॥ आंल भ्रषि क्षण पर कहं ॥ रंभा संजरी कां चरिल । सुणी सदन
 र्था संदर्भा ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ सदन कहं अहो भामणी । साची थाणी वात ॥
 र्था संदर्भा पर धिये । अयां सुख निज गात ॥ १ ॥ चारिर्था परणी तुमं । अंग सु
 र्था संदर्भा ॥ तुम पिना नं सन्मुख । पुनः परण स्थं तुज ॥ २ ॥ प्रमत्ता धरं प
 र्था संदर्भा ॥ धाम ॥ सदन कहं फीकर तजो । मिते पूरी सह हाम ॥ ३ ॥

अथ अथार आथर ॥ धीमाह अथ सुत ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

निजा ॥ मा ॥ न उपसर्गं किंम उच्यते । अक्षयं मुञ्ज न सवाय धी ॥ सा ॥ भ ॥ १५ ॥
 लला नः नज्यकार धी । कर्षधी सुर मुञ्ज सार हो ॥ सा ॥ उडाइ मूकी वन विषे । चोर
 न मया न गार हो ॥ सा ॥ भ ॥ १६ ॥ तिण धेंची वजार भें । तव राखी एक सेट
 हा ॥ सा ॥ निजं मिन्या चालेश्वरं ॥ आण पुगाइ देट हो ॥ सा ॥ भ ॥ १८ ॥ विसा
 धणं ॥ १२ मर्णा ॥ नंगा दृष्टी जल धार हो ॥ सा ॥ धन्य २ सती छे तुज भणी । स-
 न धीं पन्था मह पार हो ॥ सा ॥ भ ॥ १९ ॥ हिये जाइ हूं रायजीं कने । देवूं वधाइ
 मर गी ॥ सा ॥ नव परिवारं वधावया । सामा आसी तेह हा ॥ सा ॥ भ ॥ २० ॥
 नान मीन चार्थ्या । पुर भणां कांट्याल हो ॥ सा ॥ अमोल पुण्यवंत मदनकी । हुइ
 मर्षी काल हा ॥ सा ॥ भ ॥ २१ ॥ हुहा ॥ तव तिण महेन्द्र पुरी विषे । राज सभा
 न भणार ॥ गता परता सुस्त हो । चिंता करे अपार ॥ १ ॥ अचित्य उपसर्ग आवीयो ।
 ११ . नभार अन्याय ॥ शत्रु छोड्यां जीवतो । तिणरा फल प्रगटाय ॥ २ ॥ इत्यादी
 १२ . भना । बंटक इत्यय उटंत ॥ तेतले हृषित वदनधी । कांट्याल आवंत ॥ ३ ॥ प्र-
 नां नदी नरनं । नृप कहे अकुलाय ॥ कहे पहला वीतक कथा । किंस समाधान थाय

जाड भूपति जी । कही राणी ने बात ॥ रंगा मंजारी आए छे । जवाहरजी के साथ
 ॥ रा ॥ १० ॥ हंभी ममजी राणी कहे । अब क्यों करो गया दुःख याद ॥ पुण्य विना
 भिस भोगाय । जाड जवाड का अहलाद ॥ रा ॥ ११ ॥ वीतक बात राजा कहीजी ।
 नव अष्ट परमान ॥ हर्ष पामी अति घणो । जागी पूर्वली प्रीत ॥ रा ॥ १२ ॥ चतुरंगी
 अन्या मनी । राग राणी हवा तैयार ॥ उमंगे सह संग चली जी । आया ग्राम के बार
 ॥ रा ॥ १३ ॥ पात्र आवंती देवने जी । चमक्या मदन का लोके ॥ भेताया मदन भ-
 र्णा नी । भान चह्या थोक ॥ रा ॥ १४ ॥ मदन बाहिर आया देखवा जी । आगे आ-
 या काट गल ॥ प्रणर्मा कह लेवा भणी जी । सामे आवे नृपाल ॥ रा ॥ १५ ॥ मदन
 नी मारत भगत नी । पायनर मन्मुख आय ॥ महेंद्र परी पाता हुयाजी । देखी हीयो
 हृत्माय ॥ रा ॥ १६ ॥ मिलिया वांय पसार ने जी । पुढ्या सुख समाधान ॥ सुखासन
 सह चर्चाया नी । जाड हर्ष्य पुणवान ॥ रा ॥ १७ ॥ राणी वृंद दास्यां तर्ण जी । आ-
 ड जाड पाय ॥ मा चर्चा प्रभा तुरी मिली । आश्रु पान हुझान ॥ रा ॥ १८ ॥ वाड तं
 गुणन ७ । क्रिया माटा नृप भरतार ॥ क्षमो अपराध सह हम तर्णो । हम क्रियो विगार

अथ धाह । क्षुधासि निज पर आदर लो ॥ आज ॥ ६ ॥ साल्या नर वर वाजल भेरी ।
धनुषन सोन संभोरीर लो ॥ और प्रजा सेग हुइ धेरी । आया प्राप्त वाहिर फेरीर लो

॥ आज ॥ ७ ॥ मदन लपर देखा ऐन्या आती । हर्ष नाद उभागी तीर लो ॥ ननुक्षिण
आर श्या मदन ने । भारी ऐन्य आती जणारीर लो ॥ आज ॥ ८ ॥ मदनजी जोइ

पथा हर्षाया । निज दल सज करापारे लो । पयदल पुर पल सन्मुख आया । इने नो
प्रथम दसपारलो ॥ आज ॥ ९ ॥ नेणनेण सिहवा असारस टरीया प्रमर्षा हीया अर्यापारेलो ॥

इत्या २ भवन जो मुजरा करीया । राय जी नमी कर धर्यापारे लो ॥ आज ॥ १० ॥
सुभ सारथीनी धुटी बजां । फिर तात दिग मदन आतारे लो ॥ प्रेमाशुन पणे सीम्य

व्यासा । ध सुख हृदह लपातारे लो ॥ आज ॥ ११ ॥ पूत सपूत जोइ सह सुभ पावे
। सो भविबना मिसो कल्यारे लो ॥ फिर तीनों भारेने आइ नमीया । इहा लिगल

॥ मं लो ॥ आज ॥ १२ ॥ मदन सजन सुन तन मन जाणे । कं जाणे जिनराया
॥ रिटी निजपल निले विराज्या । जोवन हरे टेमापारे लो ॥ आज ॥ १३ ॥

॥ वरसे हरे सदाह । कुणल बालता करादरे लो ॥ शुभ महति पुनः सर्जा मजाइ ।
भासा बासा कं भासेर लो ॥ आज ॥ १४ ॥ मरव वरण पक मज नोने । इजः इजोप

॥ वरसे हरे सदाह । कुणल बालता करादरे लो ॥ शुभ महति पुनः सर्जा मजाइ ।
भासा बासा कं भासेर लो ॥ आज ॥ १४ ॥ मरव वरण पक मज नोने । इजः इजोप

॥ वरसे हरे सदाह । कुणल बालता करादरे लो ॥ शुभ महति पुनः सर्जा मजाइ ।
भासा बासा कं भासेर लो ॥ आज ॥ १४ ॥ मरव वरण पक मज नोने । इजः इजोप

॥ वरसे हरे सदाह । कुणल बालता करादरे लो ॥ शुभ महति पुनः सर्जा मजाइ ।
भासा बासा कं भासेर लो ॥ आज ॥ १४ ॥ मरव वरण पक मज नोने । इजः इजोप

॥ वरसे हरे सदाह । कुणल बालता करादरे लो ॥ शुभ महति पुनः सर्जा मजाइ ।
भासा बासा कं भासेर लो ॥ आज ॥ १४ ॥ मरव वरण पक मज नोने । इजः इजोप

अरि धोरेर रक्षा ॥ जोर ध्यायना धारणा लक्ष मया । पश्यता मया ॥ १५ ॥
 ॥ १५ ॥ मध्य पजारि कर्ता सयारी । जोषे उमद नर नारी लो ॥ मदन कुंभर पर जाय
 यरी । प. कोइ नर अवतारीरे लो ॥ आज ॥ १६ ॥ राय भवन में आइ उतरीया ।
 नृपते नसन करीयारे लो ॥ रजा तंइ वमु पत घर आया । राज क्लीने अनुसरीयारे लो
 ॥ आज ॥ १७ ॥ साता जी नं पाये लागी । जाताइ सह दुःख भागारे लो ॥ ची राय
 मुर्या नग जिम शिर रहा । आसिस दीया पुण्य जागार लो ॥ आज ॥ १८ ॥ और
 सह मजान ने सन्मान्या । कीथा सहजा मन मान्यारे लो ॥ पुण्यवंत किण ने नही अप-
 मान । तंहीने जग पंडान्यारे लो ॥ आज ॥ १९ ॥ शैल्य सह सुख स्थान जमाइ ।
 नितोइ रक्षा मुय सांहर लो ॥ सह सज्जन को मिल्यो समगम । नित्यानंद बरताइर
 लो ॥ आज ॥ २० ॥ पुण्य तणा फल प. दरसाया । पदस बन्द पूर्ण थायारे लो ॥
 भवन कुटुंब के मुख में लो भाया । अमोल टाल नने गायारे लो ॥ आज ॥ २१ ॥
 ॥ भन्द नागंस । र्हीरीत तंद्र ॥ सुर्वाकर रूप मुंदरी कर । गुण मुंदरी मन मोर्हाया
 ॥ पण धाम्यारी परण्या नारी । बिरहना दुःख वाडया ॥ महेंद्र पुर पुनः बरा रंभा ।
 चट पुर सज्जन संग सोर्हिया ॥ पट बन्द प. अधीकार कह अमोल नर पुण्य जाइया ॥ ६ ॥

मण गाने ४ ३ ४

सु

महाशक्ति स्था भवा । निकल्पा ध्यु गुण शान ॥ १ ॥

० ॥ बाल १ जी । वाता जी ४ गुणधी । जिन समकित रस पायो जी ॥ ४ ॥

गुणां मदन जी भा । जिन कश्चिथा पाह जी ॥ सुणो ॥ ४ ॥ नरनी मदन धरु

धार्पा प्रकानो । फ न तुम सुधीया धयाह जी ॥ सुणो ॥ १ ॥ श्री धर करु सुणो धातक

महागो । जिन राज सुधी द्याह जी ॥ सुणो ॥ २ ॥ जिण बेला नुम मनीता भे पटीया

। तत्र रम गया धवगाह जी ॥ सुणो ॥ ३ ॥ पुकार्यी उत्तर नही पाया । भिहुं गहा धिल

व्याह जी ॥ सुणो ॥ ४ ॥ दिन उगता पाणी उत्तरी । नीनो नीचं उत्तरीह जी ॥ सुणो

॥ ५ ॥ पूर २ त्या जोंया काटा । किहं पत्तान पायाह जी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ आरत कर

ता निज धर आ १ । तात उदास दीटाह जी ॥ सुणो ॥ ८ ॥ पुहं मदन किम नही

दखाय । तुम किनं गहा बिलगाह जी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ जोंया पण पसो नही लाग्या । नेह

। मदन पर गयो पाणी मांड जी ॥ सुणो ॥ १० ॥ मुणी धज पान उमुं पचन ए लाग्या । मंनु

धी मल दुःखाह जी ॥ सुणो ॥ ११ ॥ जल यिन मीन नर्णीपर नडपुं । प्राण आ कंटे गहा

गया सुरकाह जी ॥ सुणो ॥ १२ ॥ जल यिन मीन नर्णीपर नडपुं । प्राण आ कंटे गहा

गया सुरकाह जी ॥ सुणो ॥ १३ ॥ जल यिन मीन नर्णीपर नडपुं । प्राण आ कंटे गहा

गया सुरकाह जी ॥ सुणो ॥ १४ ॥ जल यिन मीन नर्णीपर नडपुं । प्राण आ कंटे गहा

सुणो आणे । नदन ने हम दीठाइ
 सुणो ॥ २५ ॥
 सुणो ॥ २६ ॥
 सुणो ॥ २७ ॥
 सुणो ॥ २८ ॥
 सुणो ॥ २९ ॥
 सुणो ॥ ३० ॥
 सुणो ॥ ३१ ॥
 सुणो ॥ ३२ ॥
 सुणो ॥ ३३ ॥
 सुणो ॥ ३४ ॥
 सुणो ॥ ३५ ॥
 सुणो ॥ ३६ ॥
 सुणो ॥ ३७ ॥
 सुणो ॥ ३८ ॥
 सुणो ॥ ३९ ॥
 सुणो ॥ ४० ॥

१.

३

भा । नज जीव ॥ साहास कुण करे वक्त्ये जी । जय आवे अचिंती रोव ॥ भ ॥ ६ ॥
 कुंजर पुष्पवती भर्षी जी । तुर्त गयो निकल ॥ विजली ना भलकापर जी । लागे नहीं
 एक पल ॥ भ ॥ ७ ॥ दंती गयो जय बेगलो जी । तय सहेल्या करे पुकार ॥ दोडो र
 राजे भर जी । दोडो सहू परिभार ॥ भ ॥ ८ ॥ दोडो जोधा सुभटा जी । कांइ अनर्थ
 मोटा थाय ॥ घाड मात्र न पही करी जी । तं मयंगल नहाटो जाय ॥ भ ॥ ९ ॥ छोडा
 वे कुंवर्य भर्षी जी । कसो सुर वीर सहाय ॥ हा हा कार इम सांभली जी । लोक घणा
 निरभाय ॥ भ ॥ १० ॥ राजा राणा दोडीया जी । कांइ बोड्या मंथी सांमत ॥ चहु
 जन दोडी आर्षीया जी । सहेल्या ने पूछंत ॥ भ ॥ ११ ॥ रुदन करंतीते भणे जी । कांइ
 स्पुं पुत्रो मुज नांय ॥ हाथी ले भण्यो घाइ ने जी । लायो लुडाइ जाय ॥ भ ॥ १२ ॥
 सुर्णा घयगया सहू जणा जी । दाड्या सुभट तत्काल ॥ किण दिरो गयो लेइने जी ।
 चाक्रम कर भूपाल ॥ भ ॥ १३ ॥ दाख पही घणा सुरमा जी । कांइ भग्या नीग ने
 लार ॥ हाथे नहीं ते आर्षीयो जी । गयो गीरी गहन मझार ॥ भ ॥ १४ ॥ सहू फिर
 पाछा आर्षीया जी । कहे नहीं आवे ते हाथ ॥ पतो न लागे किहां गयो जी । किसे
 कया हो जाय ॥ भ ॥ १५ ॥ समन रह भद भर्षणा जी । राग राणी काट्यो देण ॥ अका

जी । लुछा कालजा सोय ॥ हा हा हिवे किरयो करुं जी । इस राणा २५ राय ॥ १० ॥
 ॥ १७ ॥ उर कुटे धिर भूहणे जी । पलक २ सुर छाया ॥ रंगने मांही भंग हुयो जी ।
 कांड महु राणा धिलखाय ॥ भ ॥ १८ ॥ ख्याल तमाशा वंध हुया जी । कांड जे सुण
 ने करे लाग ॥ महु जन गया पुर विषे जी । मोह प् मोटो रोग ॥ भ ॥ १९ ॥ राय
 ममाजाल गर्णा भर्णा जी । कांड आर्त किर्यां होय ॥ जीवती हुइ तो भंगावस्तुं
 जी । उद्यमर्था नम ज्ञेय ॥ भ ॥ २० ॥ इत्यादी वचने करी जी । कांड राणी संमजाइ
 राय ॥ असोत दाल दूर्जा कर्ही जी । श्री धर सदन जणाय ॥ भ ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा
 ॥ राय मंदी दांनो मिली । उंडो करे विचार ॥ किण उपाय थकी लगे । बाइ तणा
 ममाचार ॥ १ ॥ ले रायां ने जीवती । नही भशेते तन । आगे कहीं न्हाखी दइ । तो
 ने भटकतो वन ॥ २ ॥ प्रधान कहं पीटाइये । उंडेरां पुर मांय । जो कोइ लासी बाइ
 न । देखी नम परणाया ॥ ३ ॥ काम नहीं कायर तणो । लासी को पुण्यवंत ॥ जीवती
 ॥ १ ॥ नां नमे । करदेखा नम कंत ॥ २ ॥ लालच वस जासी घणा । लासी पतो लगाय
 ॥ १ ॥ गुण मूर्णा मर्चाय वी । गइ राय मन भाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ दाल ३ जी ॥ वीर सुणो

पदं यथा पुर विधे । जे जाइ हो गय कुंभार लाय ॥ सु ॥ १ ॥ तेहने तेह पणाय
 न । वरी री क्षानस द्रव्य अपाग ॥ भट चट पचन चटायने । पडह पीटयो हो ते पुर
 न संसार ॥ भ ॥ २ ॥ सुर्वा ने कह चालिया । जोया ने हो ते राज कुंभार ॥ चउदिहा
 साह विगो घणा । नही मिल्या री हो आइ रया निज द्वार ॥ सु ॥ ३ ॥ तव स्वपन
 भाय भुज भर्णा । कुलदर्या रं कहे रीडां तूं साय ॥ राज पुत्री ने लेवका । तूं तो जाजे
 री उ. नदी रन भाय ॥ नु ॥ ४ ॥ ने तो मिलसी तुज भर्णा । सुर्वा होसो हो प्रगतया
 नुय पुण्य ॥ जाया जणायो मे तातने । अज्ञादी हो करो काम निपुण ॥ सु ॥ ५ ॥
 गा ॥ नो पने न न । मे क्यो हो लावूं राज कुंभार ॥ ते कहे दिप्र पथारीये । काम
 री गा यभय कदा अनुमार ॥ सु ॥ नाम ठान नोर्षी लीया । हुं चाल्यो हो हुइ मन
 रीगम ॥ कजली वन ने पूढतो । हुं पहुं तो गजारण्या पास ॥ सु ॥ ७ ॥ माम एक
 भाया निहा । हुं रहीं हो भोजन ने काम ॥ पुल्यो कोइक भिलषी । कजली वन हो
 यहा उ विण टाम ॥ सु ॥ ८ ॥ ते कहे इहां री सतरे । एक जो जन हो रवानदी
 भाय ॥ नरना पका कांटा र । से सार्दी हो कजली वन ने कडाप ॥ सु ॥ ९ ॥ क्रिम

मरण सुख हो किम करी जगप ॥ सु ॥ १० ॥ जो नर नथी लक्ष्मियार । ते न आप्या हो
 फिर न पाछा धर ॥ फिर पाछा जाधा धर । जो चाधो हो तननें खर ॥ सु ॥ ११ ॥
 फिर में धुलधो तेहने । गज धेधे हो वेपारी लाय ॥ हणही धन धी में सुण्या ॥ विन
 गया हो किम हाथे आय ॥ सु ॥ १२ ॥ ते कहे उपाय सांभलो । जिम पकडां हो हम
 ग गजाज ॥ जाधां नही पंले कंठे । पले तीर हो रहीं करा काज ॥ सु ॥ १३ ॥ पीले
 मंगर धा अधिक त्या । यादा हो एक उडीखाड ॥ तेहने उपर पाधरा । फतलार्चिमद
 हां बंदा नर्णाज काड ॥ सु ॥ १४ ॥ चारो हरीयो निण परे । लगाइ हो करां हथणी
 नथार ॥ कागद नर्णा सुहाभर्णा । उभी करां हां ग्याड पे ते वार ॥ सु ॥ १५ ॥
 टोली आवे गज नर्णा । निण नद पे हो जल पीवा काज ॥ केली करे धडु विध तिहां ।
 नर्णा नां हो मंथ हम माज ॥ सु ॥ १६ ॥ काइक गज मद में लभ्यार । ते जाण
 हां चर कुंजर्था पल्ल ॥ पडे आइ तिण उपर । ते ग्याड में हां पंटे तत्श्रव सु ॥ १७ ॥
 पक पध पडथा रं । श्रुत्या जपय अनि दुबल थाय ॥ तव हम नेडा
 जाइने । थंटा २ हां नम चारा चरण ॥ सु ॥ १८ ॥ वस करां जांग उपाय धा । ते

गोरी धीन ती ॥ पह ॥ सुणी वषण राय हर्षीया । ततक्षिण हो कहे भट ने बुलाय ॥
 पडह वजाधो पुर धिपे । जे जाइ हो गाय कुँवरी लाय ॥ सु ॥ १ ॥ तेहन तेह परणाव
 री । वर्या दर्शा होसत द्रव्य अपार ॥ भट चट वचन चढायने । पडह पोटयो हो ते पुर
 ने मरार ॥ सु ॥ २ ॥ सुर्णा ने कंड चालीया । जोया ने हो ते राज कुँवार ॥ चउदिश
 माहे फिर्या घणा । नही मिल्या र्था हो आइ रखा निज द्वार ॥ सु ॥ ३ ॥ नव स्वपन
 माप मुज भर्णा । कुलदर्या हो कहे वीडो तूं साय ॥ राज पुर्वा ने लेवक । तूं नो जाजे
 हो पःगर्ला वन माप ॥ सु ॥ ४ ॥ ने नो मिलसी तुज भर्णा । सुधी होसो हो प्रगटया
 मूम पुण्य ॥ जाग्या जणायां मेे नानने । अजादी हो करो काम निपुण ॥ सु ॥ ५ ॥
 राजा र्का पांमे जइ ने । मेे कल्यां हो लावूं राज कुँवार ॥ ते कहे शिष्य पथारीये । काम
 हया हो वनस्युं रक्षा अनुभार ॥ सु ॥ नाम ठान नोधी लीया । हे चाल्यो हो हुइ मन
 हुलास ॥ फजर्ला वन ने पूढतो । हे पहे तो गजारण्या पास ॥ सु ॥ ७ ॥ आस एक
 आया सिंहं । हे रर्षीयो हो भोजन ने काम ॥ पूढयो कोइक भीलधी । कजर्ला वन हो
 फडां छे रिण टाम ॥ सु ॥ ८ ॥ ने कहे इहां र्था उतरे । एक जो जन हो रेवनिदी
 भाप ॥ नरेना पडां कांटा प ॥ जे मादी इर कजर्ना का ने जण्य ॥ ७ ॥ ॥

वराण सुख हो किम करी जवाय ॥ सु ॥ १० ॥ जे नर नदी लंघिया । ते न आया हो
 फिर ने पाछा धरे ॥ फिर पाछा जावा धरे । जो चावो हो तननें खेर ॥ सु ॥ ११ ॥
 फिर में पृथ्वी तेहने । गज वैधे हो वैपारी लाय ॥ हणही बन थी में सुण्या ॥ विन
 गया हो किम हाथे आय ॥ सु ॥ १२ ॥ ते कहे उपाय सांभलो । जिम पकडां हो हम
 ए गजराज ॥ जावां नही पेले कंठे । एले तीर हो रही करा काज ॥ सु ॥ १३ ॥ फील
 सरोर थी अधिक तथा । खोदा हो एक उडीखाड ॥ तेहने उपर पाथरा । फतलर्चामिट
 हो वंश तर्णज फाड ॥ सु ॥ १४ ॥ चारो हरीयो तिण परे । लगाइ हो करां हथणी
 तैयार ॥ कागद तर्णा सुहामणी । उभी करां हो खाड पे ते चार ॥ सु ॥ १५ ॥
 टोली आवे गज तर्णा । तिण नद पे हो जल पीया काज ॥ केली करे बहु विध तिहां ।
 एली तीरे हो वेशे हम नाज ॥ सु ॥ १६ ॥ कोइक गज मद्र में उख्या । ते जाण
 हो चरे कुंजरी एह ॥ पडे आइ तिण उपर । ते खाड में हो पेटे तत्क्षेय सु ॥ १७ ॥
 एक पक्ष पश्यो रेरे । क्षुया जपाय अति दुर्बल थाय ॥ तत्र हम नेडा
 आने । थोडा रे हो हस चारो चराय ॥ सु ॥ १८ ॥ बस करां जाग उपाय थी । ते

एतां एा अप भेदो धाप ॥ मय आयत्त भूं खोदने । ह्यम कहाडा हो ने ह्यम लोरे आय
 ॥ सु ॥ १९ ॥ सांख्य दंड र्धा पांथ ने । लावां हो दृषा प्राप्तं माय ॥ भेदो क्या मह
 लो भर्वा । दृष्टु दिक् हो मयु भूत कयाप ॥ सु ॥ २० ॥ जंगो ह्येय ने वेचना । जा-
 न् धेया रो ल भूं माया दाम ॥ यह आधीविक्रम ह्यम तर्णा । ने कत्रवा हो किम दृइ
 गुण ह्यम ॥ सु ॥ २१ ॥ ह्यम चंतारां हिन भर्णा । निहां जावा हो मन करो उमंग ॥
 एता जो भम धेवारवी । तो रहिजे हो तुम रहारे जी संग ॥ सु ॥ २२ ॥ इम ममजाइ
 धृष्टु धिये । ते भयो हो धोइ काम के काज ॥ डाल तीजी खन्ड सान की । कहे अमो-
 लिक् हो जोषो पुण्य का साज ॥ सु ॥ २३ ॥ ६ ॥ दूहा ॥ सुणी वचन ते भीलका ।
 धामना खल ससार ॥ संकल्प विकल्प मन ह्यो । अस न एक विचार ॥ १ ॥ निश्रय
 र्थो नो मन धरो । मरणो छे एक वर ॥ धार्ता काज जे नीकल्या । जीवता पाठणो पार
 ॥ २ ॥ सारो तो हिचे मुज धर्को । रहारे धा न जवाय ॥ हिमनेत मदत देव को ।
 भासो ए अन धाय ॥ ३ ॥ होजहार जे होवसी । कास्युं बुढी उपाय ॥ इम चिर्ता शि
 ५ शारोवा । महत्स पर कन सांथ ॥ ४ ॥ आयो देवा नद नदे । पर्यो द्रष्ट लयाप ॥
 शिवा प्रज्ज. मर्षिणा । अर्थात् जेना खेताप ॥ ५ ॥

रो हो तव जो जो जी ॥ धीतक ॥ आं ॥ रंघातट एक वट वृक्ष वर । पहल कीनार प-
 खीजी ॥ तीरी नीर आइ चढीयां तिणपे । महरो देखी जी ॥ धीत ॥ १ ॥ गज मुंद
 देख विचार करुं मन । कीजे किस्यो उपायो जी ॥ जो देखे कोइ फील मुजे तो । का
 लज आयो जी ॥ धीत ॥ २ ॥ कार्य महारो इणही वन भे । फीरीया धी सिद्ध न धावे
 जी ॥ जीवती मूढ़ राजरी कंन्या । द्रष्टी आवे जी ॥ धीत ॥ ३ ॥ वृक्ष घणा छे इण
 वन मांही । गया धी नही ओलखाइ जी ॥ झड रुप हूं वणी चलूं ता । कारज थाइजी
 ॥ धीत ॥ ४ ॥ इम चिती प्रही वड की डाली । मोटी डोटी तांडी जी ॥ सर्व सररीर
 ने बांधी लीधी । पतीया चोडी जी ॥ धीत ॥ ५ ॥ झामर झूमर होइने उत्तरो । धीरे
 चाल्यो जी ॥ चकोर निजरे चउ दिश जोतो । गज आवे हाख्यो जी ॥ धीत ॥ ६ ।
 जो देखूं कोइ दंती आतो । तो तिहांहीं स्थिर रेवुंजी ॥ आगे गया धी आगे चाल् ।
 डर दिल लेवुं जी ॥ धीत ॥ ७ ॥ इण पर वहुली भूम उछंधतो । एक गीरी तले आ-
 योजी ॥ आगे अंजन गिरीने सरीखो । फील देखायो जी ॥ धीत ॥ ८ ॥ सात अंग
 तस भूमी प् लागा । घुमंतो वन फिरतो जी ॥ अन्य गज पासो ते नही जावे । झाडीभ

या जी । ते देखी मुज मनडों हृद्यो । भेद ज पाया जी ॥ वीत ॥ २० ॥ उपर थी प
खुशी रहे छे । हाथी थी मन डरती जी ॥ पण मनडो तो लाग्यो कुटम्ब मं । नेणा
भारते जी ॥ वीत ॥ २१ ॥ हिवे इणरो हूं दुःख गमावुं । इस मन मांही विचारी जी ॥
वृक्ष रुप तजी ने चाडियो । बड पं ते वारीजी ॥ वीत ॥ २२ ॥ ज्ञाख पल नी आडे छि-
पियो । पल लिवाने नहाथी जी ॥ लेखित पल देखी कुँवरी हुइ । हाकी वाकी जी
॥ वीत ॥ २३ ॥ अश्वर्य पाइ लियो उठाइ । किहांथी उड प आइजी ॥ नर विना कुण
चित्रे अक्षर । उच्यंग लागइजी ॥ वीत ॥ २४ ॥ वांचण लागी हुइ अति आत्तर । दा-
ल चथुर्था मांहीजी ॥ सस खन्डनी आगे वीतक । अमोल सुणाइजी ॥ वीतक ॥ २५ ॥
॥ ७ ॥ दुहा ॥ हूं अति कष्ट सही करी । तुमने लेवण काम ॥ आयो नृप नो मांकल्यो
। दर्शन लियो विश्राम ॥ ? ॥ जो मन हे चलव तणो तो । होवो इंशियार ॥ नहीं तो
उत्तर आर्पाये । जाडं म्हारे द्वार ॥ २ ॥ हर्षे अश्रु कुँवरी हुइ । तरु वर उपर जाये ॥
चां निजर हृयां थका । आनंद अन हृद होय ॥ ३ ॥ शानी कगी मुजने तदा । आया
अधा भय छड ॥ गज हमणा जागे नहीं । पूरो महारी कोड ॥ ४ ॥ नीचो उत्तयो तस्-

क्षिण । न आइ मुज पास ॥ दोनो मिल सुखीया भया । जाणे कली सह आस ॥ ७ ॥
 ॥ ॐ ॥ ढाल ५ मी ॥ कुँवर अमे बुद्धनो भंडारिरे ॥ यह ॥ सदन जी सुणीयो सारं
 न्हारिरे ॥ मद० ॥ जिण विध परणयो राय पुली में । करं दीती सारी ॥ आं ॥ एका
 न्त अक्सर पाइ तिण समें । बोले कुँवारी ॥ भले पथार्य कार्य सार्य । कुटम्ब दो नि
 लारी ॥ म ॥ १ ॥ में उपाय चतायो तस लो । मृत्यु रूप धारी ॥ छोडी जाती दंत
 तुज । में लेस्यं उटारी ॥ गं ॥ २ ॥ इम सुण कुँवरी पडी मृत्युक निम । गज जब जा
 भयरी ॥ जगाव कुँवरी नहां जाणे । तब गया धरारी ॥ म ॥ ३ ॥ मरी जाणिने रोये
 षण गे । गयो वन महारी ॥ में निचित हो कुँवरी पासे । आयो ते वारी ॥ म ॥ ४ ॥

में वान्य ने कुँवरी । ली पीठ पर धारी ॥ शिष गती तिहांथी चालया । कारज
 री ॥ म ॥ ५ ॥ रखा सीतां पार होवा भया । भय मन अपारी ॥ तेल के गजन,
 गाया । जोनां हूं लारी ॥ म ॥ ६ ॥ काष्ट सुंदमें न्हाटो आवे । वायु वेगारी ॥
 गज कुँवरी पेढाणयो । गया अति धरारी ॥ म ॥ ७ ॥ हिचे मृत्यु प् आइ आ
 महनत व्यर्थ सारी ॥ संतस क्रोधे दीसे दंती । न्हाव सं सही मारी ॥ म ॥ ८ ॥
 तस न धरयावो । प् घट वृक्ष भारी ॥ इण पर शस चडीने वंटां । निर केजां

नामना राधा मे भक्त । आप ज्ञान साध ॥ ६ ॥ यथाश्च वास इव भः कस्तव । आभल
नात्मा जाय ॥ प्रिय पीच भे उषते । ते सृणु जो भित्त लान ॥ ७ ॥ ७ ॥ दाल ६ टी
॥ सो वन सिंहासणंरवती ॥ घट ॥ जोंचं कला कपटी तर्णी । सरल न समजे कांयरे
॥ आर्थात् तो सत्य ही तीरे । सुण जो तं चित्त लायरे ॥ जो ॥ १ ॥ तिण अयत्तर अंत
लिन मे । जातो विद्या पर कांयरे ॥ नचिं जोंय जाता इव भर्णी । हर्षित द्वियेउ हांयरे
॥ जो ॥ २ ॥ पुण्यवती जांइ सोही यो । इरण करण लाग्यो लाररे ॥ तह भेद इव
आण्यो नही । हांइ जाइ हांण हाररे ॥ जो ॥ ३ ॥ कुंजरी कहं उभा रहो । नपा लग्या
उ अघाररे ॥ कुपा कर्मा जल पाइये ॥ प्रिय आंच चालण कराररे ॥ जो ॥ ४ ॥ तरु
ल तास धलाय ने । हुं लजा गयो नाररे ॥ हुंकडां कही भिलीयो नही । आगे गयो सर
र तीररे ॥ जो ॥ ५ ॥ पांडे लाय मज्यो मंत्रक । स्यासाइ रूप पणायरे ॥ दोउ आयो
न्यो पने । जल पाल वन सागायरे ॥ जो ॥ ६ ॥ घनराइ इव उल्चरे । जल्दी वावरी
भरत लाया ॥ सख प्रिय कोइ जपजे । मे आयो जे जांयरे ॥ जो ॥ ७ ॥ कोइ देव दान
व भ्रं । "जा सम सव कगायरे ॥ लार लजयो थां ते साहरे । हुं दोही आयो इण टायरे
॥ जो ॥ ८ ॥ प्रास्यो उदक दिव कुंजरी । दोनू चल्पा तव दोउरे ॥ मे पण जोया दुर

पुत्र भृष्टं जी । हर कर धर नश्वर ॥ भूषण र्याल बहु विध कर जी । मं प्रुलया तस
 निण वार हो ॥ म ॥ १२ ॥ मार्जी यह वणाय नंजी । नित्य प्रस किहां के जाय ॥ ते
 करं वंटा नांभतरे । राय कुंवरि ने वणा प सुहाय हो ॥ न ॥ १५ ॥ फिर मं प्रुलया
 राय नं जी । धिनी दुर्जा हे सांयाते करं प्रकापक छे जी । ते पण आइ दुःख पाय हो
 ॥ म ॥ १६ ॥ वसुधत संट का सुत थी जी । होसी तेहनो व्याव ॥ थोडा दिन के धां
 नं जी । सांड ही वजा उत्सहाव हो ॥ म ॥ १७ ॥ इस सुणी मं आणंदीयो जी । हि
 नं करं राय ॥ कुल तर्णी रचना विपेर्जा । देवूं कुंवरिनं समजाय हो ॥ म ॥ १८ ॥
 मार्जी ई पण जाणूं छुंजा । करवा पुष्क आभरण ॥ कहां तो करं साडी कंचुकी जी ।
 नंजां कर्मा नो ओट मन हो ॥ म . १९ ॥ इस सुण ते सुशी हूइ जी । दियो सह
 नंजां राय ॥ राना रचन गुरु करी जी । जे भुकी दानो साथ हो ॥ म ॥ २० ॥ क-
 र्जा का र्या नदी जी । फीटि भुय बट झाड ॥ स्वल्प बेटी कन्यका इस । विचिख
 मं राना सांड हो ॥ म ॥ २१ ॥ मरुतु गज वणाहयो जी । मुक्त फल का ठंग ॥ इ
 मारां रचना रदी । मं तो धरीने अनि उमंग हो ॥ म ॥ २२ ॥ करी घडी धरी शव-

१०५
 १०६

डी जी । दी डोसोने हाथ ॥ एकान्त कुँवरीने आधीये जी । जिम कोइय न जाणे वात
 हा ॥ म ॥ २३ ॥ देखी बुद्धी सुखी हुइ जी । मिलसी घणो इनाम ॥ सस खन्ड टाल
 सससी जी । कहे अमोल देखो काम हा ॥ म ॥ २४ ॥ ० ॥ दुहा ॥ हरपाणी मालण
 तदा । पुष्य करंड कर लेय ॥ गइ ते कुँवरी मेहल में । एकान्ते रही तेय ॥ १ ॥ पुष्य-
 वर्ना चुग्याने । दीना गजरा हार ॥ फिर कहे हं लावी अष्टुं । पुष्य साटिके मनोहार
 ॥ २ ॥ प्रसारी देखाडता । कुँवरो द्रष्ट लागाय ॥ अथर्व पाइ अति घणा । ए कुण
 रचना रचाय ॥ ३ ॥ ए तो धीती मुज विषे । सवली दी आलेख ॥ हम दोनो जाणां
 अलां । वली कुण आयो देख ॥ ४ ॥ शंका पही मन ने विषे । सच्या श्रीधर कौन ॥
 जल्दी परिक्षा कीजीये । फिर परण वो जोन ॥ ५ ॥ ० ॥ टाल ८ मी ॥ अपाड भूती
 अणगार ॥ यह ॥ पूढे मालण तेह । मारी सच्च मुज केह ॥ मदनज सुणीये ॥ ए उ-
 चम साडी कुण करी जी ॥ ए मुज अतिहा सुहाय । एनी नित्य दीजे लाय ॥ मदनजी
 सुणीये । इनाम देसुं मन भरीजी ॥ १ ॥ वाइजी परदेदी कोय । सह विषांगे दःखी

वारं सहृ खद ॥ वा ॥ हुकम हॉसी तो लास्वुं वणी जी ॥ ३ ॥ कुँवरी मन हर्षाय ।
 जाण्या श्रीधर साचाय ॥ मदन ॥ पल लिल दीयो तिण तदा जी ॥ चिंता मत कीजो
 कांय । इहांइ रहजो सुख मांय ॥ मदन ॥ उपाय करस्वुं हूं यदाजी ॥ ४ ॥ देजो नि-
 ल्य सनाचार । नहीं कीजो प्रेन विसार ॥ मदन ॥ आखिर सत्य तिरसे सही जी ॥ वं-
 च मोहर संग पल । द्वियों मालण नं तल ॥ मदन ॥ सुखे राख सुख थी कही जी ॥
 ५ ॥ मालण अति हर्षाय । वंगी आइ वाज मांय ॥ मदन ॥ कागद द्वियों म्हारे करे
 जी ॥ कुँवरी खुशी हुइ वहांत । जोइ साडीरी जोत ॥ मदन ॥ भकरी मुज थी उच्चरे
 जी ॥ ६ ॥ प्रेग पत्र ते वांचावुजी मुज इख की आंच ॥ म ॥ ताच उपजावण कारणे जी
 ॥ पुष्य नो वंचू वणाय । नास गुंथ्यां ज्यां जणाय ॥ मदन ॥ गज मोती गुंथ्या वारणे
 जी ॥ ७ ॥ रयीयो डावडी मांय । कुसुम थी दीनो जाय ॥ स । कद्यो एकांतमे देव
 जो जी ॥ दूजे दिन तिहां जाय । दीनो कुँवरी नं ताय ॥ स ॥ हर्षी गद्यो प्रसाद ज्युं
 जी ॥ ८ ॥ खोली मुकाफल दीठ । लग्या मन ने मीठ ॥ स ॥ प्रेमे उर लगावीयो
 जी ॥ दी दीनार पक्षीस । कहे पुखला जगीस ॥ स ॥ इम नित्य नव २ लावीयो जी

सु० म० ॥ सु० सु० ॥ १०० ॥ पु०य ॥ १०० ॥ अथ भागा नो इहा थकां ॥ सु० म ॥ चाल
 नोत सुज पोत ॥ पुण्य ॥ १०० ॥ म० नदयो पकां कयो ॥ सु० म० ॥ निण नही जाणयो
 भद ॥ पुण्य ॥ त्येक नमाशा रानेन ॥ सु० म० ॥ अर्निर्हा पाया वेद ॥ पुण्य ॥ १०० ॥
 भा०रि भा०य सु० से ॥ न० म० ॥ इम राजा प्रजा देव ॥ पुण्य ॥ पण आलय नही
 पक० से ॥ सु० म० ॥ इतु, यो० पत ही रिजेये ॥ पुण्य ॥ १०० ॥ कुरी कस्यो राय कान
 ॥ ॥ सु० म० ॥ राय दे० से इ० गत ॥ पुण्य ॥ कहं नोमार्था पकां जणा ॥ सु० म ॥
 ॥ जालो सु० न गन अथर, पु०य ॥ १०० ॥ से जाइ उभो राजाकने ॥ सु० म ॥ कांड
 ॥ भा०रि, सु० न पा० ॥ पु०य ॥ इम पु०र ॥ सु० काल मं ॥ सु० म ॥ कांड मं करी नव
 ॥ अरुण ॥ पु०य ॥ १०० ॥ वदटा वदवेन्न कांजायि ॥ सु० म ॥ राजार्जा से नही आवे
 सु० न पा० ॥ पु० ॥ ने, इ० लार्जा दे० जाइपु ॥ सु० म राजार्जा ॥ नही तो होवे सु० न जाथा
 ॥ पु० ॥ १०० ॥ कांया वदवेन्न नमोक्षिण ॥ सु० म ॥ भद सु० ने बुलाय ॥ पु० ॥ पकडा
 यो० पु० अर्जा ॥ सु० म ॥ सु० न त्यायो महल भांय ॥ पु० ॥ १६ ॥ सु० स० रूप खेचर
 र्जा ॥ सु० न ॥ भा०रि राया नेवार ॥ पु० ॥ हा हा कार सभा विप ॥ सु० म ॥
 म०र्यायो० तय दाया ॥ पु०य ॥ १०० ॥ तव हयो सहु जणा ॥ सु० म० ॥ साचो

॥ ३ ॥ हिं व कर्म कुं ना मही : मिलिषा शुभ मयोग ॥ कुलभे वक्षा निरता ॥ वरं
 गार ना भोग ॥ ४ ॥ ने काल पुण्य दुर्यो । प्रगद्व्या पुण्य प्रनाप ॥ हिं चोत्तो निज
 शार सं । मह भन जन संभ आय ॥ ५ ॥ ॥ दाल ५० मी ॥ दर्शना मन लाभा ॥
 ॥ ६ ॥ मदन कुंवर मह जन संभे । मभां व दृष्ट भाषं ॥ पुण्य ना फल भेदतां ॥
 भिष्या निज शरीरे । निदा चालण दृष्ट उभार ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ मदन ना कहे नाल
 । अब चोर्तां निज शरीरे ॥ पुण्य ॥ कुल शैवा लक्षा निभेजां । वर्ष रीत्ये के शरीर
 ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ वभुवनजा कह चोर्तां । हम ना मह तुम लार ॥ पुण्य ॥ मपुन पुत्र
 नुन मरीया । हिंवे हमने चिता न लगार ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ श्रीधर नप पासे अद् ।
 ना राजा नेवार ॥ पुण्य ॥ श्रीर्मा जाचां हम शरीरं । संभ मिलं मह परिवार ॥
 राय ॥ १० ॥ राय कहे हम किम करं । तुम ने इहां किस्यो दुःख ॥ पुण्य ॥ हम प.
 ॥ ११ ॥ राज तुम नपां । भोगदा इच्छित सुख ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ श्रीधर वदे नरसाहेने ।
 मये मह परिवार मन रंजां ॥ पुण्य ॥ जन स्थान जेवा तपां । सह ने भयो उभं
 नी ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ वर्ष घणा दुरा हम भणी । रहतां विवेदा ने मांय जी ॥ पुण्य ॥
 हिं मिलस्या सजन भणी । शिष्य हकम परमाप जी ॥ पुण्य ॥

सुख इव । तिस' पसं' सङ्गु काज जी ॥ गुण ॥ कल पल नो सादय ॥ न लजा-
 वा तुम साज जी ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ दम सुर्णा सुधी दृया । लीनी दैन्य पर्णा साथ जी
 ॥ पु ॥ मिलद मदन दैन्य मे । साज जभ्यो त्यो नर नाथ जी ॥ पु ॥ ९ ॥ अथ म-
 इर्न तणं विवे । कर्धो सङ्ग प्रयाण जी ॥ पु ॥ राज साज पहोर्वाभिया । र्मस लगण
 नम जाण जी ॥ पु ॥ १० ॥ आगल नाल्या सोद मे । सुवे र करत सुफास जी ॥ पु ॥
 शर्का भर्का थी मनाथता । विच राजा ने लाता टास जी ॥ पु ॥ ११ ॥ दम अनुक-
 मे आर्वाया । अजुया पुर्सा सर्माण जी ॥ पु ॥ सुवस्थान जो वन विष । रहा जो सि-
 न्यु द्विपर्जा ॥ पु ॥ १२ ॥ पुरमे पसरी वारता । काद आया राजेन्द्र स्वधाय ॥ पु ॥
 आपणा प्राप्तकं वार्धिर । रहा हे लवपी लापर ॥ पु ॥ १३ ॥ सन्धी पाल आड नृप
 ने । अर्ज करं अकुलापर ॥ पु ॥ न जाणे कुण राजर्धा । किण कासं राजा र्मिं आपर
 ॥ पु ॥ १४ ॥ अथ सुर्णा विस्मिन भया । कुण प आया किण काजेर ॥ पु ॥ धर नर्दी
 महारो किण थर्का । प हे किहां ना राजे ॥ पु ॥ १५ ॥ जो लड्यानें आयला । तो
 भजना आगे दत्ते ॥ पु ॥ कारण अन्य दीसं सर्धा । काद भयर लावां राजपुनर ॥ पु ॥
 ॥ १६ ॥ सामंत तर्वािण सज इद । आया मदन दैन्य मापर ॥ पु ॥ यमुपता नेट ॥

उ पुत्र सग स पार ॥ १ ॥ आधा बटु माग ॥ २ ॥
 तणो । सांभलियो घोंघाट ॥ ३ ॥ गज गाजी गण गम मिल्या । आवे शिष चलाय ॥
 नेडा आया देखनं । वसुपति जभा थाय । ४ ॥ बहु मौल्यो सज भेटणो । बहु तो सा-
 ज लजाय ॥ मिलवा सजान राज ने । अति ही मन उमंगाय ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १ ?
 सी ॥ सहारे आज आणंदा नो दिन छे जी ॥ यह ॥ आज आनंद दिन सेठ आर्षिया
 जी । सहू सजान के मन भर्षिया जी ॥ आं ॥ सेठ सपरिवार उभा जोयने जी ॥ फोज
 उभी रही खुश होय ने जी ॥ आ ॥ १ ॥ सामा आया भूप पांयां चरी जी । सेठ सा-
 मा आया हर्ष भरी जी ॥ आ ॥ २ ॥ लुली २ नम्या सेठ परिवार थी जी । राय खुशी
 किया घणां सत्कार थी जी ॥ आ ॥ ३ ॥ भेट निजराणो सामो कियो जी । राजेश्वर
 हर्षी लियो जी ॥ आ ॥ ४ ॥ सहू विध लायक तुम सेठ छे जी । किसी बस्तु हम
 पाम करां भेट जो जी ॥ आं ॥ ५ ॥ राज्य मान्य राजे श्री तुम मिल्या जी ॥ तुम
 दीटा पुण्य स्थाणा फन्या जी ॥ आ ॥ ६ ॥ प्रधानादिक आइ नम्या जी । यथा योग्य
 किया सहू ना गम्या जी ॥ आ ॥ ७ ॥ राय वसुपत एक गजा लह भया जां । चउ
 भाइ दूजे दंती सोभी रया जी ॥ आ ॥ ८ ॥ सहू दोन्य साथ वार्जिन वार्जिया जी ।

१ ॥ अथ कर्मफलं लिख्यते ॥ आ ॥ २४ ॥ परस्मै कर्तव्यं चतुर्विधा माय नं जी ॥
 २ ॥ कर्मात्कालं त्वारं अमोलस्य गाय नं जी ॥ आ ॥ २५ ॥ ० ॥ इहा ॥ एकं दिनं मदन
 ३ ॥ नमो नमो ॥ इन्द्रायो इहां आय ॥ पाञ्चल भ्रुरं परिवार मुज ॥ कर्मा दर्शं कर्मा चाय ॥
 ४ ॥ इति शिष्य निजो शैल्य मज ॥ चरणो फिरं सहू टाम ॥ संतोषू सहू नं हिवं ॥ कर्
 ५ ॥ मद्राण भास ॥ २ ॥ इम निश्चय कर आर्दाया ॥ ताल भ्रात नृप पास ॥ निज इच्छा
 ६ ॥ गणाय नं ॥ लो आजा इच्छाम ॥ ३ ॥ शैल्य पति बुलाय नं ॥ सजाइ षोडश तं दार ॥
 ७ ॥ शैल्य श्रुपुर नर्णा ॥ कट पुर्ना लं तार ॥ ४ ॥ प्रणमी पाग सजन नणा ॥ कसी
 ८ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 ९ ॥ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १० ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 ११ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १२ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १३ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १४ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १५ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १६ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १७ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १८ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 १९ ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२
 २० ॥ श्रु न्त भयार ॥ मज्जारु हिं चार्त्त्या ॥ सदन श्रुपुर नं दार ॥ ५ ॥ ० टाल १२

॥ १ ॥ ... ॥ २ ॥ मन्त्र पर्यायं पर्यायं । चान्द्रा वदन राग ॥ हृद्य
 ॥ ३ ॥ ... ॥ ४ ॥ ... ॥ ५ ॥ ... ॥ ६ ॥ ... ॥ ७ ॥ ... ॥ ८ ॥ ... ॥ ९ ॥ ... ॥ १० ॥ ... ॥ ११ ॥ ... ॥ १२ ॥ ... ॥ १३ ॥ ... ॥ १४ ॥ ... ॥ १५ ॥ ... ॥ १६ ॥ ... ॥ १७ ॥ ... ॥ १८ ॥ ... ॥ १९ ॥ ... ॥ २० ॥ ... ॥ २१ ॥ ... ॥ २२ ॥ ... ॥ २३ ॥ ... ॥ २४ ॥ ... ॥ २५ ॥ ... ॥ २६ ॥ ... ॥ २७ ॥ ... ॥ २८ ॥ ... ॥ २९ ॥ ... ॥ ३० ॥ ... ॥ ३१ ॥ ... ॥ ३२ ॥ ... ॥ ३३ ॥ ... ॥ ३४ ॥ ... ॥ ३५ ॥ ... ॥ ३६ ॥ ... ॥ ३७ ॥ ... ॥ ३८ ॥ ... ॥ ३९ ॥ ... ॥ ४० ॥ ... ॥ ४१ ॥ ... ॥ ४२ ॥ ... ॥ ४३ ॥ ... ॥ ४४ ॥ ... ॥ ४५ ॥ ... ॥ ४६ ॥ ... ॥ ४७ ॥ ... ॥ ४८ ॥ ... ॥ ४९ ॥ ... ॥ ५० ॥ ... ॥ ५१ ॥ ... ॥ ५२ ॥ ... ॥ ५३ ॥ ... ॥ ५४ ॥ ... ॥ ५५ ॥ ... ॥ ५६ ॥ ... ॥ ५७ ॥ ... ॥ ५८ ॥ ... ॥ ५९ ॥ ... ॥ ६० ॥ ... ॥ ६१ ॥ ... ॥ ६२ ॥ ... ॥ ६३ ॥ ... ॥ ६४ ॥ ... ॥ ६५ ॥ ... ॥ ६६ ॥ ... ॥ ६७ ॥ ... ॥ ६८ ॥ ... ॥ ६९ ॥ ... ॥ ७० ॥ ... ॥ ७१ ॥ ... ॥ ७२ ॥ ... ॥ ७३ ॥ ... ॥ ७४ ॥ ... ॥ ७५ ॥ ... ॥ ७६ ॥ ... ॥ ७७ ॥ ... ॥ ७८ ॥ ... ॥ ७९ ॥ ... ॥ ८० ॥ ... ॥ ८१ ॥ ... ॥ ८२ ॥ ... ॥ ८३ ॥ ... ॥ ८४ ॥ ... ॥ ८५ ॥ ... ॥ ८६ ॥ ... ॥ ८७ ॥ ... ॥ ८८ ॥ ... ॥ ८९ ॥ ... ॥ ९० ॥ ... ॥ ९१ ॥ ... ॥ ९२ ॥ ... ॥ ९३ ॥ ... ॥ ९४ ॥ ... ॥ ९५ ॥ ... ॥ ९६ ॥ ... ॥ ९७ ॥ ... ॥ ९८ ॥ ... ॥ ९९ ॥ ... ॥ १०० ॥ ... ॥

भविक ॥ ४ ॥ भेट भेटाणी केटा वट्ट जी । दासादिक परिवार ॥ सगा स्नेही सजाय न
 र्जा र्जाना सब ही लार ॥ भवि ॥ ५ ॥ राजाजी ने लारे थया जी । ओर सायवी लार
 ॥ भव्य वजार हांय ने जी । आया वाग मझार ॥ भवि ॥ ६ ॥ जो मुनीवर वाहण
 नज्या जी । पंच अर्भागम मांय ॥ सचित वस्त दूरी ठवी जी । मुनी गुण दर्शन राचा
 ॥ भवि ॥ ७ ॥ अर्चिन अजोग ने परहरी जी । मुखे उलासण किथ ॥ सरल करी दी
 ओग ने जां । धर्म ध्याने चित दीध ॥ भवि ॥ ८ ॥ नहीं नर्जाक नहीं वेगला जी ।
 नान भया भिय कीन ॥ धंटा नख हां सन्मुखे जी । कथा मुणन चित दीन ॥ भवि ॥
 ९ ॥ परिपद भरां जोग ने जी । दे मुर्ना वर उपदेश ॥ भव निवारण कारणे जी ।
 भगव्यां भरां दर्शन ॥ भवि ॥ १० ॥ धर्म अनेक प्रकारका जी । पण मुख्य हे दो भेद
 ॥ पुढ्यां ने अभिषय, अश्वं जी । पुढल्यां देवे वेद ॥ भवि ॥ ११ ॥ पुढल के परिचय थकी
 जी । भविष्यो अनंत भंगार ॥ अह वसन कर आर्षियों जी । तन भक्त्यो अनंत वार ॥
 भवि ॥ १२ ॥ नो पण सुता नर्दा भट जी । अधिक २ भद् चहाय ॥ अर्मा नी पर
 नग्यां जी । भयं भक्षया आय ॥ भवि ॥ १३ ॥ नट्या र्जा पर नार्चियों जी । करी

र गेयो परजा नरदा ॥ १ ॥ वसुपत कहं श्यामी जी । साची आपकी केण ॥ हिंवे तारु
 मुज आतगा । साचा मिल्या तुम सेण ॥ २ ॥ ऋषि कहं सुख जिम करो । न करो
 धर्म में दंड ॥ तारो आरमा आपणी । अबरर एह मुशकल ॥ ३ ॥ सुनी वंदी गृह
 आचीया । बोलियां परिवार ॥ निज इच्छा दर्शावता । सहू मुरजा तिण बार ॥ ४ ॥
 मदन कहं कर जोडने । कीजो विचारी काम ॥ आप जाण अबरर तणा । तिहां नही
 कुड धाम ॥ ५ ॥ ० ॥ टाल १२ सी ॥ महरो मनडां ऋषमजी से राजी ॥ यह ॥ मे
 रा मरदा संगम में उमाया ॥ आ ॥ में तो बचन विचारी उचार्या । मुज भेतवा वक्त
 ण आया ॥ मेरा ॥ १ ॥ मदाकि निज काज सुधारं । तो जन्म मरण मिट जाया ॥
 मेरा ॥ २ ॥ ३ ॥ पर वममें दुःख में महांया । न नंपम में न देवाया ॥ मेरा ॥ ३ ॥
 धर्म सार्थ में दुःख नहीं महीया । न परवदा में दुःख पाया ॥ मेरा ॥ ४ ॥ हिंवे चेतं
 तं कुंठक मुखर । अपुंथ वक्त ण आया ॥ मेरा ॥ ५ ॥ नहीं तो फंडिं गोलं गवास्सूं ।
 सां सुर्नापर फरनाया ॥ मेरा ॥ ६ ॥ तुमसा सपुन मिल्या नहीं सुधां । तो में सुख
 मिणाया ॥ मेरा ॥ ७ ॥ निज हिन में अंतराय जे दंय । न हीज पिशुंन जणाया ॥ मेरा

वणाद् । सु० त र्था गात्र वन्धाद् ॥ सु० सुनी राज वंशर सिवाद् ॥ मि ॥ श्रुत्ये र्हे
 पंच प्रात । करे धर्म दान । पकाम लगीजे ॥ तो मदन ॥ ५ ॥ तिहां थी चर्था मर्णा
 चन्द । पुण्य अमंद । मदन जी थड्या ॥ चउदान तणं प्रताप राज चार लहीया ॥
 चारं सहना करी काल । उपज्या तत्काल । राज घर आड्या ॥ कषट प्रभावे नारी
 वेद न थड्या ॥ झला ॥ सु० पुर्व प्रेम प्रभावे । सु० चारी राणी तं थावं । सु० दान
 थी मंपदा पावं । सु० वली धर्म में मन रमावं ॥ मि ॥ इस जाणी दीजो दान । करी
 सन्मान । नजी अभीमान । श्रुत्क वृती रीजं ॥ तो मदन ॥ ६ ॥ जे कीया तं पाया ।
 वाणिक कुल आया । राजा केवाया ॥ किंचित दुःख थी सुख अर्चितयो पाया ॥ और
 भावं गुण भरी । प्रत संजारी । भद् तुम काया ॥ तेहथी तारण सामग्री कर तुम आया
 ॥ क्ष ॥ सु० प. ऋद्धि साथ नहीं जावं । सु० प. ऋद्धि न दुःख मिटावं । सु० दान
 सांही देवं न पावं । सुण० मोक्ष अर्थे प् छिटकावे ॥ मिल ॥ इस जाणी अहो प्राणी
 । संतोष करीजे ॥ तो मदन ॥ ७ ॥ अब छोडां ऋद्धि करी करणी । भव उद्धरणी ।
 जिन जी फामाद् । खांत दंत निरारंभ अणगार ज थ्याद् । ते मिटा देवं जन्म मर्णा ।
 फिरी अवतर्ण । मोक्ष में जाद् ॥ ग. सार जक में धरो सुखेच्छु भाद् ॥ झला ॥ सु०

दीन दयाल दया कर दीन प । अथल महारा करसाया ॥ अथ ७७ ७७
 का फल यह । अब करस्यु अर्पण काया ॥ भद्रि सिद्धां तां मुन नर्हा चर्हिषि । जन्म
 मरण श्रे धरसाया ॥ यैर्हा दुःख मिटावन कारन । लेस्युं हं संयम अरे ॥ गदन ॥ २ ॥
 क्विर्जा कं कतां मुख हांवि जिम । धर्म हील करगां नाही । मुर्गी लयीं बर्दा घर आया
 । जग जेहन मन उमाइ ॥ अह विराट्या धर्म स्थानक । लव पाचार लिया दुलाइ ॥
 कहं मह मुन देवां आज्ञादिशा की लगी अति चाइ ॥ सहु कहं किर्जा कजर वहां ह ।
 कर रगा आरम उद्धार ॥ सदन ॥ ३ ॥ सदन कहं तुल ज्ञानी होइ । हसा वचन मुख
 मन बोलां ॥ जन्म सर्व श्रावक वत धरं । नहीं मुर्की दां घडां तालां ॥ मुर्गी भांवि वि
 वमुच कादासा । संसाधमें चटगति जोलां ॥ मनुष्य भवही संयम आवि । कृण यांचे व-
 क असांला ॥ हं नो हंस्यु संसप अर्था । हील करुं नहीं लगां ॥ सदन ॥ ४ ॥ सोनां
 आइ कहं नगसाइ । विरह हस धी नहां नहीं जांचे ॥ जो आत्म उद्धार करसां । उद्धार
 ही मन नं थांचे ॥ सदन कहं श्रद्ध भर्ता विचार । प्रमला लव दांही आवि ॥ सहु मिली
 एक मनो करी धीं । उहाकी गनी कर्मा थांचे ॥ हरगिन हस जायां नही देखा । सहाके

तुमहीं आधार ॥ मदन ॥ ५ ॥ मदन कहें मोहें दिशा को छोड़ीं । ज्ञान निजर करके
 जायो ॥ किंचित पाप भड्ड ज्ञां नगी । इन से हलकी मत होयो ॥ साचा प्रेम जो राख्यां
 जाव । तो मोह निद्रानं मन भावो । अवसर पाडु करो कमाइ । जिनसे भव श्रमण
 जाव । तुम कहर्णा र्था हूं नहीं दृष्ट । तुम क्यों नहीं नीरो संसार ॥ मदन ॥ ६ ॥ सं-
 न्ये अति बोध वचन मुन । कहूँ हम भी साये आसां ॥ जैसी प्रीत संसार निभाइ ।
 । श्री धर्म में निभानां ॥ हम मुर्णा कुंवर पंथे । सर्व एक मत तुम भइया ॥ तो आसरो
 म ने किलयो । ज्ञां नहीं रहे तान सेया ॥ और मजन भी मोह बस होइ । नेणां आंश्रु
 नीतार ॥ मदन ॥ ७ ॥ मदन कहें अहां मोहो गिल्याणी । जरा विचार करो मन में ॥
 आसरो दाना को नहीं जगमें । मनल्य वसें साग जनमें ॥ आप आपणा कीथा पावे ।
 कुग लोभावे दपथ धन में ॥ तुम मर्ग्या मुपुत्र मजन मुज । ताहें जन्म हिचे नरपनमें
 ॥ करो धर्म दलाली भरी । दे आझा तुम इण वार ॥ स ॥ ९ ॥ हम सहू कुटंब सम-
 जाया । त्ववर चारी राज में जावे ॥ मोटा २ मामेंन सजजन प्रजा जन मिलके आवे ॥
 का जोडीं कहें थार्मा आपकें सरण छोड गया हम राजा ॥ आपकी छांया आनंद पाया

र ॥ म ॥ १. ॥ धर्मां रीतां त्वंश्च तणां ह । तजा २ सहुं ररुं जाय ॥ जाम पहला का
 राय भिधाया । नांही गतीं महारी थावं ॥ बाकी रहें जे जग गाहें जग ॥ निज २ कर-
 णां फल पावं ॥ नाचा रंक्क परजा सोही । धामी को जां मुल चाये ॥ राजा थारं हु-
 या हें उत्तम । सुख दर्दी तें ज्यादारे ॥ भद्र ॥ १० ॥ इस बहु विध समजुत करी तस
 । कियों दिक्षा को मंडलें ॥ जग विवहार सांन्यथा कारण । सुरसुंदण मंडण जानां ।
 सहुं वेरगी वन्य भुषण मज । आवंटा पालवी म्याने ॥ सहश्च पुरुष उटावं तर्था । अ-
 लग २ मय को जाणां ॥ दोन्य घाजा गीत नृत्य तियां । आणंद मंगल वृत्तारें ॥ म ॥
 ॥ ११ ॥ गव्य वजार सवारी चाली । कोडेंगम संग नर नारी ॥ लटक २ फर सहुं न-
 सं छें । धन्य २ सुख उच्यारी ॥ जय २ नन्द्या जय २ भद्र । भवा भदंती ललकारी ॥
 आया सहुं शिल ग्रामकं धारि । जिहां सुनीवर दीटारी ॥ तजी सवारी हुह पायचारी ।
 यलकाय भूं निहारें ॥ म ॥ १२ ॥ करी वंदणा इद्याण कुण आ । पंचसुधा लोचनकीधा
 । पुत्र पाल झाल्या योलासं । दर्दा निक जाण संग्रही लीधा ॥ पहरी साभुं धैस पंढरही
 । आ उभा मुकं पासें ॥ जावर्डीव साध जांगले । नय कोटी त्याग्या तासें ॥ वेटा सा-
 धु पंकी सं जा । दांत दांत मुणी अणगारें ॥ म ॥ १३ ॥ सर्व कुटंब शिल करी भंदणा ।

निष्ण नूत नहो हंचे । टपक २ फिन घा जांच ॥ सुनी २ सहू दीसे साहेची । गुण गण
 हांचे गमावे ॥ धर्म कर्म हां माथल करात । सुखे २ काल गुजार ॥ म ॥ १४ ॥ श्रधेर
 कर्षि श्राधर्मा ज्ञान की । से नागज निजेने नार ॥ अंगेज अंग ज्ञानका घणिया । मर्दन
 मदन न्हान्या मार ॥ अक कर्षि विरत अकंया । पांचो नाम गुण उच्यार ॥ सर्व सु-
 न । सर्व गुणसं संपन्न । जैन हे मूत्र के मक्षार ॥ किया ज्ञान अभ्यास बहुतला । तप
 त्या का कर्म कां जार ॥ म ॥ १५ ॥ रूप श्रद्धा निज रुपे स्थित । पुढेंप श्रां गुण सुग-
 न्य भर्ग ॥ धनत्रो धर्म धन संचायो । प्रिये करी तप दित करि ॥ रत्नवंती रत्न रहे सं-
 यम । रंदा रंया किया नं हीरां ॥ गुण सुन्द्री राची गुण ज्ञाने । रूप वंती स्वरूप बरी ।
 कन्कावर्ती कन्क ज्यो निर्मळ । ए नव सत्तियां सिरदार ॥ म ॥ १६ ॥ सर्व सत्तियां
 सहा गुणवंती । ज्ञान भर्णा विनय भावे ॥ किरतो तपस्या मांडी दुकर । पकांत सांक्ष
 नर्णा चांच ॥ मर्तां भन करी रुग्णां यथा शक्त । जैन धर्म घणा दीपाया ॥ घणा जीवने
 मार्ग लगाया श्या लणा जव शंत आपा ॥ आलेह निदी अणसण करेयो । निज आरु

